इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में भोपाल के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को श्री दिगम्बर जैन आचार्य ज्ञानसागर समाधि तीर्थ स्थल कमेटी, नसीराबाद राजस्थान भारतीय डाक विभाग के भोपाल परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

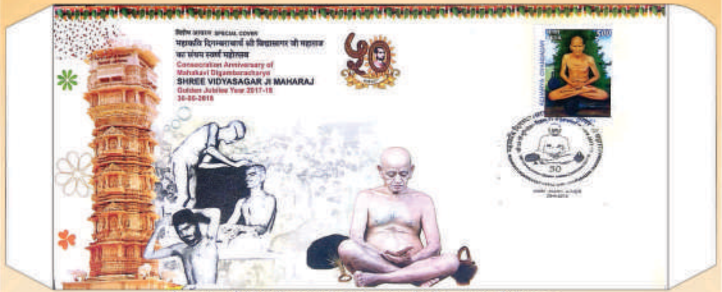


संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

| दि. | वार | तिथि | नक्षत्र |
|---|---|---|---|
| **दिसम्बर 2020** | | | |
| 16 | बुधवार | द्वितीया | पूर्वाषाढ |
| 17 | गुरुवार | तृतीया | उत्तराषाढ |
| 18 | शुक्रवार | चतुर्थी | श्रवण |
| 19 | शनिवार | पंचमी | धनिष्ठा |
| 20 | रविवार | षष्ठी | शतभिषा |
| 21 | सोमवार | सप्तमी | पूर्वाभाद्रपद |
| 22 | मंगलवार | अष्टमी | उत्तराभाद्र |
| 23 | बुधवार | नवमी | रेवती |
| 24 | गुरुवार | दशमी | अश्विनी दि/रा |
| 25 | शुक्रवार | एकादशी | अश्विनी |
| 26 | शनिवार | द्वादशी | भरणी |
| 27 | रविवार | त्रयोदशी | कृत्तिका |
| 28 | सोमवार | चतुर्दशी | रोहिणी |
| 29 | मंगलवार | पूर्णिमा | मृगशिरा |
| 30 | बुधवार | पूर्णिमा | आर्द्रा |
| 31 | गुरुवार | प्रतिपदा | पुनर्वसु |
| **जनवरी 2020** | | | |
| 1 | शुक्रवार | द्वितीया | पुष्य |
| 2 | शनिवार | तृतीया | आश्लेषा |
| 3 | रविवार | चतुर्थी /पंचमी | मघा |
| 4 | सोमवार | षष्ठी | पूर्वाफाल्गुनी |
| 5 | मंगलवार | सप्तमी | उत्तराफाल्गुनी |
| 6 | बुधवार | अष्टमी | हस्त |
| 7 | गुरुवार | नवमी | चित्रा |
| 8 | शुक्रवार | दशमी | स्वाति |
| 9 | शनिवार | एकादशी | विशाखा |
| 10 | रविवार | द्वादशी | अनुराधा |
| 11 | सोमवार | त्रयोदशी | ज्येष्ठा |
| 12 | मंगलवार | चतुर्दशी | मूल पूर्वाषाढ |
| 13 | बुधवार | अमावस | उत्तराषाढ |
| 14 | गुरुवार | प्रतिपदा/द्वितीया | श्रवण |
| 15 | शुक्रवार | तृतीया | धनिष्ठा |

## तीर्थंकर कल्याणक

24 दिसम्बर : भगवान अरनाथ तप कल्याणक
25 दिसम्बर : भगवान मल्लिनाथ जन्म-तप कल्याणक
25 दिसम्बर : भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
28 दिसम्बर : भगवान अरनाथ जन्म कल्याणक
29 दिसम्बर : भगवान संभवनाथ तप कल्याणक
01 जनवरी : भगवान मल्लिनाथ ज्ञान कल्याणक
09 जनवरी : भगवान चन्द्रप्रभ जन्म-तप कल्याणक
09 जनवरी : भगवान पार्श्वनाथ जन्म-तप कल्याणक
12 जनवरी : भगवान शीतलनाथ ज्ञान कल्याणक

## माह के प्रमुख व्रत

17 दिसम्बर: मुक्तावली
28 दिसम्बर: रोहिणी व्रत
30 दिसम्बर: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
14 जनवरी : देवदर्शन दिवस

## सर्वार्थ सिद्धि

18 दिसम्बर : 07/05 बजे से 19/04 बजे तक ।
22 दिसम्बर : 07/07 बजे से 25/38 बजे तक ।
24 दिसम्बर : 07/08 बजे से 31/09 बजे तक ।
28 दिसम्बर : 07/10 बजे से 31/10 बजे तक ।
31 दिसम्बर : 07/11 बजे से 31/11 बजे तक ।
06 जनवरी : 07/12 बजे से 17/10 बजे तक ।

## शुभ मुहूर्त

विद्यारंभ मुहूर्तः दिसम्बर-16
मशीनरी प्रारंभ :जनवरी-1,6,11,15
वाहन खरीदने:जनवरी-1,6,8,14,15

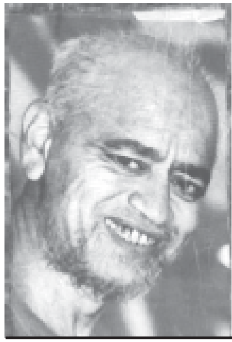

# संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 255 • दिसम्बर 2020
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

## लेख

• जैन सरस्वती 08
• अनमोल रतनः रतनलाल जी बैनाडा 12
• भारत को विश्व गुरु बनाने की प्रक्रिया दक्षिण कोरिया और इसरायल में 15
• विधि जगत के प्रकाश स्तंभः अधिवक्ता श्री श्रीकृष्ण जैन 17
• बाबा दौलतराम जी वर्णी की सोलह रचनायें 19
• प्रवचनः साल के सारे दिन हैं गुरु के दिन 29
• शताब्दियों में होते हैं आचार्यश्री ज्ञानसागरजी जैसे विराट व्यक्तित्व 38
• जैन सेनापति (क्रमशः अगले अंक से) 50
• आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज संघ पिच्छी का परिवर्तन-2020 52
• अहिंसा परमो धर्म 54
• मैय्या मेरी मैं नहीं कियो सू सू 56

## बाल कहानी

• टूटे अंगूर 59

## कविता

• उम्मीदों के हमने तो पुष्प संजोये है 24
• जनगणना पर्व 25
• गुरु ही सहारा 37
• मुनिश्री योगसागर 49
• वोट कांड 55
• क्यों आदमी भटकता 57

## कहानी

• मछली नहीं मौत 44

## नियमित स्तंभ

**पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन :25 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28
दुनिया भर की बातें : 30 •दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58 • डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 54
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

## प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
**ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज**

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
**बाकी सदस्यता शुल्क**
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

**सदस्यता शुल्क**

| | | |
|---|---|---|
| -आजीवन | : 2100/- | (15 वर्ष) |
| -संरक्षक | : 5001/- | (सदैव) |
| -परम सम्मानीय | : 11000/- | (सदैव) |
| -परम संरक्षक | : 15001/- | (सदैव) |

**अपने शहर के**

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
**श्री दिगम्बर जैन युवक संघ**
खाता क्र. 00410501 3575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

**कार्यालय -संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।





## पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, मुम्बई के पुलिस कमिश्नर ने अपने बयान में कहा था कि कुछ चैनल टी आर पी बढाने के लिये पांच-पांच सौ रूपये बाँट रहे हैं तथा मुम्बई पुलिस ने तीन चैनल के मालिकों को गिरफ्तार भी किया तथा रिपब्लिक चैनल के लिये समन भी जारी किया एवं एक प्रेस कॉंफ्रेस के माध्यम से टी आर पी के गोरव धन्धे को उजागर कर दिया सच यह है टीआरपी बढ़ाकर दिखाना एक काले धन्धे से कम नहीं है विवदास्पद और अराजकता पैदा करने वाली विषवन्त विषय वस्तु को दिखाना अनेक चैनलों की फितरत बन चुकी है वे समझते हैं कि हम सही हैं किन्तु वे भूल जाते हैं कि समाज की चेतना में गुणात्मक परिवर्तन अचानक होता है और अब समाज विषावन्त वस्तु को अचानक खारिज करने लगी है राजनीतिक दल विषावन्त विषय वस्तु को परोसने में रूचि रखते हैं ओर खासकर चैनल विषावन्त विषय वस्तु परोसने में अपनी वाह वाही समझते हैं।

**अंकुर जैन, बड़ोदा**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के नवम्बर माह के अंक में एक हथकरघा शीर्षक से कहानी प्रकाशित हुई कहानी की कथावस्तु की बनावट बहुत कसावत के साथ प्रस्तुत की गई है कहानी की सरल सुबोध भाषा एवं प्रांजल शैली पाठकों को बाँधे रखती है कहानी कामनी डॉक्टर के पिताजी के चरित्र में हुये परिवर्तन को स्पष्ट करने में बहुत गम्भीर नजर आ रही है जेल में रहकर भी अच्छा व्यवहार करके एक नई मिसाल खड़ी की है और इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जिन छात्रों में हुनर आ जाती है वे लोग जहाँ परिवार को अच्छी तरह सम्हाल लेते हैं वहीं उनके दिमाग से अपराध की जहरीलापन बाहर निकल जाता है कहानी मनोरंजन एवं शिक्षाप्रद है इस प्रकार की कहानी पढ़कर किसी के भी जीवन में परिवर्तन आ सकता है।

**श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के नवम्बर माह के अंक में डॉक्टर अरविन्द जैन का लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक है पाकिस्तान एक घायल साँप विद्वान लेखक ने पाकिस्तान के चरित्र को एक घायल साँप की तरह बताते हुये यह प्रयास किया है कि पाकिस्तान वह साँप है कि जिसे कितना भी दूध पिलाओं जब उगलेगा वह तब जहर ही उगलेगा पाकिस्तान ने सारी दुनियाँ के देशों में घूंमकर तीन सौ सत्तर के हटाने के विरोध में खूब वातावरण बनाया किन्तु दुनियाँ के किसी देश ने उसे जब घास नहीं डाली तब उसने भारत से समझ बातचीत का प्रस्ताव रखा तो भारत ने कह दिया कि गोली ओर बोली एक साथ नहीं चलेगी आतंकवाद परस्त पाकिस्तान जब तक आतंकवाद का खेल बन्द नहीं करेगा तक तक उसके साथ बातचीत नहीं की जा सकती है पाकिस्तान घायल साँप की तरह फुसकार रहा है ओर फन पटक कर बैठ जाता है भारत को ऐसे घायल साँप से बचकर अवश्य रहना चाहिये।

**श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़**

# भक्ति तरंग
# गिरनारी के नाथ नेमिनाथ

अहो नमि जिनप नित नमत शत सुरप,
कंदर्पगज दर्पनाशन प्रबल पनलपन ।।
नाथ तुम बानि-पयपान जे करत भवि,
नसे जिनकी जरामरन-जामनतपन ।।

अहो शिवभौन तुमं चरनचिंतोन जे,
करत तिन जरत भावी दुखद भवविपन ।।
हे भुवनपाल तुम विशदगुनमाल उर,
धरैं ते लहैं टुक कालमें श्रेयपन ।।

अहो गुनतूप तुम रूप चख सहसकरि
लखत संतोष प्रापति भयौ नाकप न ।।
अज अकल तज सकल दुखद परिगह कुगह
दुसह परिसह सही धार व्रत सार पन ।।

पाय केवल सकल लोक करवत लख्यौ,
अख्यो वृष द्विधा सुनि नसत भ्रमत मझपन
नीच कीचक कियौ मीचतैं रहित जिम,
दौल को पास ले नास भववास पन ।।

भगवान नेमिनाथ को नमन करो जिनका सौ इन्द्र वन्दन करते हैं जो कामदेव रूपी हाथी के मद को नाश करने के लिये पंचानन सिंह के समान प्रबल हैं । आपकी वाणी रूपी अमृत का पान करने से भव्यजनों के जन्म-मरण रूपी रोगों की तपन, पीड़ा नष्ट हो जाती है।

ओ मुक्तिपुरी अर्थात मोक्षपुरी के वासी आपके चरणों का चिंतवन करने से, ध्यान करने से भविष्य के भवरूपी दुखकारी वन जल जाते हैं अर्थात भव का संसार भ्रमण का अंत हो जाता है, नाश हो जाता है। हे पृथ्वीपालक आपकी सघन गुणों की माला को जो हृदय में धारण करते हैं वे भी अल्पकाल में ही आपके समान श्रेष्ठता को प्राप्त होते हैं।

हे गुणों के स्तूप। आपका रूप निखरने के लिये इन्द्र ने विक्रिया से सहस्त्र नेत्र बनायें फिर भी उसे तृप्ति नहीं हुई उसका मन नहीं भरा। जिनके भावों का नाश हो चूका।

अर्थात जो अब पुनः जन्म नहीं लेगें, देह रहित होंगे, उनने व्रत धारण कर, घरबार आदि सब परिग्रह छोड़ दिये व असहनीय सब परीषहों को सहन किया।

जिन्हें केवलज्ञान होने पर, सारे लोक को सन्मुख रखे हुए (पदार्थ के समान) देखा, निश्चय व व्यवहार का उपदेश दिया, जिससे भ्रमरूपी अंधकार का नाश हुआ। कीचक जैसे नीच को मृत्यु से रहितकर उसकी भव-श्रृंखला का नाश कर दिया। दौलतराम कहते हैं कि हमें भी अब आप अपने समीप ले लो अर्थात् हमारी भी संसार में रहने की स्थिति समाप्त हो।





संस्कार प्रवाह

# प्रतिष्ठाचार्यों से चार सवाल

जैनदर्शन की धार्मिक परंपराओं में जिनबिम्ब का दर्शन व पूजन का उल्लेख प्रमाण सहित मिलता है। तथा आचार्यो ने चैत्य भक्ति की रचना करके यह विचार प्रस्तुत किया है कि जिनबिम्ब का अवलम्बन किये बिना दर्शन व पूजन की पद्धति सम्यक पूर्णता को प्राप्त नहीं होती है। जिन बिम्ब दो प्रकार के उपलब्ध होते हैं। 1. अकृत्रिम जिनबिम्ब 2. कृत्रिम जिनबिम्ब। अकृत्रिम व कृत्रिम जिनबिम्ब के दर्शन करने से सम्यक् दर्शन की उत्पत्ति होती है उपशम सम्यकत्व की उत्पत्ति में आचार्यो ने जिनबिम्ब का सम्यक्त्व माना है। उन जिनबिम्ब की आवश्यकता जिन चैत्यालय में होती है बिना जिनबिम्ब के जिन चैत्यालय कभी भी पूर्णता की प्राप्त नहीं होता है ऐसी परिस्थिति में जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा का विधान होना भी आवश्यक है। उपलब्ध प्रतिष्ठा ग्रंथी के अनुसार यदि प्राण प्रतिष्ठा की क्रिया संपन्न करायी जाती है तो जिन बिम्ब की प्रतिष्ठा प्रक्रिया में मूर्ती के अंगोपांगो का ओर संस्थानों का बोध हो जाना आवश्यक हो जाता है किसी जिनबिम्ब के निर्माण के नापतोल का निर्णय कोई प्रतिष्ठाचार्य ही कर सकता है। अतः प्रतिष्ठाचार्यो की भूमिका प्रतिष्ठा प्रक्रिया में अहम होती है।

वर्तमान में प्रतिष्ठाचार्यो से एक सवाल यह किया जाता है कि जिस मूर्ती को कोई प्रमाणिक प्रतिष्ठाचार्य रिजेक्ट कर देते हैं। उसी मूर्ती की दूसरे प्रतिष्ठाचार्य बिना किसी हिचक के प्रतिष्ठा कर देते हैं तब श्रावकों के मन में यह सवाल आता है क्या दोनों प्रतिष्ठाचार्य का एक मत नहीं था जब कि दोनो आगम का प्रमाण दे रहे थे तो अब भिन्नता का प्रमाण कहां हैं तब ऐसी परिस्थिति में प्रतिष्ठाचार्य के मन में आर्थिक प्रलोभन का आरोप श्रावक के प्रति आ जाता है। व जनचर्या का विषय बन जाता है कि एक प्रमाणिक प्रतिष्ठाचार्य ने जिस मूर्ती को अयोग्य घोषित कर दिया तो उसे दूसरे प्रतिष्ठाचार्य ने उसकी प्रतिष्ठा कैसे करा ली। यदि प्रतिष्ठाचार्य ने मूर्ती निर्माताओं से अनैतिक संपर्क स्थापित कर लिया है तो यह कार्य संभव हो सकता है। इस विषय में श्रावकगण सदैव सशंकित रहते हैं तो क्या मूर्ति के स्वरूप निर्धारण में और उसके मानदंडों का निर्धारण करने में प्रतिष्ठाचार्यो द्वारा एक रूपता करने में समक्ष नहीं है।

दूसरा सवाल यह आता है कि प्रतिष्ठा प्रक्रिया की विधि में प्रदर्शन का बढ़ता खर्च व उसकी अनिवार्यता क्या प्रतिशठा का अंग है। महंगी प्रतिष्ठा को रोकने के लिये क्या प्रतिष्ठाचार्य एक मत नहीं हो सकते जबकि इनकी संगोष्ठी में यह विषय उभर का आता है कि प्रदर्शन व नाटकीयता प्रतिष्ठा का अंग नही है। तो फिर इन पर रोकथाम कैसे हो सकती है।

तीसरा प्रश्न प्रतिष्ठाचार्यो से यह है कि प्रतिष्ठा विधि में आई हुई मत भिन्नता पंथ आधारित है या आगम आधारित। यदि पंथ आधारित है तो प्रतिष्ठा के प्रमाणी पंथ किस आधार पर है और यदि प्रमाणी के पंथ का दावा भिन्नता मत वाले करेंगे तो यह संभव नहीं है।

अब चौथ प्रश्न यह आता है कि सूर्य मंत्र का स्वरूप क्या है व इसकी पद्धति क्या है इसका अभिदायक कोन होगा। इन प्रश्नों पर व इन चार सवालों पर प्रतिष्ठाचार्यो को अपना सेमिनार करके मध्यम मार्ग निकालना चाहिए जिसमें समाज धर्म सेवा में अग्रणी हो।

# जैन सरस्वती

✻ पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन रजवाँस, सागर ✻

तीर्थंकर अरहन्त की दिव्यध्वनि रूप वाणी को गणधरों ने चार अनुयोग एवं द्वादशांग आदि में निबद्ध किया है, वह श्रुत के रूप में प्रतिष्ठापित हुआ है। जिसके सुनने में भव्य प्राणियों को सन्मार्ग प्राप्त होता है। अतः उस दिव्यध्वनि रूप जिनवाणी को श्रुतदेवता की संज्ञा प्राप्त हुई। दिव्यध्वनि, जिनवाणी, सरस्वती, भारती वाग्देवी आदि इसके अपर नाम हैं।

श्रुतदेवी का स्वरूप- द्वादशांग रूप जिनवाणी को ही श्रुतदेवी कहा गया है। जयधवला और षट्खण्डागम आदि ग्रंथों में बारह अंग रूप ही श्रुतदेवी का स्वरूप कहा गया है यथा-

**बाहर अंग ग्गिज्झा वियलिय-मल मूढ दंसणुत्तिलया।**

**विविह-वर-चरण-भूसा पसियउ सुय देवया सुइरं।।** षटखण्डागम भाग 1 पृष्ठ 6

अर्थात जो श्रुतज्ञान के प्रसिद्ध बारह अंगों से ग्रहण करने योग्य हैं अर्थात बारह अंगों का समूह की जिसका शरीर है, जो सर्व प्रकार के मल रूप अतिचार और तीन मूढ़ताओं से रहित, सम्यग्दर्शन रूप उन्नत तिलक से विराजमान है और नाना प्रकार के निर्मल चारित्र ही जिसके आभूषण हैं ऐसी भगवती श्रुतदेवता चिरकाल तक प्रसन्न रहो।

**अंगंबज्झणिम्मी अणाइमज्झंतणिम्मलंगाए।**

**सुयदेवयअंबाए णमो सया चक्खुमइयाए।।** जयधवला भाग 1 पृष्ठ 3

अर्थात जिसका आदि मध्य और अनत से रहित निर्मल शरीर, अंग और अंगबाह्य से निर्मित है और जो सदा चक्षुष्मती अर्थात जाग्रत चक्षु हैं ऐसी श्रुत देवी माता को नमस्कार हो।

आचार्य वसुनन्दी स्वामी ने भी इसी का अनुसरण किया है।

**बारह-अंगंगी जा दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।**

**चोद्दहपुव्वाहराणा ठावेयव्वा य सुयदेवी।।391।।** वसुनन्दी श्रावकाचार

अर्थात जो श्रुतज्ञान के बारह अंग-उपांग वाली है, सम्यग्दर्शन रूप तिलक से विभूषित है, चारित्ररूप वस्त्र की धारक है चौदहपूर्व रूप आभारणों से मण्डित है, ऐसी श्रुतदेवी स्थापित करना चाहिये।

आचार्यश्री वीरसेन स्वामी ने सरस्वती देवी को **जयदु सुद देवदा** से संबोधन कर यह प्रमाणित कर दिया हे कि जो जैनागम में चार प्रकार के देव देवियों का वर्णन है, उसमें श्रुतदेवी कोई देवी नहीं है वरन् जिनेन्द्र भगवान की दिव्य ध्वनि स्वरूप श्रुतदेवी ही सरस्वती हैं।

श्रुतदेवी देवगति नामकर्म के उदय से उत्पन्न किसी प्रकार के देवों की देवी नहीं है, अपितु द्वादशांग के अंगों के माध्यम से कल्पनाकर देवी का आकार प्रकार निश्चित कर उसे देवी की संज्ञा दी गई है। आचार्य पद्मनंदी स्वामी ने कहा भी है कि -

**जिनेश्चर स्वच्छसरः सराजनी, त्वमंगपूर्वदिसरोतराजिता।**

**गणेशहंसव्रजसेरविता सदा, करोषि केषांन मुदंपरामिहा।।** पद्मनंदी पंचविशतिका 15,21





अर्थात हे सरस्वती तुम जिनेश्वर रूपी निर्मल सरोवर की कमलनि हो, और ग्यारह अंग चौदह पूर्व रूपी कमल से शोभित हो एवं गणधर रूपी हंसों के समूह से सेवित हो, इसलिए तुम संसार में हर्ष करने वाली हो। अतः सरस्वती देवी बारह अंग और चौदह पूर्व रूप ही है, स्वर्गादिक की देवी नहीं है। सरस्वती देवी व्यक्तिवाचक नहीं अपितु द्वादशांग का प्रतीक स्वरूप है।

श्रुतदेवी की मूर्तियों का कथन अकृत्रिम चैत्यालयों में अनादिकाल से प्राप्त होता है। तिलोयपण्णति और त्रिलोकसार ग्रन्थों में इसका कथन निम्नानुसार है।

**सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण सणक्कु मार-जक्खाणं।**

**रूवाणि मण-हरिणं रेहंति जिणिंद-पासेसुं।। 48।।** तिलोयपण्णत्ति अधिकार 7

अर्थात जिनेन्द्र देव के पार्श्व में श्री देवी, श्रुतदेवी, सर्वाण्हयक्ष ओर सनत्कुमार यक्ष की मनोहर मूर्तियाँ शोभायमान होती हैं।

**सिरीदेवी सुरदेवी सव्वाणहसणक्कु मार जक्खाणं।**

**रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होदि ।।188।।** त्रिलोकसार नरतिर्यग्लोकधिकार

अर्थात जिन प्रतिमाओं के पार्श्व भाग में श्रीदेवी, श्रुतदेवी, सर्वाण्हयक्ष और सानत्कुमार यक्ष के रूप में अर्थात प्रतिमाएँ हैं, तथा अष्ट मंगल द्रव्य भी होते हैं। श्रुतदेवी की प्रतिमा अकृत्रिम चैत्यालयों की अपेक्षा अनादि काल से हैं। वर्तमान में श्रुतदेवी की अनेक कृत्रिम प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं।

जिसमें सबसे प्राचीन प्रतिमा **मथुरा** के कंकाली टीले से प्राप्त हुई इसका समय 132 ई. हैं, राज्य संग्रहालय लखनऊ में संग्रहीत है। **देवगढ़** जिला ललितपुर के 19वें मंदिर के बरामदे में सरस्वती की प्रतिमा विराजमान है जो 11वीं शताब्दी की है। **लाडनूँ** राजस्थान के दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में सरस्वती की प्रतिमा विराजमान है जो 12वीं शताब्दी की है। **पल्लू** बीकानेर राजस्थान से दो सरस्वती का प्रतिमा प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में सुरक्षित हैं वह 9वीं, 10वीं शती के बाद की है। उमता जिला मेहसाणा गुजरात से तथा फतेहपुर सीकरी आगरा से दो सरस्वती की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। जो लगभग 11-12वीं शताब्दी की है।

**श्रुतदेवी की मूर्ति के अंग और आकार-** तीर्थंकर प्रतिमाओंर की अपेक्षा श्रुतदेवी की मूर्तियाँ का निर्माण कम हुआ। तीर्थंकर प्रतिमा के परिकर में यक्ष यक्षणियों की मूर्तियों के साथ भी सरस्वती की प्रतिमा का समावेश नहीं हुआ क्योंकि ये किसी तीर्थंकर की विशेष देवी नहीं है। श्रुतदेवी की मूर्तियाँ स्वतन्त्र और प्रायः सभी जगह अर्थात उत्तर और दक्षिण भारत में प्राप्त होती हैं। श्रुतदेवी की मूर्तियाँ देशी पत्थर, संगमरमर एवं धातु की भी बनाई गई हैं। ये मूर्तियाँ खड़गासन एवं पद्मासन दोनों अवस्थाओं की मिलती हैं। प्रतिष्ठा तिलक में श्रुतदेवी के अंगों वर्णन इस प्रकार मिलता है। **आचारशिसंसूत्रकृतवक्त्रां सुकंठिकाम्।**

**स्थानेन समवायांगव्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ।।2।।**

आचार ही जिनका सिर है, सूत्रकृत जिनका मुखमण्डल है, स्थानांग रूपी कण्ठ एवं समवायांग और व्याख्याप्रज्ञप्ति दो भुजाएँ हैं।

**वाग्देवता ज्ञातृकथोपासकाध्ययनस्तनीम् ।**

**अंतकृद्दशसन्नाभिमनुत्तरदशांगतः ।।3।।**

श्रुतदेवता के ज्ञातृकथा व उपासकाध्ययन ये दो अंग स्तन हैं ,अंतकृतदशांग नाभि है एवं अनुत्तरदशांग नितम्ब हैं ।

**सुनितंबां सुजघनां प्रश्नव्याकरण श्रुतात् ।**

**विपाक सूत्र दृग्वाचरणां चरणांबराम् ।।4।।**

प्रश्नव्याकरणांग जंघा है, विपाकसूत्रांग एवं दृष्टिवादांग चरण है और आचरण रूपी वस्त्र धारण करती है।

**सम्यक्त्वतिलकां पूर्वचतुर्दश विभूषणाम् ।**

**तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारूपत्रांकुरश्रियम् ।।5।।**

सम्यक्त्व का तिलक, चौदह पूर्वों के आभूषण और प्रकीर्ण सुन्दर पत्रांकुर हैं । इस प्रकार श्रुतदेवी के अंगों का वर्णन किया गया है अतः इन अंगों से सहित सरस्वती जिनवाणी स्वरूप है, जिससे सरस्वती पूजा के समय सरस्वती देवी की मूर्ति न रखकर जिनवाणी स्वरूप शास्त्रों को रखकर पूजन की जाती है।

**जैन सरस्वती के चिन्ह-** जैन सरस्वती की पहचान उनके चिन्हों से होती है। वे प्रमुख चिन्ह निम्न प्रकार हैं।

**1. शिर पर जिन प्रतिमा-** शिर पर जिन प्रतिमा जैन सरस्वती की प्रमुख पहचान है इससे ही जिनवाणी स्वरूप का बोध होता है।

**2. चार हाथ-** प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग इन चार अनुयोगों के प्रतीक हैं। शास्त्र-शास्त्र पुराण पुरुषों का चरित बोधि और समाधि रूप समीचीन ज्ञान का आगम बोध कराता है, अतः प्रथमानुयोग का बोधक है।

**माला-**माला गणक का प्रतीक होने के कारण वह लोक अलोक युग परिवर्तन एवं चार गतियों के परिभ्रमण का उद्योत करती हैं, अतः करणानुयोग का द्योतक है।

**कमण्डल-**कमण्डल, चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और रक्षा होती है, अतः चरणानुयोग का सूचक है। **कमल-**कमल, जीवादि, तत्त्व, नव पदार्थ आदि के विषय में सम्यग्ज्ञान रूपी संगुन्ध का विस्तार करता है अतः द्रव्यानुयोग का प्रतीक है। इस प्रकार ये जैन सरस्वती की पहचान के आधार हैं।

प्राचीन जैन सरस्वती की मूर्तियों में वीणा एवं हंस वाहन का अंकन नहीं किया गया है। यह कालान्तर में प्रारंभ हुआ जो शोध का विषय हो सकता है। जैसे-

**गीदरदी गीदरसा इंदा ताणं पि होंति देवीओ ।**

**सरसइससेणाओ णंदिणिपियदंसणाओ देवीओ ।।41।।** तिलोयपण्णत्ती छट्ठो





महाधियारो गाथा 41

**अर्थ-** व्यन्तरदेवों में गंधर्व देवों के गीतरति और गीतरस नामक इन्द्र और इन इन्द्रों के सरस्वती स्वरसेना, नन्दिनी एवं प्रियदर्शना नामक देवियां हैं।

**गीतरती गीतजसो गंधव्विंदा हवंति वल्लभिया ।**

**सरसति सरसेणावि य णंदिणि पियदरिणिदेवी ।।264।।** त्रिलोकसार व्यन्तरलोकाधिकारद गाथा 264

**अर्थ-** गीतरति और गीतयशा ये गंधर्वों के दो प्रधान इन्द्र हैं । इनकी वल्लभा देवांगनाएं क्रमशः सरस्वती और स्वरसेना तथा नन्दिनी और प्रियदर्शना हैं। गंधर्व देवों का कार्य गीत संगीत आदि है अतःइनके हाथ में वाद्य यंत्र होते हैं। धवला पुस्तक 13 में उल्लेख भी है। इन्द्रादीनां गायकाः गंधर्वा। इन्द्रादिकों के गायकों को गंधर्व कहते हैं। धवला 13,5,5 अर्थात गीतरति गंधर्वदेव की देवी सरस्वती के हाथ में वीणा आदि वाद्ययंत्र होते हैं। चारों निकाय के देवों के वाहनों का कथन प्राप्त होते हैं। जिन सरस्वती के चार हाथों में से किसी भी हाथ में वीणा आदि का एवं हंसासन का किसी भी आचार्य उल्लेख नहीं किया है। जिन सरस्वती का अपना अलग ही जिनवाणी रूप कथन है। शिर पर तीर्थंकर बिम्ब चार अनुयोग रूप चार हाथ हैं। इन हाथों में पुस्तक, माला, कमण्डलु और कमल का कथन है। वीणा आदि का उल्लेख नहीं मिलता है। श्वेताम्बर एवं अन्य जैनेतर दर्शनों में भी सरस्वती का उल्लेख प्राप्त होता है उनमें वह किसी भी पत्नी रूप है या पद्मासना है या अन्य प्रकार के कथन हैं।

**सरस्वती पूजा-** सरस्वती की पूजा का उल्लेख प्रायः जैनागम में सभी जगह मिलता है। सरस्वती की पूजा शास्त्रों के माध्यम से की जाती है सरस्वती की मूर्तियाँ मात्र द्वादशांग की प्रतीक स्वरूप हैं। इनकी आराधना पूजा विनाय आदि जिनेन्द्र देव की ही आराधना है। पं. आशाधर जी ने कहा की है।

**ये वजन्ते श्रुतं भक्त्या ते यजन्तेञ्जसा जिनम् ।**

**न किञ्चिदन्तर प्राहुराप्ताहि श्रुतदेवयोः ।।4।।** सागारधर्मामृत

अर्थात जो सरस्वती की पूजा करते हैं वे जिनेन्द्र भगवान की पूजा करते हैं, क्योंकि केवली भगवान ने श्रुतदेवी में और जिनेन्द्र की पूजा में कुछ भी अन्तर नहीं कहा है। अनेक लेखकों की सरस्वती पूजाएँ संस्कृत हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में मिलती हैं। अरबी या फारसी की पूजा का एक छन्द देखे।

**मसरूर हम रूपा रचा फुनि जरी पचरंग ताफता ।**

**सेलाम बून्दी फूलकारी, चारखाना बाफता ।।**

**जरकशी डोरी लाय तोरी वन्द कै चरणा घरा ।**

**जिनवानि आनि दयानिधानि टार भव भरमन परा ।।**

पूजा साहित्य में सरस्वती पूजा का महत्वपूर्ण स्थान है। देव पूजा के साथ सरस्वती पूजा का भी उतना ही महत्व है। जैन सरस्वती की अपनी अलग पहचान तो है ही साथ ही जैन सरस्वती के बिना जैनागम अधूरा प्रतीत होता हैं ।

# अनमोल रतन : रतनलाल जी बैनाडा

✻ विनीत कुमार जैन (प्रधानाचार्य), ललितपुर ✻

बचपन में पढ़ी हुई जैन पाठशाला के फल स्वरूप मिले संस्कारों के प्रभाव से सुप्रसिद्ध उद्योगपति होने पर भी सभी प्रकार के व्यसनों एवं अभक्ष्य भक्षण से मुक्त रहे आदरणीय बड़े पंडित जी श्री रतनलाल जी बैनाड़ा साहब का जीवन सादगी युक्त रहा उनका पहनावा कुर्ता, पजामा, और पढ़ाते हुए सिर पर टोपी अर्थात वह सादा जीवन उच्च विचार वाली सूक्ति को चरितार्थ करते थे। 1994 में परम पूज्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज के दर्शनों के बाद उनकी भावना विद्वानों को तैयार करने वाली संस्था आगरा में ही खोलने की थी पर वहाँ जैन दर्शन व संस्कृत सम्बन्धी विद्यालय नहीं होने से निमित्त न बन सका, फिर मुनि श्री के 1996 में जयपुर वर्षायोग के दौरान डॉ. शीतलचंद जी जैन साहब की भावना क्या जुड़ी मानो जैसे गंगा-जमुना का संगम ही हुआ हो, मुनि श्री द्वारा हुये भट्टारक की नशिया में प्रवचन के दौरान हुए सिंहनाद के फल स्वरूप एक सितम्बर सन् 1996 में सांगानेर स्थित श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना हो गई और प्रारंभ में आई कुछ परेशानियों के बाबजूद निरन्तर 25 वर्षों से आदरणीय पंडित जी निरन्तर सम्पूर्ण समर्पण के साथ छात्रों को पढ़ा रहे थे और उनकी साधना के फल स्वरूप आज 500 से अधिक स्नातक विद्वान गांव गांव और नगरों नगरों में धर्म ध्वजा फहरा रहे हैं और स्वाध्याय की परम्परा को जीवन्त बनाये हुए हैं। पंडित जी ने स्वयं के द्वारा प्रशिक्षित स्नातक विद्वानों के साथ शिक्षण शिवरों के माध्यम से जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार किया जिसमें जन-जन को व्यसन मुक्ति मिथ्यात्व खण्डन एवं सच्चे देव शास्त्रगुरु के स्वरूप का व्यापक ज्ञान कराया।

वर्तमान में जब जैन चैनल का युग प्रारम्भ हुआ तो पारस एवं जिनवाणी चैनल के माध्यम से जिज्ञासा समाधान, समयसार, प्रवचनसार,तत्वार्थसूत्र आदि ग्रन्थों का बड़े ही सरलता से अध्ययन करवाया जिससे वह घर-घर में पाठशाला वाले पंडित जी को नाम से श्रावकों के मानस पटल पर विराजमान हो गये और उनके देहावसान होजाने से मानों अपने परिवार का ही मुखिया चला गया हो ऐसा महसूस कर सारा देश उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पण कर रहा है।

**आदरणीय बड़े पंडितजी-** श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के यशस्वी अधिष्ठाता रहे जिन्हें सभी बड़े पंडित जी के नाम से जानते थे छात्रों को बड़े ही अनुशासन व बारीकी से शिक्षित करते थे एक एक शब्द का विश्लेषण व शुद्धोचारण करवाते थे मैं तृतीय बैच का स्नातक हूँ 15 वर्ष पहले मैंने संस्थान से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी।

अनुशासनप्रिय पंडित जी- उनका अनुशासन ऐसा था कि उनका आना तो दूर उनके आने की भनक हो जाये कि गुरु जी आ रहे हैं (प्रारम्भ में उन्हें सभी गुरुजी ही सम्बोधिकत करते थे) तो सभी सावधान हो जाते थे, वह सभी कमरे भी चैक करते थे कि कोई छात्र अभक्ष्य भक्षण तो नही करता, मंजन, साबुन बगैर अशुद्ध प्रयोग तो नहीं करता वह बच्चों को शुद्ध उत्पादों की सूची भी वितरित करते थे और बच्चों का बड़ा ख्याल भी रखते थे पर अनुशासन हीन छात्रों को निष्कासित करने में कोताही नहीं वर्तते थे और अपने निर्णय कभी नहीं बदलते थे अनुशासन कक्षा संचालन के मामले में बड़े ही जिद्दी थे।





**पाठशाला वाले पंडित जी :-** ग्रीष्मावकाश में पंडित जी शिविर लगाते थे, मुझे भी उनके साथ चार पांच स्थानों पर पढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ हजारों शिविरार्थी शिविरों में आते थे और पूर्ण अनुशासन से शिविर संचालित होते थे पंडित जी शिविर पढ़ाते थकते नहीं थे बल्कि बड़े आनन्दित होते थे टी.वी. चैनल के माध्यम से भी बड़ी मेहनत से पढ़ाते थे यह बात किसी से छिपी नहीं है।

**पंडित जी का मेरे प्रति स्नेह व विश्वास-** 1. 2005 में मेरा शास्त्री कक्षा का अध्ययन पूर्ण हो चुका था तब वह मुझसे बोले अब कुछ सेवाये देना चाहोगे ? तब मैंने हां कहा तो बोले भोपाल चले जाओ वहा वृहद द्रव्य संग्रह का स्वाध्यय कराना है, करातो लोगे न ? मैंने कहा जी बोले ठीक है जाओ कोई समस्या हो तो मुझसे बात कर लेना पंडित जी फोन से या पत्र के माध्यम से जिज्ञासा का समाधान कर दिया करते थे।

2. आठ वर्ष पहले उन्होंने मुझे श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के छात्रों को अध्यापन कार्य हेतु बुलाया था परन्तु मुझे साढूमल स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय में प्रधानाचार्य पद पर सेवायें देते हुए एक वर्ष ही हुआ था। और मैं अपने गृह ग्राम के निकट होने से यहां अधिक सेवायें देने का इच्छुक था तो मैंने कोई कारण बताकर टालना भी चाहा तो बोले आप मुनिश्री सुधासागर जी जो अभी कटनी में विराजमान हैं वहां महाराज श्री के दर्शन कर आओ उन्होंने आप को बुलाया है और मैं सतीश जैन जो कि अभी सांगानेर में अध्यापक हैं बड़ा ही विनम्र एवं बुद्धिमान हैं उनको लेकर महाराज श्री के पास गया मैंने भी उनकी अंग्रेजी अध्यापन कार्य हेतु सिफारिश और सराहना भी की। फिर पूज्य महाराज जी मुझसे बोले विनीत क्या करना है तो मैंने कहा महाराज जी अभी मेरी भावना साढूमल में रहने की है तो महाराज जी बोले आपकी सीट सांगानेर में आरक्षित है तुम्हारा जब भी मन करें तब आ जाना मैंने कहा जी महाराज जी और उनका आशीर्वाद लेकर मैं वापिस आ गया सच तो यह है कि मैं इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेने में असहज सा हो रहा था और यहां तो मुझे एक साल हो गया था इसलिए अनुभवी महसूस कर रहा था।

**पंडित जी का कृतित्व :-** 1. आर्यिका,आर्यिका हैं मुनि नहीं 2. क्या क्षेत्रपाल पद्मावती आदि देवी देवता पूज्य हैं 3. जिज्ञासा समाधान भाग 1-2, 4. जैन धर्म शिक्षा भाग 1-2, इसके अलावा और भी पुस्तकों के लेखक एवं सम्पादक रहे।

**विनम्र श्रद्धांजलि-** आदर्श बनने की शिक्षा देने वाले पंडित जी आज हमारे बीच भले ही न हों पर विद्या गुरु स्वरूप वो हमेशा हमारे मन मस्तिष्क में हमेशा विराजमान रहेंगे उनके आदर्श और अनुशासन प्रियता हमें सदा प्रेरित करती रहेगी मैं पंडित जी को उनकी उत्तम गति की कामना के साथ चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

**विनम्र सुझाव :- 1.** आदरणीय पंडित जी हम सभी स्नातकों के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जैन समाज की अमूल्य धरोहर थे हमें उनसे प्रेरणा लेकर स्वाध्याय की परम्परा को जीवित रखना चाहिये और प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए।

2. उनकी चिरस्मृति हेतु सांगानेर स्थित संस्थान में उनकी प्रतिमा के साथ उनकी उपलब्धियों का चित्रण भी होना चाहिये।

3. आदरणीय पंडित जी का अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर समाज को समर्पित करना चाहिए।

# स्वस्थ जीवन के सूत्र

## स्वस्थता का रहस्य-स्वास्थ्य की रक्षा

मानव शरीर एक ऐसा जटिल तथा स्वचलित यन्त्र है। जिसमें एक ही समय में विभिन्न अङ्ग विभिन्न कार्यों का सम्पादन करते हैं। यदि हम इस यन्त्र के रखरखाव में ध्यान नहीं देगें तो क्या होगा। इसकी कार्यसमता व्यतीत होने पर हर क्षण के साथ कम होती जायेगी, हमारा स्वास्थ्य हमसे छिन जायेगा अतः आवश्यक है कि हम इसे सही ढंग से कार्य करने की स्थिति में रखने के लिये प्रयत्न करें । नीरोग एवं स्वास्थ्य रहने के लिये निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिये।

1. सामर्ध्यानुसार व्यायाम करें 2. भरपूर निद्रा ले, व अरामा करें 3. उठने बैठने की उचित मुद्रा अपनाये 4. शरीर को स्वच्छ व साफ रखें 5. यथोचित मात्रा में पौष्टिक भोजन ग्रहण करें 6. असत स्वभाव के अभ्यास से वंञ्चित रहें 7. तनाव मुक्त रहें 8. शरीर की मालिश नियमित करें 9. सप्ताह में एक बार उपवास अवश्य करें।

**स्वास्थ्य एवं व्यायाम :-व्यायाम से लाभ -** (1) व्यायाम करने से अनेक रोगों की रक्षा होती है (2) हृदय संवहनी नलिकाओं को बल प्राप्त होता है (3) दिल का दौरा (Heart Attack) पड़ने की सम्भावना कम हो जाती। (4) शरीर को विश्राम मिलता जिसके फलस्वरूप अनिद्रा, बैचेनी तथा तनाव जैसे रोग भी दूर हो जाते हैं। (5) मानसिक एकाग्रता और सतर्कता बढ़ती है। (6) शारीरिक चुस्ती फुर्ती और शक्ति बढ़ती है (7) प्रसव पीड़ा कम होती है (8) अस्थमा मधुमेह गठिया कम दर्द आदि रोग दूर होते हैं (9) मोटापा दूर होता है (10) पेट के रोगों की रक्षा होती है।

**औषधि के चार गुण -** 1. अधिक रूप व उत्तम प्रवेश में उत्पन्न। 2. ज्योतिष शास्त्र के मुहुर्तानुसार एकत्रित हो। 3. अपनी शुभ गन्ध वर्ण, रूप स्पर्श से सम्पन्न हो। 4. कीट आदि न लगा हो कल्पना की योग्यता हो अर्थात चूर्ण, अवलेह, स्वाद, वटी

उपरोक्त प्रकार से यदि हम अपना आहार विहार शास्त्रानुकूल बना ले तो पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति जो इस मानव जीवन का लक्ष्य है उसे शीघ्र प्राप्त करेंगे।





# भारत को विश्व गुरु बनाने की प्रक्रिया दक्षिण कोरिया और इसरायल में

✻ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✻

कभी कभी कोई व्यक्ति कहता है कि हमारे दादा ने शुद्ध घी पिया था और उसकी खुशबु आज भी आती हैं हमारा देश प्राचीन काल के गौरव/इतिहास/संस्कृति/परम्परा पर बहुत फक्र करता है और करना भी चाहिए, कारण हमारे यहाँ मनुस्मृति, वेद, पुराण, उपनिषद, आगम, के साथ गणित, ज्योतिष, वायुयान रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र आदि न जाने ऐसी कौन सी विद्या छूटी हो जिस पर हमें नाज न हो और उसका आधार आज विश्व मानता हैं वो भी हम अपने मुँह मियां मिट्ठू बनकर।

हमारा देश स्वाधीनता के पूर्व से और बाद से लगातार प्रयासरत हैं कि वह विश्व गुरु बन जाये और हम कुछ क्षेत्रों में गुरुओं के गुरु हैं, जैसे नियमों को तोड़ना, देश के पार्टी कोई दायित्व नहीं, भ्रष्टाचार, बईमानी, नंबर दो के काम करने में चोरी, रेप, हत्यायें आदि में सर्वोपरि है और इसका कारण बुनियादी नैतिक, चारित्रिक, ऐतिहासिक विषयों के अभाव और शिक्षा देने वालों को स्तर निरंतर ह्रास होना ओर जो पुराने अनुभवी रहे उनकी सेवा निवृत्ति के बाद किसी को कही नौकरी नहीं मिली तो वह शिक्षक बन गया और देहात और गांवों में तो शिक्षक एवजी में पढ़ाते हैं और यूनिवर्सिटी और कॉलेज स्तर पर प्रोफेसर आदि अपना विषय न पढ़ाकर सब विषय पढ़ाते हैं जब से शिक्षा विभाग राजनीति की प्रयोगशाला बनी तब से शिक्षा जगत रसातल में जाने लगाया गया और जब से शिक्षक संविदा या दैनिक भोगी हुए तो वे गंगा को अमरकटंक से निकालने लगे। और तो और बिना शिक्षक के स्कूल चल रहे हैं । छात्र पास हो रहे हैं।

इस प्रकार की शिक्षा से एक फायदा सरकार ओर माँ बाप को हुआ की वे छात्र पांचवी पास न होने से छठवीं में नहीं जा पाते जिस कारण उन्हें घर में रहकर मां बाप की सेवा का अवसर मिलता और सरकार की सूची में वे बेरोजगार नहीं हो पाते तो वे सब काम करते हैं जैसे बोझा ढोना, मजदूरी करना आदि निम्मस्त्रीय कार्य करने योग्य हो गये ये लोग उनसे अच्छे हैंजो लाखों रूपया खर्चकर इंजीनियर एम.बी.ए आदि करने के बाद वे यहाँ के रहते हुए और न वहां के रहते।

जैसे बिना हथियार के सैनिक बिना कैची मीटर के कपड़ा व्यापारी वैसे ही बिना स्कूल भवन शिक्षक के शिक्षा क्या स्थिति होती होगी। हम अपने आपको विकासशील जरूर कहते हैं पर अभी बहुत क्षेत्रों में हम बुनियादी संरचना के लिये संघर्षरत हैं जो विकास हो रहा हैं विश्व में और हम अभी भी आदिम युग में जी रहे हैं या मजबूर हैं। किस आधार पर हम विश्व गुरु बनने का सपना देख रहे हैं ? लाखों लाख शिक्षकों के पद प्राइमरी से हायर

सेकेण्डरी स्तर तक खाली हैं और उसी अनुपात में कॉलेज, यूनिवर्सिटी और उच्च संस्थाओं में यह स्थिति हैं बजट का अभाव उसके बाद सरकारें-आत्मावलोकन करें मात्र प्राइवेट संस्थाओं से देश का विकास नहीं होने वाला आज आबादी नियंत्रण में योगदान शिक्षा का महंगा होना जिस कारण अच्छे सम्पन्न वर्ग एक संतान से ही संतुष्ट होकर अपने आप आबादी नियंत्रण में योगदान दे रहें हैं।

कितने प्रतिशत लोग होंगे जो लाखों रूपये साल का खर्च उठा सकटने में समर्थ होंगे और उसके अलावा ऐसा प्रसार और प्रतिष्ठा सरकारी स्कूलों की बन गयी की उनमें अब वे भी प्रवेश नहीं दिलाते जो बर्तन साफ करने या झाडू बुहारु का काम करते हैं। सरकारी नाम से डरते हैं कि वहां न शिक्षक ओर न पढ़ाई तो क्यों हम अपनी संतान का भविष्य बर्बाद करें।

इसके बाद हमारी सरकार विश्व गुरु बनने का सपना देख रही है, एक समय था जब तक्षशिला और नालंदा में विदेश से छात्र पढ़ने आते थे और अब यहाँ के शिक्षक प्रशिक्षण लेने उत्तर कोरिया जाने वाले हैं और आजकल इसराइल भी बहुत बड़ा शिक्षा का केन्द्र बनने जा रहा है। हम विदेश में जाकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों और भारत की संस्कृति का अध्ययन करें। जैसे पांच सितारा होटल में बैठकर गरीबों के बारे में चिंतन करें प्रशिक्षण लेना कोई खराब बात नही है। क्या उस अनुरुप अपनी संस्थाओं की अधोसरंचना बनाने में सामर्थ्य के साथ इच्छाशक्ति हैं।

सबसे पहले कर्तव्य यह होना चाहिए की शिक्षा का राजनीतिकरण न हो। और न कोई विशेष विचारधारा की प्रयोगशाला हो, दूसरा जो इस सेवा में इच्छुक हो वे पूरी निष्ठा ईमानदारी के साथ आये कि हमें शुद्ध मन से राष्ट्र का निर्माण करना हैं जिसके लिये अपना योगदान शिक्षा में छात्रों के लिये देना हैं और जैसा दिल्ली में सरकारी स्कूलों का स्तर सुधारा गया हैं वैसा मॉडल तैयार करे रिक्त पदों की पूर्ति हो, कर्तव्य निष्ठ होकर अपना कर्तव्य पालन करे, अधोसंरचना स्तरीय हो जहाँ कक्षा, टॉयलेट की साफ सफाई हो। अनुशासन में खुद शिक्षक और छात्र रहें। ऐसा रोस्टर रखा जाये की सेवा निवृत्ति के साथ अन्य की नियुक्ति हो, शिक्षकों से मात्र शिक्षा का काम लिया जाये, भवन अच्छे बने, नियमित कक्षायें लगे और नियमित स्तरीय पढ़ाई हो, जब बुनियाद मजबूत होंगी तो कॉलेज और यूनिवर्सिटी के साथ उच्च संस्थानों में कोई हस्तक्षेप न हो और मात्र राज्य और केन्द्र सरकार एक पंचवर्षीय योजना इसके लिये समर्पित करे तो संभव है की हम विश्व गुरु बन सकने की दिशा में आगे बढ़ेगें अन्यथा लंगड़े से दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये कहा जाय और अंधे को विश्वदर्शन कराने ले जाया जाये।

यह मामला बहुत संगीन और गंभीर हैं इस पर सबको यानी राजनेताओं, शिक्षकों नीति निर्माताओं के साथ जन समुदाय में चेतना का प्रादुर्भाव लाना होगा और यह सामूहिम कदम और सामूहिक योगदान से संभव हैं अन्यथा हम कल्पना लोक में ही घूमते रहेंगे।





# विधि जगत के प्रकाश स्तंभः अधिवक्ता श्री श्रीकृष्ण जैन

❊ सुरेश जैन (आई.ए.एस.) भोपाल ❊

अपने सफलतम पारिवारिक, न्यायिक और सामाजिक जीवन के नवासी वर्ष पूरे कर रहे श्री श्रीकृष्ण जैन, अधिवक्ता, इन्दौर पहले जबलपुर और टीकमगढ़ में जिला एवं सत्र न्यायाधीश रहे हैं। टीकमगढ़ में रहते हुए उन्होंने जैन तीर्थ नैनागिरि जाकर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिये प्रेरित किया। वे वर्ष 1984 में आयकर अपीलीय प्राधिकरण के न्यायिक सदस्य बने। इस पद पर रहते हुए श्री जैन रेसीडेंसी एरिया, इन्दौर में हमारे परम स्नेही और मार्गदर्शक पड़ोसी रहे। उनके न्यायिक कार्य की उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विभिन्न अवसरों पर सराहना की गई। उन्होंने प्रायः पूरे देश नगरों-कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, इलाहाबाद, पटना, गुवाहटी, कटक, नागपुर, जबलपुर, बैंगलुरु, कोचीन और चण्डीगढ़ को खण्डपीठों पर से आयकर की अपीलों का निराकरण कर पूरे देश में न्यायिक मानदण्ड स्थापित किए।

श्री जैन की धर्मपत्नि श्रीमती नाजुक जैन धर्मपरायण महिला है। अपने जीवन भर वे अपने फलते फूलते परिवार की पूरी सेवा करती रही हैं। प्रगतिशील और प्रबुद्ध दंपति तथा उनके वृहत परिवार की धार्मिक प्रवृत्तियाँ सराहनीय ओर अनुकरणीय है। श्री जैन साहब का यह कथन कि वे सात वर्ष की आयु से 82 वर्ष तक काम करते रहे। सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्न रहे। सर्वप्रथम वर्ष 1955 में तथा वर्ष 1993 से पुनः वकालत चालू की। हम सबको बड़ी ऊर्जा और प्रेरणादायक है। उनका यह विचार है कि मृत्युदण्ड के स्थान पर अपराधी की सुधारने के लिये प्रभावी और ठोस प्रयास करना बेहतर हैं।

खरगौन जिले के पीपरगोन गांव में जन्में श्री जैन साहब ने खण्डवा से भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और गणित में विशेष योग्यता प्राप्त कर कक्षा ग्यारहवीं उत्तीर्ण की। अपने पिता के व्यवसाय में सहयोग देते हुए सागर विश्वविद्यालय से बी.ए. तथा इन्दौर से एल.एल.बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण की। खण्डवा के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता एवं सामाजिक नेता श्री अमोलक चन्द्र जैन एडवोकेट के साथ वर्ष 1955 में वकालत शुरु की। नायब तहसीलदार और तहसीलदार के पद पर पांच वर्षों तक कार्य करते हुए वर्ष 1961 में व्यवहार न्यायाधीश बने।

श्री जैन के चार पुत्र है। प्रथम पुत्र श्री जरत कुमार-विजय लक्ष्मी जैन म.प्र. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त हुए है तथा वे वर्तमान में राष्ट्रीय कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल के न्यायिक सदस्य है। पौत्र पीयूष- नेहा जैन इन्दौर में अधिवक्ता है एवं इंजीनियर प्रतीक-प्रेरणा बैंगलुरु में है। उनके द्वितीय पुत्र श्री जम्बू कुमार-मीना जैन, बैंगलुरु में टाटा इलेक्सी (इण्डिया) लिमिटेड के जनरल मैनेजर है। श्रीमती मीना जी हमारे अभिन्न मित्र श्री सज्जन कुमार केशरी, इन्दौर की बेटी है। पौत्री अनामिका-इंजी आशीष जैन लंदन ए.एस. है तथा सागर संभाग में संभागीय आयुक्त के पद पर पदस्थ हैं। उन्हें नैनागिरि जैन तीर्थ की बड़ी अपेक्षाएँ हैं। पौत्री सृष्टि लंदन में अपनी कंपनी चला रही है। पौत्र यशवर्धन बैंगलुरु में विधि का अध्ययन कर रहे हैं। चतुर्थ पुत्र श्री जगत कुमार-बबीता जैन इन्दौर में वरिष्ठ अधिवक्ता है। पौत्र इंजी क्षितिज-शैली जान डेर कंपनी में कार्यरत है। पौत्र निखिल जैन इन्दौर में विधि का अध्ययन कर रहें हैं।

नवासी वर्ष पूरे करने पर श्रद्धेय श्री श्रीकृष्ण जी को हमारी और न्यायमूर्ति विमला जी की हार्दिक बधाई।

## चलो देखें यात्रा

# वासोकुंड (वैशाली)

कुछ पुरातत्व विद्वानों की मान्यता है कि ईसा से 599 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन विदेह क्षेत्र में वैशाली के वासोकुंड में वैशाली के वासोकुंड में सम्राट सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला के घर भगवान महावीर स्वाकी का जन्म हुआ था इस तीर्थ पर जैनों के सिवाय अजैनों की बहुत गहरी श्रद्धा है वे वर्ष में कई बार आकर श्रद्धा से पूजा अर्चना करते है। 956 सन् में भारत देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भगवान महावीर स्मारक निर्माण हेतु शिलान्यास संपन्न किया था प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान की स्थापना स्व. साहू शांति प्रसाद जी जैन ने की थी 2600 में भगवान महावीर स्वामी जनकल्याणक के अवसर पर भारत सरकार ने वैशाली के विकास के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया था यहाँ पर भगवाना महावीर स्मारक समिति के तत्वाधान तीर्थ के विकास का कार्य निरंतर प्रगति पर चल रहा है। तथा भव्य दिगम्बर जैन नया मंदिर बन रहा है। साधु संतों के आवास हेतु, यात्री निवास गेस्ट हाउस, भोजनालय, संग्रहालय पुस्तकालय आदि का निर्माण प्रस्ताविक है। वैशाली के 52 पोखर तालाब से भगवान महावीर स्वामी की अत्यंत प्राचीन अतिशयकारी मनोहर मूर्ति गांव के मंदिर में विराजमान है।

**विशेष-** यहाँ आवास के लिए 5 अटेच कमरे है। तथा 18 कमरे लेटबॉथ के है। एक हॉल है। तथा एक डाक बंगला है। यहाँ एक साथ हजार यात्री ठहर सकते हैं। **आवागमन सुविधा-** हाजीपुर रेल्वे स्टेशन से वैशाली 38 किमी. दूर हैं। एवं पटना बस स्टैण्ड से 62 किमी. दूर है। **प्रबंध व्यवस्था अध्यक्ष-** एन.के.सेठी जयपुर मो. 9414058197, **मंत्री-** रतनलाल गंगवाल पटना मो. 9835266811, **कोषाध्यक्ष-** सुरेन्द्र कुमार गंगवाल पटना मो. 9339128122 **पूरक पता -** भगवान महावी जन्म स्मारकर वासोकुंड विदेह कुंडलपुर (वैशाली) ग्राम वासोकुंड तह. सरैया जिला मुजफ्फरनगर-844128


# पथरीधन चूर्ण

**पथरी की अचूक दवा**

**सेवन विधि–**

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

**नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।**

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

**दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें**






# बाबा दौलतराम जी वर्णी की सोलह रचनायें

**✻ फूलचन्द्र जैन, वाराणसी ✻**

जैन धर्म-दर्शन और संस्कृति रूप श्रमणधारा भारत में आदिकाल से ही समृद्ध रूप से प्रवाहित होती हुई चली आ रही है। कभी निर्ग्रन्थ, कभी अर्हंत तो कभी व्रात्य एवं श्रमण जैसे नामों से सम्पूर्ण जन-मानस को लोक-मंगल और आत्म वैभव की भावना से सदा ओत-प्रोत करती रही है। इसने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे नैतिक मूल्यों तथा अनेकांतवाद-स्याद्वाद एवं सर्वोदय जैसे परस्पर सदभावना युक्त सिद्धांतों द्वारा भारत की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक परंपराओं को गहराई से मात्र प्रभावित ही नहीं किया, अपितु इसने सच्चे अर्थों में विश्व गुरु के रूप में अपने देश की पहचान को भी बलयुक्त बनाया है।

सम्पूर्ण देश के कोने-कोने में स्थित जैन संस्कृति के प्राणभूत पावन सिद्धभूमियाँ, महान तीर्थक्षेत्र और भव्य मंदिर मात्र साधना एवं उपासना के केन्द्र ही नहीं है, अपितु प्राचीन काल से महान शिक्षा के केन्द्र भी रहे हैं। जब देश में गुरुकुल एवं विद्यालय जैसे शिक्षालय, बहुत कम अथवा दुर्लभ थे, तब भी जैन समाज इन्हीं तीर्थों और मंदिरों आदि के माध्यम से शिक्षित होकर सर्वाधिक साक्षर होने का गौरव प्राप्त करती रही है। यही कारण है कि साहित्य और विद्याओं की कभी विधाओं में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी के साथ-साथ दक्षिण भारतीय उएवं प्रादेशिक तथा लोक भाषाओं में विपुल साहित्य सृजन कर श्रमण परंपरा ने भारतीय वाङमय को विशालता प्रदान कर अद्वितीय योगदान किया है। प्राचीन काल से आज तक विकास और योगदान का क्रम निरंतर जारी है। जैसे देश के पुरातात्विक महत्व के अथवा प्राचीन क्षेत्रों में जब भी किसी भी निमित्त उत्खनन किया जाता है, जब प्रायः जैन मूर्तियाँ निकलती हैं। उसी प्रकार देश के हस्तलिखित शास्त्र भण्डारों में प्रायः कोई न कोई महत्वपूर्ण प्राचीन दुर्लभ शास्त्र भी मिल जाता है। इसी तरह अब से लगभग एक दशक पूर्व तक अज्ञात प्रायः उन्नीसवीं के अंत और बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों के महान साहित्य सर्जक पूज्य बाबा दौलतराम जी वर्णी के साहित्यिक अवदान को यहाँ रेखांकित किया जा रहा है।

जिस सिद्धभूमि नैनागिरि में तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अपनी दिव्य देशना द्वारा अनेक भव्य जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया, साथ ही यही से पूज्य वरदत्तादि पंच ऋषिराजों ने निर्वाण प्राप्त किया, उसे पुण्यधरा से अनेक भव्यात्माओं ने अपने जीवन को धन्य किया है। अनेक आचार्य साधु भगवंतों ने यहाँ प्रवास कर अपनी उच्च संयम एवं साहित्य साधना की ऊंचाईयों को भी छुआ है। बीसवीं सदी में पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी और बाबा दौलतराम जी वर्णी को नैसर्गिक प्राकृतिक छटा से युक्त यह पवित्र सिद्धक्षेत्र अतिप्रिय रहा है। वहीं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने यहाँ ससंघ कई चातुर्मास तो संपन्न किए ही, अनेक दीक्षाएँ प्रदान की और काफी महत्वपूर्ण साहित्य सृजन भी यहाँ से किया। उसी समय यहीं आपके द्वारा सृजित मूकमाटी, कई संस्कृत शतकों और अन्यान्य रचनाओं के कई छंदो को आपके ही श्रीमुख से प्रत्यक्ष सुनने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त रहा है।

बाबा दौलतराम जी वर्णी ने आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्वारा एक हजार वर्ष पूर्व शौरसेनी प्राकृत भाषा में रचित करूणानुयोग के महान आगम ग्रन्थ गोम्मटसार जीवकाण्ड पर पुरानी हिन्दी में छंदोदय नामक टीका ग्रन्थ का सृजन इसी पवित्र तीर्थ पर रहकर किया। एक दशक पूर्व तक यह पद्यमय अदभुत टीका ग्रन्थ हस्तलिखित शास्त्र भण्डार में अपने उद्धार की प्रतीक्षा में अनजान सा विराजमान था। मात्र जुझारू व्यक्तित्व के धनी विद्ववर्य पं. हीरालाल जी सिद्धांतशास्त्री ने इसकी महत्ता समझते हुए जनवरी 1971 के सन्मति संदेश के अंक में इस छंदोदय टीका ग्रन्थ का परिचयात्मक लेख प्रकाशित किया था। पर उस समय किसी ने इसे संज्ञान में नही किया किन्तु काललब्धि मिलने पर किसी भी मूल्यवान वस्तु का पारखी मिल ही जाता है।

नैनागिरि जैसे पवित्र सिद्धक्षेत्र को अपनी जन्मभूमि होने का जिन्हें महान गौरव है ऐसे यशस्वी व्यक्तित्व के धनी श्री सुरेश जी जैन (आई.ए.एस) भोपाल को जब यह ज्ञात हुआ कि छंदोदय जैसे महान ग्रन्थ की रचना बाबा दौलतराम जी ने इसी सिद्धभूमि पर रहकर की है, तब इसके प्रकाशन के पवित्र कार्य का उपक्रम आपने अपना कर्त्तव्य मानकर किया और उत्साही युवा विद्वान डॉ. प्रमोद जैन, जयपुर के संपादकत्व मे भारतीय ज्ञानपीठ जैसी गौरवशाली प्रकाश संख्या से वर्ष 2018 में इसे प्रकाशित कराया। जब आपको ज्ञात हुआ कि इन्हीं बाबाजी की अन्यान्य स्फुट रचनायें ब्र. संदीप सरल जी द्वारा संस्थापित अनेकांत ज्ञान मंदिर, बीना जिला सागर म.प्र. के शास्त्र भण्डार में है तब इनका संपादन पूर्वक भारतीय ज्ञानपीठ से ही प्रकाशन कराने का आपने संकल्प लिया और आपका संकल्प सदा सफलता तक पहुँचाता है। इस ग्रन्थ प्रकाशन ही आपकी इसी संकल्पसिद्धि का सुफल है।

बाबा दौलतराम जी वर्णी इसी बुंदेलखण्ड की महान विभूति थे। पूज्य गणेश प्रसाद जी और आपका मधुर साहचर्य रहा है, जिसका उल्लेख **मेरी जीवन गाथा** में हुआ है। मेरे पूज्य नाना जी स्व. थम्मनलाल जी जैन चौधरी, नैनागिरि जी के सरकारी स्कूल में स्वतंत्रता के पूर्व हेड मास्टर कई वर्ष तक रहे। श्री सुरेश जी के पिताजी श्री सतीशचन्द्र जी से जब भी चर्चा होती थी, वे अक्सर मुझसे कहते थे कि आपके नानाजी ने मुझे पढ़ाया है। तब निश्चित ही इन पूज्य वर्णीद्वय के सान्निध्य का लाभ हमारे पूज्य नाना जी को भी प्राप्त रहा होगा। दलपतपुर जिला सागर में मेरे पूज्य पिता श्री सिंघई नेमिचन्द्र जी बैसाखिया को पूज्य वर्णीद्वय की यथोचित वैयावृत्ति का अनेकवार सौभाग्य प्राप्त रहा है। ऐसा मैंने उनके मुख से कई बार सुना है, क्योंकि नैनागिरि आते-जाते एक-दो दिन दलपतपुर में जरूर प्रवास करते थे। मंदिर के सामने ही हमारा आवास होने से यह लाभ हमारे पूज्य पिताजी और हमारी माताजी श्रीमती उद्येतीदेवी जैन आदि परीजनों को सहज प्राप्त होता रहा।

बाबा दौलतराम जी वर्णी श्रेष्ठकवि, लेखक तो थे ही महान तपस्वी भी थे। वे श्रावक के व्रत ग्रहण किये हुए सभी व्रतों का कड़ाई से पालन करते थे। उन्होंने जो व्रत गृहण किये थे, उनका विवरणी इसी ग्रन्थ में संग्रहीत व्रत-नियम पोथी शीर्षक से 37 छंदों में किया है। व्रत धारण का उद्देश्य और निरतिचार उनके पालन की मंगल भावना उन्होंने अंतिम कुछ दोहा छंद में इस प्रकार की हैं।

**अन्य चाह कछु नाहिं मम, व्रत अदोष त्री पाल।**
**अंतमरण सल्लेखना, हूजो हे जगपाल।।3।।**
**अवधी पति जीवन व्रती, महत वचन मद टार।**





**नियम अधिक कर्म देख मम, करौ न स्वचित विचार।।34।।**
**पूराणकृत कछु नियम मम, कछु पदार्थ रूग गात।**
**जनक जानकिय त्याग कछु करन करण मद घात।।35।।**

इस प्रकार अच्छे तपस्वी, व्रती श्रावक के रूप में पूज्य बाबा जी का समाधिमरण सन् 1907 के आसपास इसी सिद्धक्षेत्र में हुआ। आपने सन् 1902 में इसी पवित्र तीर्थ को शिक्षा तीर्थ बनाने का उद्देश्य से **बाबा दौलतराम वर्णी पाठशाला** की भी स्थापना की थी।

आपके छंदोदय ग्रन्थ और प्रस्तुत स्फुट रचनाओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि आप एक श्रेष्ठ सहृदय कवि तो थे ही साथ ही आप जैन सिद्धांत शास्त्रों के गहन अध्येता भी थे। बड़े से बड़े और गूढ़ सिद्धांतों को भी सरल-सहज शब्दों में समझा देने और पाठक को हृदयगम करा देने की अपूर्व क्षमता आप में विद्यमान थी। आपकी मान्यता थी कि पद्य विद्या द्वारा जितना जनमानस के हृदय को प्रभावित किया जा सकता है, वैसा अन्य विद्या द्वारा दुर्लभ है।

इस पुस्तक में संग्रहीत बाबा जी की स्फुट रचनायें अधिकतर पूजाओं तथा अन्य लोकप्रिय विषयों से संबद्ध हैं किन्तु इनमें पंच-परमेष्ठी के प्रति जो अनन्य श्रद्धा-भक्ति और समर्पण के जो सहज-सरल भाव हैं, उनकी अभिव्यक्ति रूप भावों को जिन विविध छंदों में निबद्ध किया वे उनकी अनुपम काव्य प्रतिभा के द्योतक है। देव-शास्त्र-गुरु पूजन की स्थापना करते हुए उनके भाव इस प्रकार हैं -

**चतु घाति जित जिन कथित, जिन श्रुत युत स्यात्पद चिन्न।**
**निरख-परख गुरु पद जजौं, उपधि द्वंद कर भिन्न।।**

इस पद्य में कुछ जैन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। अष्ट कर्मों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय - ये चार घातिया कर्म कहलाते हैं। इनको जीतने वाले जिनेन्द्र अर्थात अरिहंत देव, इनके द्वारा कथित स्यात् पद अर्थात स्याद्वादमयी वाणी से अलंकृत/चिन्हित जिन श्रुत अर्थात जैन आगम रूप शास्त्र, तथा जिन्होंने समस्त उपधि अर्थात परिग्रह के द्वंद को नष्ट कर दिया है ऐसे गुरु के चरणों में नमन है।

इस प्रकार कवि ने एक ही छंद द्वारा देव, शास्त्र और गुरु की विशेषताओं/योग्यताओं को पूजा के माध्यम से नमन किया है। इसी पूजा में वे दीप समर्पित करते हुए मंगल कामना करते हैं कि मिथ्यात्व रूपी अंधकार घर-घर में छाया हुआ है, जो कि स्व पर का विवेक हरण कर रहा है, अतः इसकी समाप्ति हेतु यह पवित्र अमूल्य दीपक समर्पित करने इसलिए आया हूँ ताकि इस मिथ्यात्व अंधकार का क्षय हो। इन्हीं भावों को उनके इस पद्य में देखा जा सकता है।

**मिथ्या तम घट-घट छाय, स्व पर विवेक हर्यौ।**
**तसु नाश करन शुचि ल्याय, दीप अमौल्य खर्यौ।।**

बाबा जी अच्छे कवि हैं। उनकी शब्द कविता में जहाँ भावों की सहज अभिव्यक्ति हैं, वही शब्द सयोजना, अर्थ गांभीर्य और उनमें पूर्ण श्रद्धायुक्त समर्पण के भाव देखते ही बनते हैं। देव, शास्त्र, गुरु पूजा की जयमाला के अन्त्य आशीष वचनों में वे कहते हैं-

**अरिहंत जिनेशं अमित गुणेशं, रचित गणेशं शास्त्र वरं।**
**वर सूरि पदीशं पाठक ईशं, मुनि पद शीशं दौल धरं।।**

इस दोहा में गणेश शब्द का अर्थ गणधर देव है। यहाँ दौल शब्द कवि ने अपने नाम को संकेत रूप में प्रयुक्त किया है। इसी प्रकार कवि कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालय की पूजन-स्थापना और जयमाला के शुभारंभ में क्रमशः इन दो दोहों में बहुत ही अच्छा भाव गाम्भीर्य प्रकट किया है -

**या जग मंदिर में लसैं, जे जिन मंदिर सार।**
**कृतमाकृतम चितार ते, जजहुँ, त्रियोग सम्हार।।**
**मिथ्यातम दम रवि सहज, सुदृगोत्पत्ति उपाय।**
**जिनागार युत चेत सब, कहुँ तिन आरति गाय।।**

यहाँ द्वितीय दोहे की प्रथम पंक्ति का भाव है- सम्यग्दर्शन रूपी सूर्योदय की उत्पत्ति का सहज उपाय है- मिथ्यात्व रूप अंधकार का दमन।

कविवर बाबाजी ने शांतिनाथ पूजन में जल समर्पण करने के लिये बसंततिलका छंद में जो पद्य प्रस्तुत किया है, उसमें जिस प्रकार भाषा शैली और शब्द योजना से उसे संजाया है, उससे उनका संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं पर पूरा अधिकार ज्ञात होता है क्योंकि इस छंद को यदि थोड़ा परिवर्तित कर दिया जाय जाय तो यह सरल संस्कृत भाषा का छंद बन सकता है, यह छंद इस प्रकार है -

**क्षीराब्धि नीर शुचि पीर तृषा निवारी, ले कुंभ हेम भर धार त्रिभूमि धारी।**
**तीर्थेश चक्र मकरेश पदी त्रिधारी, अर्चो पदाब्ज जिन शांति जगत्रि तारी।।**

इसी प्रकार पावापुर क्षेत्र संबंधी श्री वीर नाथ स्वामी पूजन का वह कुसुम्लता नामक अंतिम छंद भी बड़ा ही महत्वपूर्ण है, जिसमें कवि ने बड़ी ही कुशलता के साथ अपने नाम की संयोजना की है।

**धन धान्यादि शर्म इंद्रीलह, सौ शिव शर्म अतेन्द्री पाय।**
**अजर अमर अविनाशी शिव थल, वर्णी दौल रहे शिव थाय।।**

सिद्धक्षेत्र नैनागिरि का प्राचीन नाम रेशंदीगिरि भी है। यह पवित्र तीर्थ प्राकृतिक छटा से भरपूर तो है ही, यहॉ आने वाले सभी भक्त जब दूर से ही इस तीर्थ को निहारते हुए पर्वत पर और तलहटी में स्थित अनेक पंक्तिबद्ध रूप में शोभायमान उत्तुंग भव्य जिनालयों के शिखरों और उन पर लहराती ध्वज-पताकाओं को देखता है, तब उनका प्रसन्न मुखमण्डल युक्त आल्हादित मन से पार्श्व प्रभु और इस पवित्र तीर्थ का जो जयकारा करता हे, उससे सम्पूर्ण प्रकृति गुंजायमान हो जाती है।

वंदना करते समय जब पर्वत के प्रारंभ में वह भक्त यहाँ के बड़े बाबा पार्श्व प्रभु के विशाल जिन मंदिर में प्रवेश कर अतिशय और मनोहारी कायोत्सर्ग मुद्रायुक्त भगवान की छवि निहारता है तो इतना आत्मलीन होकर अपने को विस्मृत सा अनुभव करता हुआ एक अनुपम आनंद में डूब जाता हे और वह कह उठता है-

**धन्य हुई ये पलकें, जिनने ये पल अपलक निहारे,**
**नहीं गगन में तारे इतने, जितने इनने तारें।**
**एक बार जो करे वंदना, निशदिन हराभरा है,**
**नैनागिरि ही पार्श्वनाथ की, ऐसी पुण्य धरा है।।**

मुझे अभी तक अच्छी तरह स्मरण है जब मेरी उम्र मात्र 4-5 वर्ष की थी, उस समय संभवतः सन् 1953 में पार्श्वनाथ भगवान की इसी भव्य मूर्ति और विशाल मंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का बहुत बड़े स्तर पर आयोजन हुआ था। हम भी अपने माता-पिता और संपूर्ण परिजन के साथ अपनी जन्मभूमि दलपतपुर से बैलगाडी में बैठकर इस मेले में जाते समय जब जंगल के रास्ते से गुजरते हुए हम सभी बच्चे नैनागिरि को जाएंगे, **बेर मकोरा खाऐंगे** यह गुनगुनाते हुए जा रहे थेर। यहॉ पहुँचकर हमने अपनी बालमण्डली के साथ खेलते कूदते पंचकल्याण प्रतिष्ठा पूजन के कुछ कार्यक्रम अपने को सौभाग्यशाली माना।





आज भी जब कभी इस तीर्थ की वंदना के लिये आते हैं तब इसी मंदिर में दर्शन पूजन करके हम आगे के सभी मंदिरों के साथ ही सरोवर में स्थित विशाल जल मंदिर की वंदना भक्तिभाव पूर्वक करते हैं। दूर से ही हम देखते है कि कमलों से युक्त वृहद सरोवर ओर इसके मध्य भव्य जिनालय से शोभायमान यह ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानों पर्वतमालाओं की हरीतिमा के मध्य स्वर्ग से कोई सुसज्जित शुभ्र विमान उतरा हो।

इस पुस्तक में बाबाजी द्वारा रचित सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की बहुत ही सरल भाषा में पूजा भी संकलित है। इसमें इस तीर्थ क्षेत्र की महिमा का भी वर्णन है। इस क्षेत्र की पूजन स्थापना के दोहे में श्रद्धा से कह उठते हैं-

**पावन परम सुहावनौ, गिरि रेशिंदी अनूप।**
**जजहुँ मोद उरधार अति, कर त्रिकरण शुचि रूप।।**

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि इस सिद्धक्षेत्र में तीर्थंकर पार्श्वनाथ का समवसरण आया और यही से उनकी दिव्यध्वनि खिरी, जिससे अनंत जीवों का कल्याण हुआ। समवसरण शुभागमन की स्मृति में ही इस पर्वत के आरंभ में बड़े भव्य जिनालय एवं सरोवर के तट पर समवसरण मंदिर का निर्माण हुआ। बाबा जी ने यहाँ समवसरण के शुभागमन का उल्लेख इस पूजन की जयमाला में इस प्रकार किया है-

**सो समवसरण कमला समेत, विहरत पुर नाम खेत।**
**सुर नर मुनि गण सेवत, कृपाल, आये भवि हितु तिहिं अचलमाल।।**

शास्त्रों में समवसरण के जितने क्षेत्र के विस्तार का उल्लेख है, तदनुसार आसपास के अनेक गांव उसमें समाहित होकर पवित्र हुए। मेरी जन्मभूमि दलपतपुर इसी पवित्र तीर्थ का निकटवर्ती गांव है एवं समवसरण क्षेत्र के पूर्वी प्रवेश द्वार पर स्थित है। पूरा बुन्देलखण्ड भगवान की दिव्यध्वनि से आप्लावित हुआ था और यही कारण है कि इसका प्रभाव आज भी विद्यमान है। क्योंकि पूरे देश के जैन विद्या एवं प्राकृत, संस्कृत के सहस्त्रों श्रेष्ठ विद्वान तथा साहित्य और संयम धर्म साधना के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करने वाला यही बुन्देलखण्ड है।

बाबाजी ने इसी सिद्धक्षेत्र मे रहकर छंदोदय जैसे महान टीका ग्रन्थ की रचना है। उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक में अपनी नौ पूजायें- त्रैलोक्येश, चतुर्विंशति, पंच परमेष्ठी तथा तरण-तारण, जिन स्तोत्र, द्वादश अनुप्रेक्षा, श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें तथा अपने द्वारा ग्रहण किये गये व्रत नियमों की पोथी संकलित की हैं।

ये सभी भक्ति और श्रद्धा से परिपूर्ण रचनायें विद्वान कवि की अदभुत प्रतिभा का परिचायक हैं। इन्हें दैनिक पूजन पाठ की पुस्तकों में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है, तभी ये प्रचलन में आकर जन-जन की कण्ठहार बन पायेंगी। क्योंकि इन सब काव्य रचनाओं को कवि द्वारा प्रस्तुत

कथ्य विषय को सरल-सहज रूप में पाठक को हृदयंगम कराया जा सकता है। क्योंकि पद्य विद्या का सार्वकालिक महत्व होता है। बाबा दौलतराम जी ने इन भक्ति पूर्ण रचनाओं के माध्यम से जहाँ सैद्धांतिक और अध्यात्म के शिखर को छुआ है, वहीं दूसरी ओर इनमें लोक परंपरागत मिट्टी की महक भी हमें सुवासित करती है।

कुछ लोग इन्हें संप्रदाय गत मानकर इनकी उपेक्षा कर सकते हैं, किन्तु क्या स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल इस तरह की अन्यान्य धर्मो की रचनायें भी तो प्रायः इसी श्रेणी की होने से क्या वे सांप्रदायिक नहीं है ? अतः भाषा, भाव और साहित्य विकास में योगदान के भाव को इस तरह की रचनाओं में देखा जाना चाहिए, न कि संप्रदाय विशेष से। क्योंकि ये सभी रचनायें भी उस लोक मंगल की भावना से ओतप्रोत है जिनकी गूंज सुदूर तक सुने जाने की क्षमता रखती है। ये सभी एक उदच्च साधक के अंतस से निकली रचनायें, वर्षो की साधना का प्रतिफल है। इनमें हमें कहीं भक्ति का रंग दिखता है तो कही साधना की तरंग। कुद में आस्था की गहराई है तो कुछ में बदलते परिवेश का प्रभाव और सौन्दर्य की छटा दिखाई देती है।

इन सभी रचनाओं में लोकसभा की बोधगम्यता और काव्यगत मधुरता दोनों के एक साथ दर्शन हो जाते हैं। वस्तुतः जिस कवि की अनुभूति सीधी सच्ची होती है। उसका प्रत्यक्षीकरण उतना ही स्पष्ट प्रवाहयुक्त तथा प्रभावक होता है। विशेषकर तपस्वी साधक काव्य सृजन के क्षेत्र में उतरकर कुछ लिखता है तो वह इतना विशिष्ट एवं प्रभावक बन जाता है कि उसकी गूंज दूर तक जाती है और आगे भी युगानुकूल विस्तार को प्राप्त करती रहती है। यही सब विशेषतायें बाबा दौलतराम जी वर्णी की छंदोदय तथा इसमें संकलित सभी रचनाओं में सुगमता से देखी जा सकती है।

इस प्रकार बाबा जी की प्रस्तुत रचनायें साहित्यिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण होने से इनके प्रकाशन का यह प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय है। यह भी संभव है कि शास्त्र भण्डारों में अभी उनकी और भी अन्यान्य दुर्लभ अज्ञात रचनायें अपने उद्धार की प्रतीक्षा में हों। इनकी खोज-बीन करना हम सभी का दायित्व है, यह भी महान श्रुत सेवा है। इत्यलं विस्तरेण।

**कविता**

## उम्मीदों के हमने तो पुष्प संजोये है

उम्मीदों के हमने पुष्प संजोय है
अश्कों के धागे में गम ही पिरोये है
मांझी से करें क्या तूफां की शिकायते
उबरने के मौके तो हमने ही डुबोयें है
किसको बताऊँ मैं अपनी जिन्दगी का राज
महफिल में हँसने को तन्हाई में रोये हैं
कैसे लगायें हम दरफ्तों से उम्मीदें
फूलों की खातिर बबूल ही तो बोये हैं
नफरत की गर्दी मन पर जमी कब से
रूह के धोखे में जिस्म ही तो धोये हैं।

आगम दर्शन

# चित्र अलंकारो का ग्रंथ स्तुति विद्या

प्रस्तुत ग्रंथ के तीन नाम हैं, जिनक शतक, स्तुति विद्या, और जिन शतकालंकार, आचार्य समन्तभद्र देव की काव्य कला इस ग्रंथ में आद्यान्त व्याप्त है भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों नैतिक एवं धार्मिक उपदेश के माध्यम बने हैं इस ग्रंथ में चित्र काव्य और बन्ध रचना का अपूर्व कौशल दृष्टि गोचर होता है। 116 पद्यों में से किसी एक विषय से सम्बद्ध रचना लिखना आसाधारण बात मानी जाती हे। आचार्य समन्तभद्र देव की इस कृति से स्पष्ट है कि यह काव्य माघ कवि से कई सौ वर्ष पूर्व सृजित हो चुका था। इस कृति में गुरजबन्ध अर्धभ्रम, गमप्रत्यागतार्थ, चक्रबन्ध, अनुलोम, प्रतिलोम क्रम एवं सर्वतोभद्र आदि चित्रों का प्रयोग आया है। एकाक्षर पद्यों की सुन्दरता कला की दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसनीय है।

जिनेन्द्र भगवान की आराधना करने वाले मनुष्य की आत्मा आत्मीय तेज से जगमगा उठती है। वह सर्वोत्कृष्ट पुरुष गिना जाने लगता है। तथा उसके महान पुण्य का बन्ध होता है। यहाँ स्मरण, पूजन, अन्जलि-बन्धन, कथा-श्रवण दर्शन आदि का क्रमशः नियोजन होने से परिसंख्या अलंकार है आचार्य ने हेतु वाक्यों का प्रयोग कर काव्यलिंगी की भी योजना की है। इस प्रकार यह स्तुति विद्या स्तोत्र-काव्य और गुणों से युक्त है। और है सविवेक भक्ति रचना।

जिन शतक के एक पद्य (114) में स्वामी समन्तभद्र देव ने लिखा है कि संस्तुत्यां व्यसनं उन्हें सुन्दर स्तुतियों हितोपदेशकता आदि गुणों से सम्पन्नता और उससे युक्त है ऋषभादि महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर जिन। इनके गुणों और शासन कर स्तवन समन्तभद्र का व्यसन रहा है। इस ग्रंथ की हिन्दी व्याख्या पंडित पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने हिन्दी व्याख्या मूल को बहुत स्पष्ट करते हुए की है एवं जुगल किशोर मुख्तार जी ने भी प्रस्तुत ग्रंथ की व्याख्या की है। इस ग्रंथ का स्वाध्याय करने से चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन अद्वितीय रूप से होता है।

**कविता**

## जनगणना पर्व

नाम धाम जब नहीं छुपाया छुपा रहे क्यो धर्म
जाति गौत्र तो सदा बताता पुरखों के कुछ कर्म
आचरण तुम्हारा कैसा है यह धर्म बताता है
लिखो जैन पहचान बताओ इसमें क्या है शर्म
वीर की संतान हम जैन अपना धर्म है
निकलंक ने बलिदान दे अपना निभाया कर्म है
हम भी चुकायें पूर्वजों का हम पे कोई कर्ज है
जैन लिखों अपना धर्म जनगणना का पर्व है

## समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
## नवम्बर 2020
# बादलों के बीच

**प्रथम-**

पानी बरसा चिड़िया नहायी
बानर सेना पीछे धायी
मिट्टी में फिर मच गई कीच
धवल तपन बादलों के बीच

**श्रीमती अंशुल जैन, टीकमगढ़**

**द्वितीय-**

आयी ठंडी कॉपी काया
कहीं धूप तो कहीं हैं छाया
सूरज झाँके आँखे मीच
सिमटा बादलों के बीच

**श्रीमती स्मृता जैन, ललितपुर**

**तृतीय-**

ठंड का मौसम जब आता
तन भी भरभर कप जाता
गया दिवस ठुठरन के बीच
सूरज रहा बादलों के बीच

**राजेश जैन, मुम्बई**

### अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
**अक्टूबर 2020 के विजेता**

**प्रथम :** श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर
**द्वितीय :** श्रीमती कुसुम मिलाप जैन, राजस्थान
**तृतीय :** श्रीमती रजनी सेठ, सागर

### वर्ग पहेली क्र. 254
**अक्टूबर 2020 के विजेता**

**प्रथम :** सवाम् जैन, सागर
**द्वितीय :** दिव्यांश जैन, अहमदाबाद
**तृतीय :** श्रीमती निर्मला जैन, कोटा

### अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : नवम्बर 2020 का हल

01. सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी छतरपुर
02. गजपंथा नासिक
03. सम्मेदशिखर झारखंड
04. मिसरौली झालावाड
05. बिहार दिल्ली
06. तपोभूमि उज्जैन
07. गजपंथा नासिक
08. मल्हारगंज इन्दौर
09. सम्मेदशिखर झारखंड
10. शिवपुरी
11. मुजफ्फरनगर उ.प्र.
12. जयपुर राजस्थान
13. जयपुर राजस्थान
14. कुंथलगिरि महाराष्ट्र
15. अडुल औरंगाबाद
16. सिरोल कोल्हापुर
17. खेकड़ा बागपत
18. पपौरा जी टीकमगढ
19. पौन्नूरमलै तमिलनाडू
20. पदमपुरा जी जयपुर
21. सिरोल महाराष्ट्र
22. सिरोल कोल्हापुर
23. नलखेड़ आगर
24. खेकड़ा बागपत
25. पढंरपुर महाराष्ट्र
26. कैलाशनगर दिल्ली
27. कोशीकला मथुरा
28. जहाजपुर भीलवाड़ा
29. बड़ा मंदिर बन्डा म.प्र.
30. चंद्रगिरि सांवेर अजमेर
31. ईसरी
32. सिरसाड़ मुंबई
33. खेकड़ा बागपत
34. चैन्नई पुडल
35. मांगीतुंगी जी सटाणा
36. बेलगांव कर्नाटक
37. डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़
38. अलवर राजस्थान
39. उदयपुर राजस्थान
40. ईडर गुजरात
41. खेकड़ा बागपत
42. जयपुर राजस्थान
43. सिरसाड़ मुंबई
44. गढ़कोटा जबलपुर
45. शाहगढ़ म.प्र.
46. तलहटी मंदिर गिरनार
47. हस्तिनापुर
48. औरंगाबाद महाराष्ट्र
49. नागौर राजस्थान
50. आसाम गुवाहटी





पुराण प्रेरणा

# विवेक पूर्ण कार्य

**सर्वस्य साधनो देहस्त स्याहार: सुसाधनम्।**
सबका साधन शरीर है और शरीर का साधन आहार।

**कापुरुषा एवं स्खलन्ति प्रस्तुताशयात्।**
कायर पुरुष ही अपने प्रकृत लक्ष्य से भ्रष्ट होते हैं।

**कातरस्य विषादोऽस्ति।**
कायर को विषाद होता है।

**कर्मेकमेव संसारे शस्यते धर्मकारणम्।**
संसार में धर्म का कारण कर्म ही प्रशंसा योग्य है।

**यद्यथा निर्मितं पूर्वतद्योग्यं जायतेऽधुना।**
जीव पूर्व भव में किये गये कार्य के अनुसार ही जन्म लेता है।

**फलति फलं स्वकर्म जगतां हि यथाविहितम्।**
जगत में जो जैसा करता है वैसा भरता है।

**जायते विफलं कर्माप्रेक्षापूर्वककारिणाम्।**
बिना विचारे कार्य करने वालों का कार्य विफल हो जाता है।

**नामोपलब्धिमात्रेण कार्यसिद्धि: किमिष्यते।**
नाम की उपलब्धि मात्र से कार्य की सिद्धि नहीं होती।

**निश्चित्य विहिते कार्येलभन्ते प्राणिन: सुखम्।**
विचार पूर्वक किये हुए कार्य से प्राणियों को सुख मिलता है।

**तत्कार्य बुद्धियुक्तेन परत्रेह च यत्सुखम्।**
बुद्धिमान मनुष्य को इस लोक और पर लोक में सुखदायी कार्य करना चाहिए।

## माथा पच्ची

**निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।**

1. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् श् अ् क् क नि
2. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ भ् न् त् र् अ नि
3. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ् र् अ ल् स् अ नि
4. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ र् क् र् आ अ नि
5. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ म् र् न् अ नि

**परिणाम :**
**नवम्बर 2020:** (1) धन्यकुमार चरित्र (2) श्रेणिक चरित्र (3) अमर सेन चरित्र (4) जीवन्धर चरित्र (5) वरांग चरित्र

केरियर

# चिकित्सा क्षेत्र में अवसर

हमें बड़े अस्पतालों में जहां इलाज के लिये उन्नत चिकित्सा उपकरण दिखते हैं वही दूर-दराज के अस्पतालों में इसका अभाव नजर आता है। इस अभाव को कम करने की कोशिश की जगदीश चतुर्वेदी ने जो पेशे से तो एक डॉक्टर हैं पर चर्चित हैं एक एंटरप्रिन्योर के रूप में वह उन चिकित्सको में हैं, जो अस्पतालों के साथ लैब में प्रयोग करते हुए समय बिताते हैं। वह अब तक 18 चिकित्सा उपकरणों का निर्माण कर चुके हैं। वह अविष्कारों के लिए साल 2016 में एग आई टी टेक्नोलॉजी रिप्यू की 35 इनोवेटर्स की सूची में थे।

कैसे हुए प्रेरितः जगदीश चतुर्वेदी ने बैंगलुरु स्थिति सेंट जोन्स मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा की पढ़ाई की है। जब वह दूर दराज के इलाकों में प्रशिक्षण के लिये तब वह हैंडकैप और लंबे शीशे से मरीज के घाव को जाचने के लिये मजबूर थे। इससे जांच ढंग से नहीं हो पा रही थी और अनुमान से इलाज हो रहा था इस समस्या के बारे में अपने वरिष्ठ डॉक्टर को बताया डॉक्टर ने तब डनहें इस पर कुछ बोलने के बजाय कुछ करने की सलाह दी।

प्रशिक्षण के दौरान ही जगदीश को डिजिटल कैमरा युक्त एंडोस्कोप बनाने का आइडिया आया। उन्हें इस काम के लिये अपने बड़े शिक्षकों का सहयोग मिला। जब वह बना ही रहे थे उन्हें स्टेनफोर्ड इन्डिया विद्यालय बायो डिजाइन फैलोशिप के जरिये स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाई का मौका मिला। वहां से लौटने के बाद उन्होंने एक ऐसी कंपनी शुरु करने का मन बनाया जो ज्यादा से ज्यादा चिकित्सा उपकरण बाजार में उपलब्ध करायें। लेकिन एंटरप्रिन्योर बनना डॉक्टर बनने से कहीं अलग है। वह बताते हैं, एक डॉक्टर होते हुए बिना किसी प्रशिक्षण के कोईे उत्पाद बनाना बहुत मुश्किल काम है। इसलिए मैंने इसके लिये एक डिजाइन कंपनी की मदद भी ली, इसमें अपनी कुशलता को बढ़ाने के लिये साल 2013 में एंटरप्रिन्योरशिप एंड हॉस्पिटल मैनेजमेंट में एम.बी.ए किया। आखिर उनका यह एडोस्कोप बनकर 2013 में बाजार में आया।

उन्होंने चिकित्सा जगत की जरूरतों को पहचाने हुए सस्ते और उच्च गुणवत्ता के चिकित्सा उपकरण बनाये हैं। अब तक वह अपने साथियों के साथ मिलकर 18 चिकित्सा उपकरणों का निर्माण कर चुके हैं। जिनमें से कुछ तो घरेलू कंपनियों ने अपना लिया है तो कुछ बाजार और विकास के मकसद से स्टार्टअप्स का रूप ले चुके हैं। उनकी चिकित्सा उपकरणों के अविष्कार पर लिखी कई किताबें भी चर्चित हैं वह एक स्टैंडअप कॉमेडियन भी है वह फिलहाल एच आई आई आई एच इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और निदेशक हैं। बैंगलुरु स्थित हॉस्पिटल को ईएनटी विशेषज्ञ के तौर पर अपनी सेवायें दे रहें है।





## प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

# साल के सारे दिन हैं गुरु के दिन

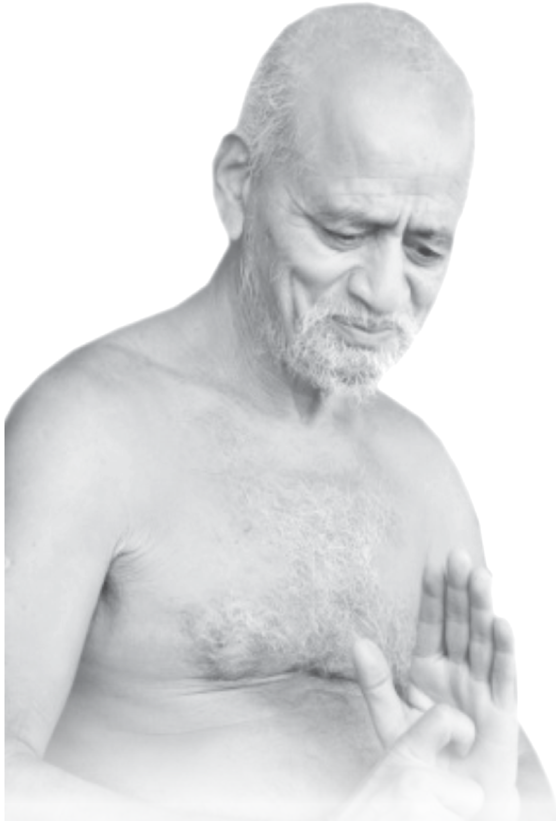

जबलपुरः साल में 365 या 366 दिन होते हैं, वे सब दिन गुरु के ही होते हैं। आज परम्परा से जिनकी मानते हैं, उन गुरुजी के एक प्रकार से विसर्जन करने का दिन है। जिस साधना में उन्होंने क्षीणतम काया का भी उपयोग करके, जो अनंतकाल से भी मोह का उपयोग नहीं होना था, उसको एक प्रकार से क्षीणतर कर दिया हैं। ये और बात है कि पंचमकाल होने के कारण समय अधिक न मिल पाने से उन्हें शरीर से मुक्ति मिली हो या न मिली हो, परन्तु अवश्य ही उन्होंने उसकी भूमिका बना दी है। उक्त उदगार आचार्य विद्यासागर ने सोमवार को दयोदय तीर्थ में मंगल प्रवचन में व्यक्त किये।

आचार्यश्री ने अपने गुरु ज्ञानसागर महाराज का स्मरण करते हुए ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि जैसे किसान अपने खेत में कार्य करता है, ठीक वैसे ही गुरुदेव ने कठिन साधना को भी वहीं माना। उन्होंने कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी की तरह प्रश्नावली को सुलभ करते हुए कार्य किया। पूर्णतः परायण कक्षा में करने वाले विद्यार्थी की तरह उन्हें किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता था।या परिचर्या में भावभगिमा और ललाट पर पड़ने वाली रेखाओं के माध्यम से शिष्यों ने कई बार निरीक्षण कर लिया था। गुरु ने अपने जीवन में ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जो हमारे लिये प्रेरणादायी है।

# दुनिया भर की बातें

**■ 1 अक्टूबर**

- प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट के.सी. शिवशंकर का निधन हुआ वे 97 वर्ष के थे।

- फिल्मी अभिनेता एवं सांसद रविकिशन को वाई प्लस की सुरक्षा मिली।

- अमेरिका एयर इंडिया 777/300 हवा में ईंधन भरने वाला विमान भारत आया।

**■ 2 अक्टूबर**

-भारत में कोरोना से मरने वालों की संख्या 1 लाख पार हुई।

- मास्क का मजाक उड़ाने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प एवं उनकी पत्नी मेलानिपा कोरोना संक्रमित हुई।

-जबलपुर : एक युवक के वेग में 1 करोड 27 लाख के नोट एवं 6 किलो चांदी मिली युवक मुम्बई जा रहा था।

**■ 3 अक्टूबर**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अटल टनल का उद्घाटन किया।

- काबुलः कंधार प्रांत में विस्फोट होने से 7 आतंकी मारे गये।

- सेना की यूनिट ने गलबान घाटी में के एम-120 आर्मी पर शहीद स्मारक बनाया।

**■ 4 अक्टूबर**

- उमरिया (म.प्र.) किसान के मचान को हाथी ने धक्का दिया एक किसान को कुचला।

- कोच्चिः नियमित प्रशिक्षण उड़ान के दौरान विमान दुर्घटना ग्रस्त हुआ नौ सेना के दो अधिकारी की मौत हुई।

-चिराग पासवन ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ना अस्वीकार किया।

**■ 5 अक्टूबर**

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री काजी रशीद मसूद का निधन हुआ वे कुछ दिन बीमार चल रहे थे।

-जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले के पंपोर में सुरक्षा बलों पर आतंकी हमला हुआ 5 जवान घायल जिनमें 2 शहीद हुए।

- जेईई की परीक्षा में लड़कों फलोर ओर लड़कियों में कनिष्का मित्तल ने ऑल इंडिया टॉप किया।

**■ 6 अक्टूबर**

- धारः तिरला इंदौर-अहमदाबाद मार्ग पर पिकअप टेंकर की भिन्डत होने पर 6 मजदूरों की मौत हुई। तथा 24 घायल हुये।

-लद्दाख में 3.1 तीव्रता से भूकम्प झटके महसूस हुए।

-भाजपा सरकार के मंत्री दिलीप को विशेष अदालत ने दोषी करार कोयला घोटाले में दिया।

**■ 7 अक्टूबर**

- मानव तस्करी एवं देह व्यापार में लिप्त दो बांग्लादेशी एजेंट को इंदौर पुलिस ने सूरत से गिरफ्तार किया।

- सतनाः जम्मू कश्मीर में आतंकी हमले में शहीद हुए धीरेन्द्र त्रिपाठी अंतिम संस्कार में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने 1 करोड़ श्रद्धा निधि परिवार को दी।





- पंजाबः हरियाणा हाईकोर्ट ने कहा शुद्ध हवा हर नागरिक का मौलिक अधिकार है।

**■ 8 अक्टूबर**

- केन्द्रीय मंत्री वरिष्ठ राजनेता रामविलास पासवान का निधन हुआ वे 74 वर्ष के थे।

- टीआरपी (टेलीविजन रेटिंग प्वांइन्ट) को बढ़ाने में फर्जीबाड़ा का उजागर 5 मुम्बई पुलिस ने किया दो चैनल के मालिक गिरफ्तार हुए अनपढ़ लोग इंग्लिश चैनल देख रहे थे।

- वायुसेना दिवस मना राफेल की उड़ान देखने भीड़ उमड़ी।

**■ 9 अक्टूबर**

- करौली (राजस्थान) मंदिर से जुड़ी जमीन कब्जाने के चक्कर में मंदिर के पुजारी बाबू लाल वैष्णव को जिंदा जलाया।

- सिओलः 33 मंजिल इमारत में आग लगी 1000 दमकलों ने आग पर काबू पाया 159 लोगों को बचाया।

- अमेरिकी चुनाव खर्च 54 हजार करोड़ डॉलर पार हुआ 34 हजार करोड़ डॉलर और लगेंगे।

**■ 10 अक्टूबर**

- हाथरस कांड के बाद गृह मंत्रालय ने निर्देश जारी किये कि महिला अपराध कर तत्काल केस हो जांच दो माह में पूरी हो।

- भारत में कोरोना का रिकवरी 60 लाख पार हुई सक्रिय मरीज 9 लाख से कम हुए।

- जम्मू-कश्मीर और लद्दाख से 301 जवान सेना के शामिल हुए।

**■ 11 अक्टूबर**

- पाकिस्तान के बदीन जिले के कडयू धनौर शहर में हिन्दू मंदिर तोड़ फोड़ हुई।

- नेशनल कॉंफ्रेस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि 370 चीन के सहयोग से बहाल को सकती है।

- हाथरस मामले में सीबीआई ने एफ आई आर दर्ज की।

**■ 12 अक्टूबर**

- माया नगरी अंधरी नगरी मुम्बई में ढाई घंटे बिजली गोल रही।

- वियतनाम में चक्रवाती तूफान लिम्फा के कारण 17 लोगों की मौत हुई 33000 घरों को नुकसान हुआ।

- दक्षिण भारत में कॉंग्रेस का चर्चित चेहरा खुशबू सुंदर भाजपा में आयी।

**■ 13 अक्टूबर**

- जम्मू -कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की 14 माह बाद रिहाई हुई।

- नौकरी से निकाले गये 49 भारतीय यू. ए. ई. से स्वदेश वापस लौटे।

- आई.ए.एस. अधिकारी सौम्या पाण्डे डिलीवरी के 14 दिन बाद ड्यूटी पर गाजियाबाद स्थिति कार्यालय पहुँची।

**■ 14 अक्टूबर**

- उज्जैन जहरीली शराब पीने से 7 लोगों की मौत हुई।

- तेलंगाना और आंध्र में भारी बारिस से 25 लोगों की मौत हुई।

- शरद यादव की पुत्री सुभाषनी राय ने कॉंग्रेस का हाथ थामा।

**■ 15 अक्टूबर**

- पी.डी.पी प्रमुख महबूबा मुफ्ती नेशनल कॉन्फ्रेस के फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला ने बुपकार में एक साथ बैठे जो कल तक विरोधी थे।

- भारत को पहला आस्कर दिलाने वाली भानु अथैया का निधन हुआ वे 91 वर्ष की थी।

- उज्जैनः जहरीली शराब पीने से मरने वालों की संख्या 12 हुई।

**■ 16 अक्टूबर**

- 20 आतंकी हमले झेल चुके बलबिन्दर सिंह की हत्या दो अज्ञात युवाओं ने की वे 60

वर्ष के पंजाब के तारनतरन के भिरवी पिंड के थे।

- टिमरनी : नर्मदा नदी 5 युवक डूबे 2 के शव मिले। एक बचाया गया 2 लापता रहे तलाश जारी।

- सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग को खारिज की।

■ **17 अक्टूबर**

- पेरिस : एक व्यक्ति ने पैगम्बर मोहम्मद का टीचर द्वारा कार्टून दिखाने पर टीचर का शिर काटा।

- छत्तीसगढ़ में अमित जोगी और उनकी पत्नी ऋचा का नामांकन जाति विवाद पर खारिज हुआ।

- फिल्म अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती के बेटा महा अक्षय पर रेप का मामला दर्ज हुआ।

■ **18 अक्टूबर**

- जबलपुरः फिरौती के बाद अपहर्ताओं ने 13 वर्षीय आदित्य लुम्बा की हत्या कर दी। मुख्य आरोपी राहुल की मौत हिरासत में हुई।

- काँग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने इमरती देवी को क्या आइटम है कहा जिससे सियासी युद्ध छिड़ा।

- मालिया हत्याकांड के मुख्य आरोपी धीरेन्द्र प्रताप सिंह की पुलिस ने गिरफ्तार किया।

■ **19 अक्टूबर**

- अनंतनाग (जे.के.) : जिले में छुट्टी पर चल रहे पुलिस इंस्पेक्टर मो. अशरफ जब नमाज पढ़कर लौट रहे थे आतंकियों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

- लद्दाख में भारतीय सेना ने चीनी सैनिक पकड़ा।

- यू.पी. सिक्कन, पंजाब में 9वीं से 12वीं तक स्कूल खुले।

■ **20 अक्टूबर**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के नाम पर संबोधन दिया और कोरोना अभी गया नहीं त्याहारों पर सतर्क रहें।

- राहुल गांधी ने कहा कमलनाथ भले ही मेरी पार्टी के हो, उनकी भाषा अच्छी नहीं।

- भांडेर में गैस सिलेंडर फटने से 3 लोगों की मौत हुई 5 लोग घायल हुए।

■ **21 अक्टूबर**

- पहली महिला विंग कमाण्डर डॉ. विजयलक्ष्मी का निधन हुआ वे 98 वर्ष के थी।

- पाकिस्तान में गृह युद्ध के हालात बने सिंध प्रांत में पुलिस का सेना के विरूद्ध विद्रोह।

- फ्रांस में टीचर की हत्या के बाद सरकार ने 6 माह के लिए मस्जिद बंद कर दी।

■ **22 अक्टूबर**

- पटना : काँग्रेस मुख्यालय पर आय का छापा पढ़ा कार में 8 लाख मिले।

- दुश्मनों को चकमा देने वाली स्वदेशी युद्ध पोत आई.एन.एस कवस्ती नौ सेना में शामिल।

- बरमूला : अलबदर के आतंकियों ने आत्म समर्पण किया।

■ **23 अक्टूबर**

- अमृतसरः चर्च में काँग्रेस नेता रणदीप गिल ने फायरिंग की 9 मृत हुये।

- श्रीनगरः पी.डी.पी नेता महबूता ने कहा कि जब तक 370 बहाल नहीं होगी तब तक तिरंगा हाथ से नहीं छूऊंगी।

- पूर्व क्रिकेटर कपिल देव को अस्पताल से छुट्टी मिली उन्हें दिल का दौरा पड़ा था।

■ **24 अक्टूबर**

- एल.ओ.सी के पास भारत ने पाक का ड्रोन मार गिराया।

- 370 बहाली के लिये पीपुल्स अलायंस गुपकार की घोषणा हुई। अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला बने।

-नारायणपुर : पुलिस एक नक्सली कैंप





को तबाह किया 4-5 नक्सली मरे 1 जवान भी शहीद हुआ।

■ **25 अक्टूबर**

- गृहमंत्री राजनाथ शस्त्र पूजन की और उन्होंने कहा चीन को संख्त संदेश दिया।

- टीवी एक्ट्रेस प्रतीका चौहान को एन.बी.सी ने ड्रग्स खरीदते हुए पकड़ा तथा गिरफ्तार किया।

- भारत के प्रसिद्ध क्रिकेटर कपिलदेव को अस्पताल से छुट्टी मिली उन्हें दिल का दौरा पड़ा था।

■ **26 अक्टूबर**

-सुप्रीम कोर्ट ने जबलपुर हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगाते हुए दलों को फटकार लगाई राजनीतिक दल कर सकेंगे रैली।

- पी.डी.पी के तीन नेताओं ने महबूबा मुफ्ती के बयान से नाराज होकर इस्तीफा दिया।

- पूर्व मंत्री दिलीप कोयला घोटाले मामले में सी.बी.आई कोर्ट ने 3 साल की सजा सुनाई।

■ **27 अक्टूबर**

- पेशावरः एक मदरसे में बम विस्फोट होने से 8 बच्चों की मौत हुई। 120 लोग घायल हुए।

- भारत-अमेरिका के बीच बेसिक एक्सचेंज एंड कॉरपोरेशन एग्रीमेंट का समझौता हुआ।

- जम्मू-कश्मीर में केन्द्र सरकार ने 26 कानूनों को निरस्त किये अब बाहर के लोग जमीन खरीद सकेंगे।

■ **28 अक्टूबर**

- दिल्ली यूनिवर्सिटी के कुलपति योगेश त्यागी को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने निलंबित किया एवं जांच के आदेश दिये।

- न्यूयार्कः सेल्फ हेल्फ गुरु कोथ रेनियर को यौन दासियाँ बनाने के मामले में कोर्ट में 120 वर्ष की सजा सुनाई।

- फरीदाबादः निकिता तोमर हत्याकांड की जाँच के लिये एस आई टी गठित हुई।

■ **29 अक्टूबर**

- पाकिस्तान के मंत्री फावेद चौधरी ने संसद में सच उगला और कहा कि पुलवामा आतंकी हमला इमरान खान ने कराया।

-कश्मीर में भाजपा के घर लौटते 3 नेता कार्यकत्ताओं पर हमला करके आतंकियों ने हत्या की।

- फ्राँस में 2 आतंकी हमलें में आतंकियों ने चर्च में बुजुर्ग महिला का सिर कलम किया।

■ **30 अक्टूबर**

- तुर्की और ग्रीस में 7 की तीव्रता से भूकम्प आया 14 की मौत हुई 400 से ज्यादा घायल हुए कई इमारतें ताश के पत्तों की तरह गिरी।

-भारत ने एंटीशिप मिसाईल का सफल परीक्षण किया।

-अमेठीः जिले के ग्राम बंदहिया में प्रधान छोटका देवी के पति अर्जुन कोरी को दबंगों ने जिंदा जलाया।

■ **31 अक्टूबर**

- पाक में ईसाई लड़की का अपहरण कर जबरन धर्मातरंण कराया गया।

- प्रसिद्ध मुनब्बर राणा ने फ्रांस के आतंकी हमले को उचित ठहराया।

- नई दिल्ली : अलिपुर में प्रिंस दास की मौत फटाखे पर गिलास रखकर फोड़ने से हुई स्टील के गिलास के टुकड़े उसके शरीर में घुसे।

दिशा बोध

# न्यायशीलता

1. न्यायनिष्ठा का सार यही है कि मनुष्य निष्पक्ष होकर, धर्मशीलता के साथ दूसरे के देय-अंश को देवे, फिर चाहे लेने वाला शत्रु हो या मित्र।
2. न्यायनिष्ठा की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती; वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है । जबकि अन्याय-अनीति से अर्जित सम्पत्ति जल्द ही नष्ट हो जाती है।
3. सन्मार्ग को छोड़कर जो धन मिलता है, उसको भी हाथ न लगाओ, भले ही उससे लाभ के अतिरिक्त और किसी बात की सम्भावना न हो।
4. भले और बुरे का पता उसकी सन्तान सेचलता है।
5. भलाई और बुराई का प्रसंग तो सभी को आता है, पर एक न्यायनिष्ठ मन बुद्धिमानों के लिए गर्व की वस्तु है।
6. जब तुम्हारा मन सत्य से विमुख होकर असत्य की ओर झुकने लगे, तो समझ लो कि तुम्हारा सर्वनाश निकट ही है। संकट तुम्हें घेरने ही वाले हैं।
7. संसार धर्मात्मा और न्याय-परायण पुरुष की निर्धनता को हेय-दृष्टि से नहीं देखता।
8. उस तराजू की डंडी को देखो, जो सीधी है और दोनों ओर एक-सी है। बुद्धिमान का गौरव इसी में हैं कि वे इसके समान ही बनें, न इधर झुकें, न उधर झुके।
9. जो मनुष्य अपने मन में भी नीति से नहीं डिगता, उसके न्यायमार्गी होठों से निकली हुई बात सर्वदा सत्य होती है। और संसार में सम्मान प्राप्त करती है।
10. उस सद्व्यवहारी पुरुष को देखो, जो दूसरे के कामों को भी अपने विशेष कार्यों के समान ही देखता-भालता है । उसके उद्योग-धंधे अवश्य उन्नति करेंगे।





इसे भी जानिये

# भारतीय भाषाओं की ग्रन्थावली

| क्र. | पुस्तक का नाम | लेखक का नाम |
|---|---|---|
| 01. | उडाक्कुजल जी | शंकर कुरुप (मलयालम) |
| 02. | आप्रेशन इमरजेंसी | बी.एम. सिन्हा (अंग्रेजी) |
| 03. | अवर इंडिया | मीनू मसानी (अंग्रेजी) |
| 04. | पद्मावत | मलिक मोहम्मद जायसी (हिन्दी) |
| 05. | पंचतंत्र | विष्णु शर्मा (संस्कृत) |
| 06. | पाथेर पांचाली | विभूति भूषण बंधोपाध्याय (बंगला) |
| 07. | पंचग्राम | ताराशंकर बंधोपाध्याय |
| 08. | पोस्ट ऑफिस | रविन्द्रनाथ टैगोर |
| 09. | प्रेम पचीसी | मुन्शीप्रेमचन्द्र (हिन्दी) |
| 10. | प्रिय प्रवास | हरि औध (हिन्दी) |
| 11. | पत्रावली | सुभाषचन्द्र बोस (हिन्दी) |
| 12. | पुरुष और नारी | राजाराधिका प्रसाद (हिन्दी) |
| 13. | पृथ्वीराज रासो | चन्द्रवरदाई (राजस्थान) |
| 14. | रघुवंश | कालीदास (संस्कृत) |
| 15. | राजत रंगिणी | कश्मीरी कवि कल्हण (संस्कृत) |

आओ सीखे : जैन न्याय

# द्विहेतु भेदवाद की समीक्षा (बौद्ध)

बौद्धों का कहना है कि अविनाभाव के बल से ही हेतु अपने साध्य की सिद्धि करने में साधक सिद्ध होता है। यह बात ठीक है किन्तु अविनाभाव नियम उन्हीं में लागू होता है जिनमें तादात्म्य तदुत्पत्ति संबंध होता है। अतः पहला कार्य हेतु और दूसरा स्वभाव हेतु दो प्रकार के हेतु होते हैं। अनुपलब्धि रुप हेतु तथा उपलब्धि रूप हेतु का अंतर्भाव स्वभाव हेतु में होता है। अतः कारण हेतु और स्वभाव हेतु दोही हेतु के भेद मान्य होना चाहिये अपने इस वाद के समर्थन में बौद्ध के कुछेक तर्क इस प्रकार है।

**तर्क 1** – अनुपलब्धि रूप हेतु का अंतर्भाव स्वभाव हेतु में हो जाने से हेतु के दोही भेद होते हैं।

**तर्क 2** – अविनाभाव का ग्रहण तर्क ज्ञान से होता है यह भी ठीक नहीं हैं; क्योंकि कार्य हेतु के अविनाभाव की प्रतीति प्रत्यक्ष और अनुपलम्भ के 5 बार होने से हो जाती है।

**तर्क 3** – स्वभाव हेतु की व्याप्ति विपक्ष में बाधक प्रमाण के होने से प्रतीत होती है। जैसे सत्व की क्षणिकत्व के साथ व्याप्ति प्रतीत होती है।

**तर्क 4** – सत्व का लक्षण अर्थ क्रियाकारित्व है और नित्य पदार्थ में क्रम और युगपत् दोनों रूप से अर्थ क्रिया नहीं हो सकती है क्षणिक पदार्थ ही सत् है।

**तर्क 5** – अविनाभाव तादात्म्य और तदुत्पत्ति से ही नियत है। अतः हेतु के दोही भेद बनते हैं कार्य हेतु और स्वभााव हेतु।

जैनाचार्य बौद्ध के द्विहेतु वाद को अस्वीकार करते हुये कहते हैं दो हेतु के सिवाय कारण हेतु तो स्वीकार करना ही होगा। इस पक्ष को खंडित करने के लिये के अपने तर्क निम्न देते हैं -

**तर्क 1** – अविनाभाव तादात्म्य और तदुत्पत्ति से नियत है यह कथन ठीक नहीं है। क्योंकि तादात्म्य अविनाभाव नियम का निमित्त नहीं होता है। संबंध उन्हीं में होता है जिनमें भेद होता है और तादात्म्य में भेद होता नहीं है। अतः संबंध नहीं हो सकता है।

**तर्क 2** – यदि साध्य और साधन में तादात्म्य होने से साधन साध्य का गमक होता है तो जिस समय हेतु का ग्रहण होता है उसी समय हेतु से अभिन्न साध्य की प्रतीति हो जायेगी फिर अनुमान की आवश्यकता नहीं रहती।

यदि कहा जाये की विपरीत समारोप का नाश करने के लिये अनुमान की आवश्यकता होती है। तो प्रश्न पैदा होता है कि समारोप की उत्पत्ति हेतु को जान लेने के बाद होती है या हेतु के बिना जाने ही समारोप की उत्पत्ति होती है। पहले पक्ष में बाधा यह आती है कि जब हेतु को जान लिया तब विपरीत समारोप की जगह कहाँ रहती है ? हेतु को बिना जाने विपरीत समारोप का प्रश्न नहीं उठता, क्योंकि विपरीत समारोप तो जानने के बाद ही होता है।

**तर्क 3** – तादात्म्य होने से हेतु साध्य का गमक नहीं होता है, अपितु अविनाभाव से ही हेतु साध्य का गमक होता है।

**तर्क 4** – अविनाभाव न तो तादात्म्य से नियत होता है और न तदुत्पत्ति से।





**तर्क 5** – जिनमें तादात्म्य और तदुत्पति संबंध हो उनमें ही अविनाभाव नियम मानते हैं तो कृतिका नक्षत्र और रोहिणी नक्षत्र के उदय में चंद्रोदय और समुद्र वृद्धि में साधन साध्य भाव कैसे बनेगा ? क्योंकि इनमें न तो तादात्म्य संबंध है और न तदुत्पत्ति संबंध है।

**तर्क 6** – प्रत्यक्ष और अनुपलम्भ सेअविनाभाव की प्रतीति नहीं होती है, क्योंकि बौद्ध का प्रत्यक्ष निर्विकल्प रूप है। अतः वह व्याप्ति का ग्रहण नहीं कर सकता है। अनुपलम्भ पदार्थान्तर के उपलम्भ स्वरूप होने से व्याप्ति को ग्रहण नहीं कर सकता है।

**तर्क 7** – स्वभाव हेतु की व्याप्ति विपक्ष में बाधक प्रमाण के बल से जानी जाती है। यह कथन ठीक नहीं है, सब क्षणिक सत् है, इस अनुमान में सत् है, यह स्वभाव हेतु है। तथा वहाँ पर विपक्ष नित्य है।

**तर्क 8** – तादात्म्य और तदुत्पत्ति संबंध के अभाव में भी अविनाभाव के बल से हेतु अपने साध्य को सिद्ध करने में समर्थ होता है। जैसे-वहाँ छाया है, क्योंकि वृक्ष है। अथवा अंधेरे में आम खाने पर रस के स्वाद से आम का अनुमान करना।

**तर्क 9** – कारण से कार्य का अनुमान होता है यह मानने पर कारण हेतु मानना ही पड़ता है, तब बौद्ध मान्य द्विहेतुवाद खंडित हो जाता है।

कविता

# गुरु ही सहारा

जब घेरा तुझे अंधेरे ने विपदाओं के डेरे ने
तब प्रभु को तुमने पुकारा था
नहीं आया प्रभु किसका फिर सहारा था
सागर को गहराई में पानी की लहरायी में
गुरु की तुमने पुकारा गुरु ने दिया सहारा
निशा बदल गई रोशनी में
सागर के गहरे पानी में
गुरु ने आशीष दिया मन से
समतामयी वीतरागी तन से
रास्ता दिखाया भटकों को
संसार शरीर भोग से अटकों को
गुरु ने पथ दिया पाथेय भी दिया
सफलता का उच्चतम बोध भी दिया
शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है
पाप की कलिमा गुरू ही धोता है।

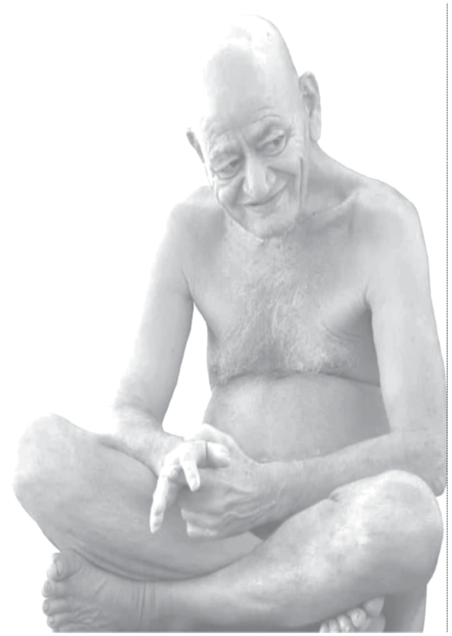

# शताब्दियों में होते हैं आचार्य श्री ज्ञानसागर जी जैसे विराट व्यक्तित्व

**भारतीय संस्कृति के उन्नयन में सराकोद्धारक राष्ट्र संत आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का अविस्मरणीय अवदान**

❊ सुनील संचय, ललितपुर ❊

दिगम्बर जैन धर्म के शीर्ष संतों में शुमार सराकोद्धारक, राष्ट्र संत, शाकाहार प्रवर्तक, परम पूज्य, आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज की 15 नवम्बर 2020 को अचानक समाधि हो गई। आचार्य श्री राजस्थान के बारां शहर में चातुर्मास कर रहे थे। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में उनके सान्निध्य में विशेष पूजन एवं लाडू चढ़ाने का आयोजन हुआ। आचार्य श्री ने प्रवचन भी दिए। शाम 6 बजे णमोकार मंत्र का जाप करते हुए उन्होंने देह का त्याग कर दिया। अचानक उनकी समाधि की खबर देशभर के जैन समाज में शोक की लहर फैल गई। इसे नियति की चूक कहें या हम सभी का दुर्भाग्य जो हमसे आराध्य, जन-जन के संत परम पूज्य आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज को हमसे छीन लिया। महावीर निर्वाण के दिन जब हम सभी शाम को घरों में केवलज्ञान के प्रतीक स्वरूप दीप प्रज्वलित कर रहे थे एक दुखद समाचार मिला कि एक श्रुत ज्ञान दीप बुझ गया है। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी का देह परिवर्तन हो गया है, जिसने भी सुना दुःखित हो उठा। मैं क्या कोई भी इस खबर पर विश्वास ही नहीं कर पा रहा था कि एक ज्ञान सूर्य अस्त हो गया है।

मैं निःशब्द था, अश्रुधारा बह पड़ी। वे मेरे जीवन निर्माता थे। मुझे उनका आशीर्वाद सर्वप्रथम 1999 में सीकर में आयोजित एक कार्यक्रम में मिला, बस क्या था तब से गुरु चरणों में समर्पित हो गया। जिन्होंने हमें पल-पल जीवन सिखाया उनके अचानक चले जाने की खबर से दिल पीड़ा से भर उठा। पूरा राष्ट्र आश्चर्य चकित हो उठा, अचानक आयी इस खबर से लाखों श्रद्धालुओं पर वज्रपात हो उठा। आचार्य श्री की अचानक समाधि होने से समाज को गहरा झटका लगा है।

साधना की जगमगाती देहरी से, एक दीपक फिर किनारा कर गया।
मंजिलों की दूरियां पूछें कहाँ से, मील का पत्थर किनारा कर गया॥

समाज में जो शून्यता उनके जाने से हुई हैं उसकी भरपाई होना संभव नहीं है। मैं अब भी अपने मन को नहीं समझा पा रहू कि आचार्यश्री देह रूप में हमारे बीच नहीं है।

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी श्रमण परंपरा के दैदीप्यमान दिव्य नक्षत्र थे। उनका अवदान अविस्मरणीय है।

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का महनीय योगदान है। श्रमण संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस गौरवमयी श्रमण परंपरा में परम पूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज का अहम योगदान रहा है। उन्होंने जो भी बीड़ा उठाया वह अपने आप में एक बेमिसाल कदम थे। वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर के पद चिन्हों पर चलकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याण के दिवस के दिन आपने दीक्षा अंगीकार की थी। भगवान महावीर सिद्धांतों शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचा कर इस दीक्षा दिवस को सार्थक किया। उन्होंने भगवान महावीर के सर्वोदय तीर्थ को पढ़ा चिंतन से उसकी युगानुरूप छटा भी बिखेरी भगवान महावीर की तरह अध्ययन को चिंतन की कसौटी पर कस कर आचरण में उसका अनुवाद करना अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने जीवन की जो दिशा खोजी वह ऐतिहासिक थी और उस पर चलकर भी एक ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की। परम पूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने जिन-जिन कार्यों को अपना आशीर्वाद व प्रेरणा प्रदान की वस्तुतः आज उनकी जरूरत थी। सही मायने में उन्होंने भगवान महावीर के संदेशों को प्रसारित कर उनके जन्म कल्याणक पर दीक्षा ग्रहण करने की सार्थकता सिद्ध





किया। शिक्षा, संस्कृति, धर्म, दर्शन, कैरियर, शाकाहार, व्यसन मुक्त जीवन आदि की ओर जिस तरह से पूज्य श्री ने कदम बढ़ायें उनकी चर्चा पूरे देश विदेश में हुई।

आचार्यश्री की प्रेरणा से कुछ विशेष कार्यों पर प्रकाश डालने की एक छोटी सी कोशिश कर रहा हूँ-

**साहित्यिक अवदानः** प्राचीन जैन ग्रंथों की पांडुलिपियों के संकलन, संरक्षण एवं प्रकाशन लाकोपयोगी सत्साहित्य को सर्व सुलभ कराने एवं आगम ग्रंथों के प्रकाशन की क्षीण होती परंपरा को पुनर्जीवित करने का भाव से प्राच्य श्रमण भारती की स्थापना 1991 में सरकोद्धारक संत आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित इस संस्था द्वारा अल्पावधि में शताधिक ग्रंथों का प्रकाशन किया गया। अनेक ग्रंथों के अनेक संस्करण भी प्रकाशित हुए हैं। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज छाणी ग्रंथमाला बुढ़ाना की भी 1991 में स्थापना की गई थी। इस ग्रंथ माला से भी शताधिक ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है एवं अनेक ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी था।

**श्रुत संवर्धन संस्थान मेरठ :** वैसे तो पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से अनेक संस्थाओं का गठन हुआ है लेकिन श्रुत संवर्धन संस्थान सभी संस्थाओं की प्रतिनिधी संस्था रही है जो अन्य संस्थाओं से समन्वय स्थापित करते हुए पूज्य श्री की दृष्टि को आत्मसात कर उनके द्वारा सौपे गये कार्य को मूर्त रूप देने हेतु कृत संकल्प रहती है। जिनवाणी के आराधकों को उनके कृतित्व के आधार पर प्रतिवर्ष श्रुत संवर्धन संस्थान के तत्वाधान में सम्मानित करने की योजना का क्रियान्वयन पूज्य आचार्य श्री के मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा से संभव हुआ था। संस्थान के उक्त प्रयासों की भूरी-भूरी सराहना करते हुए बिहार के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री सुंदर सिंह भंडारी तिजारा में 1998 में संपन्न पुरस्कार समर्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कहा था-विलुप्त हो रही श्रमण परंपरा के साधकों के प्रज्ञान गुणानुवाद की आवश्यकता को इस तपोनिष्ठ साधक ने पहचान कर तीर्थंकर महावीर की देशना को गौरवमंडित करने के महायज्ञ में जो अपनी समिधा अर्पित की है, वह देश के सांस्कृतिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरक प्रसंग है, जिसके प्रति युगों -युगों तक इस देश की बौद्धिक परंपरा ऋणी रहेगी।

**ऑल इंडिया जैन एडवोकेट फोरम (जैन अभिभाषक सम्मेलन व संगठन) :** पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज द्वारा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात आदि कई प्रांतों में जैन अभिभाषकों के प्रांतीय संगठन गठित हो पायें हैं। पूज्य श्री ने बुद्धिजीवियों को एक मंच पर लाने के लिये जो प्रयास किये वे ऐतिहासिक हैं। इस संगठन को स्थापित करने से धर्म, समाज, संस्कृति, मंदिर, तीर्थ और साहित्य के संरक्षण में कार्य किया।

**डॉक्टर सम्मेलन :** पूज्य श्री प्रत्येक सम्मेलन में बल देते थे कि चिकित्सा व्यवसाय से किसी भी रूप से संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति को जैनदर्शन के मूल तत्व सिद्धांतों का ज्ञान होना चाहिए। चिकित्सा व्यवसाय का मूल आधार पर सेवा, परोपकार, पर-पीड़ा निवारण है और जैन धर्म भी अहिंसा परमो धर्म और आदर्शों के प्रचार-प्रसार पर बल देता है। इस प्रकार जैन धर्म और चिकित्सा व्यवसाय में चोली दामन का साथ है। इन सम्मेलनों से पूज्य श्री ने शाकाहार, व्यसन मुक्ति अभियान को पूरे भारतवर्ष में फैलाया था। इन सम्मेलनों में आचार्य श्री के आशीर्वाद से एक नया इतिहास लिखा।

**अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों का सम्मेलन :** अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों का सम्मेलन के माध्यम से आचार्य श्री ने पदाधिकारियों को एक साथ बैठकर समाज, संस्कृति और नैतिक शिक्षा के संरक्षण, संवर्द्धन का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्रेरित किया कि हम अपने समाज के बच्चों को प्रशासनिक क्षेत्र में भेजें या न्यायपालिका के क्षेत्र में भेजें जिसमें अधिकारी

बनकर हमारे प्रति अन्याय नहीं होने देंगे। इस उद्देश्य को लेकर पूज्य श्री के मंगल सान्निध्य में अखिल भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों के सम्मेलन आयोजित हुए। सभी अधिकारियों को आचार्य श्री ने एक ही बात कही हमारे समाज की उन्नति शिक्षा के स्तर बढ़ाने से होगी।

**शिक्षक सम्मेलन** : शिक्षा का उद्देश्य सुसभ्य नागरिक का निर्माण है, जिससे मानव जीवन सुखमय हो सके। शिक्षा की उचित समीक्षा एवं ज्ञान उपार्जन के भाव से अनेक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा ताकि छात्र समय-समय पर नवीन अनुसंधानों से परिचित हो सकें। इसी भावना को साकार रूप प्रदान करने हेतु पूज्य श्री की प्रेरणा से उनके सान्निध्य में समय-समय पर अनेक सम्मेलनों, गोष्ठियों का आयोजन हुआ। छात्र, अध्यापक इन सम्मेलनों के माध्यम से नवीनतम शैक्षिक गतिविधियों से अवगत हो सके। शिक्षा का शंखनाद करने शिक्षा के महत्व का ज्ञान कराने एवं संस्कार उत्पन्न करने के उद्देश्य से समय-समय पर पूज्य श्री के पावन सान्निध्य में अनेक स्थानों पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मेरा सौभाग्य है कि बरनावा जिला मेरठ में आयोजित एक इस सम्मेलन में देश भर से आये शिक्षकों को आचार्य श्री ने अनेक सूत्र प्रदान किये।

**महिला सम्मेलन** : घरों में जो महिलाओं पर अत्याचार किये जाते हैं, वे उनसे कैसे बचें ? टूटते-बिखरते परिवारों को कैसे बचाया जाए ? गृह क्लेश से मुक्ति कैसे मिले ? इन सब उद्देश्यों को लेकर पूज्य श्री के मंगल सान्निध्य में अनेक जगह महिला सम्मेलन हुए और महिलाएं कई क्षेत्रों में आगे बड़ी।

**विद्वत संगोष्ठियाँ एवं अधिवेशन** : आपकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में विद्वानों ने बहुआयामी प्रगति की। पूज्य श्री का विद्वानों के प्रति अपार वात्सल्य भाव रहा है। आप निरंतर जिनवाणी के प्रचार-प्रसार, प्रकाशन में जहां प्रेरणा देते रहे वहीं विद्वानों को मार्गदर्शन और कार्य की रूपरेखा देकर युवा एवं स्वाध्याय प्रेमियों को सत्साहित्य, शोध खोजपूर्ण सामग्री और साहित्य उपलब्ध कराया। आपकी आशीष छांव तले विद्वानों के अनेक अधिवेशन, संगोष्ठी कार्यशाला निरंतर होती रहीं, जिससे विद्वानों में एक नई जागृति और स्फूर्ति देखने को मिली। विद्वानों के सम्मान और विद्वत संगोष्ठियों के आयोजनों की आज जो समृद्ध श्रृंखला दिखाई दे रही है उसको पूज्य श्री ने ही गति प्रदान की थी। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद एवं अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद के अधिवेशन आपके मंगल सान्निध्य में हुए। आपके सान्निध्य में आयोजित विद्वत संगोष्ठियों में एक नये तथ्य उभरकर सामने आये।

**ज्ञान संस्कार शिक्षण शिविरों में संस्कारों का शंखनाद** : बढ़ती हुई अनैतिकता को देखकर बच्चों में संस्कारों के बीजारोपण हेतु पाठशाला प्रारंभ की गईं सालों यह पाठशालाएं अच्छी तरह से चलीं प्रतिस्पर्धा के युग में समयाभाव के कारण और अरुचि पैदा होने से पाठशालाएं धीरे-धीरे समाप्त हो रहीं थी। आचार्य श्री को चिंता हुई कि युवा पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से कैसे रोका जाय, इसके लिये उन्होंने हल खोजा ज्ञान संस्कार शिक्षण शिविर। मेरा सौभाग्य है कि मुझ इन शिविरों के प्रारंभिक से ही संयोजक के रूप में योगदान देने का अवसर आचार्य श्री ने प्रदान किया। मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र आदि राज्यों के विभिन्न स्थानों पर आयोजित अनेक शिविरों में हजारों की संख्या में युवा पीढ़ी में एक नया बदलाव देख गया। युवा पीढ़ी को गर्त में जाने से बचाने का शिविर अच्छा उपाय साबित हुए। यह पूज्यश्री का बहुत ही बड़ा उपकार है जो युवा पीढ़ी कभी नहीं भुला पाएगी।

**शाकाहार सम्मेलन** : आज समाज की नई पीढ़ी में शाकाहार एक प्रश्न चिन्ह बन गया है। पूज्य श्री की प्रेरणा एवं सान्निध्य में विभिन्न नगरों, कस्बों, गांवों में विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। उनमें उन्होंने अपने सम्बोधन के माध्यम से नई पीढ़ी में इतना उत्साह भरा की जो वर्ग संस्कारों से दूर





हो रहा था वह जीवन वह नैतिक जीवन और आचार-शीलता की ओर आकर्षित हुआ। इसमें पुण्यश्री की प्रेरणा से शाकाहार रैलियां, सम्मेलन, निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा, जिसमें अनेक शासकीय-अशासकीय विद्यालयों महाविद्यालयों के हजारों-लाखों की संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लेकर अपने जीवन में शाकाहार को स्थान दिया।

**प्रतिभा सम्मान** : अखिल भारतीय जैन प्रोत्साहन की इस योजना से वैश्विक सेवा के लिये तैयार हो रहे मेधा सम्पन्न छात्र-छात्रायें अब धर्म एवं समाज के विकास के लिये भी उद्यत दृष्टिगोचर होते हैं। यह सब संभव हुआ है पूज्य श्री के मंगल चिंतन की अजस्रधारा के सतत प्रभाव से। प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिये एक आयोजन का विचार फलीभूत हुआ जिसमें जैन समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु योग्य छात्र-छात्राओं को सम्मानित एवं पुरूस्कृत करने का निर्णय लिया गया। इस योजना के अंतर्गत भारत में किसी भी प्रदेश के माध्यामिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक परीक्षाओं की योग्यता सूची में स्थान पाने वाले छात्र-छात्राओं तथा 90% या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित पुरूस्कृत किया जाता रहा है। इस आयोजन में पूरे भारतवर्ष में अपनी एक अलग पहचान बनाई, एक अलग छाप छोड़ी। हजारों छात्र सम्मानित होकर देश, समाज की सेवा में संलग्न हैं। इस आयोजन की एक स्मारिका के संपादन का सौभाग्य मुझे भी मिला।

**कैरियर काउंसलिंग** : आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रत्येक विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहता है उसे सही मार्गदर्शन ना मिल पाने के कारण वह अपनी योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं कर पाता है, इसके समाधान के लिये पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में कैरियर काउंसलिंग का आयोजन अनवरत रूप से जारी रहा जिसमें जहां पूज्य श्री ने विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण संबोधन दिये वहीं नामी-गिरामी काउंसलर भी आकर उनको सही दिशा बोध देते रहे। कैरियर काउंसिलिंग के माध्यम से हजारों विद्यार्थी अपनी योग्यता का सही मूल्यांकन करने में अपने आप को सक्षम पा रहा है, यह सब पूज्य श्री के मंगल आशीर्वाद से संभव हो पाया था।

**पुलिस लाइन में संबोधन** : पूज्य श्री अपनी विराट करूणामयी दृष्टि के चलते पुलिस अधिकारियों में उनके कर्तव्यों की भावना विकसित करने, उन्हें सामान्य जन से जोड़ने तथा पुलिस की नकारात्मक छवि को सकारात्मक बनाने हेतु अभियान चलाया।

इस हेतु अनेक अधिकारी पूज्यश्री के संपर्क में आये तथा अनेक स्थानों पर कार्यशाला में तथा सेमिनार आयोजित किये जाते रहे। भारतीय पुलिस कर्मियो व अधिकारियों में नैतिक संस्कार कैसे आयें दया, करुणा, कर्तव्य परायणता कैस आए, आम आदमी अपने को सुरक्षित महसूस कैसे करें, यह सब बातें पूज्य श्री पुलिस वालों के बीच अपने मंगल उद्‌बोधन में रखते रहे।

**पत्रकार सम्मेलन** : अपनी बात जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है मीडिया। मीडिया तत्काल प्रभाव से जन-जन तक तुरंत गति से पहुंचता है। पूज्य श्री द्वारा देश के विभिन्न अंचलों में प्रेस वार्ता एवं पत्रकार सम्मेलन में जैन धर्म के मूल सिद्धांतों के बारे में विस्तार एवं सरलता के साथ अपनी वाणी द्वारा आमजन के कल्याण हेतु सफल रहे और उन्होंने हमेशा पत्रकारों को बुला करके यही संबोधन दिया कि दैनिक अखबार देश में नैतिक शिक्षा की क्रां ति ला सकते हैं, उनमें नैतिक शिक्षा संबंधी, संस्कार संबंधी, अच्छे-अच्छे आलेखों, समाचारों, जानकारियां प्रमुखता से प्रकाशित की जाये तो युवा पीढ़ी को बहुत बड़ा लाभ होगा।

**सराकोद्धारक एवं सराक सम्मेलन** : पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, उड़ीसा में एक ऐसी जाति निवास करती है जिसे सराक जाती कहते हैं, वह मूलत जैन रही है। इनके संस्कारों से जैन धर्म की खूशबू आती है। जैन समाज के महल की नीं व के पत्थर की तरह सराक समाज आज भी बड़ी संख्या में मौजूद है। सराक शब्द श्रावक शब्द का अपभ्रंश है। सराक मूल रूप से जैन हैं यह अनेक तत्यों और प्रमाणों से सिद्ध हो चुका है। हमारे भूले, बिछड़े सराक भाइयों का उद्धार का बीड़ा पूज्यश्री ने उठाया। और वे सराकोद्धारक संत के नाम से जाना जाने लगे। आचार्यश्री का तडाई चतुर्मास ऐतिहासिक था। पूज्य श्री की प्रेरणा से सराक क्षेत्र में मंदिरों का निर्माण, पाठशालाओं का संचालन, सिलाई सेंटर, कम्प्यूटर केन्द्र, विद्यालय, छात्रों को छात्रवृत्ति, पाठ्य पुस्तकें, असहाय विधवा पेंशन, यात्रा करवाना, महावीर जयंती आयोजन, पर्यूषण पर्व का आयोजन, वस्त्रों का वितरण, शिविर का आयोजन, एक्यूप्रेशर चिकित्सक गतिविधियां आदि नेक कार्य हैं जो सराक क्षेत्र में पूज्यश्री की सतत प्रेरणा से रही हैं। मुझे भी सराक क्षेत्र की गतिविधियों को देखने का अवसर मिला। सराक क्षेत्र जाकर मैंने देखा कि आचार्यश्री ने सराको के लिये जो कार्य किया है वह अद्भुत है, वे इसके लिये सदियों तक याद किये जायेंगे। पूज्य श्री के सान्निध्य में विगत अनेक वर्षों में सराक सम्मेलनों की भी अनवरत श्रृंखला भी गतिमान थी जिसमें सराक भाइयों को पूज्य श्री अपने सान्निध्य में धर्म, दर्शन का तो ज्ञान कराते ही थे साथ में ही जीवन उपयोगी अनेक गतिविधियों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता रहा है। सराक बंधु पूज्य श्री को अपना मसीहा मानते हैं।

**प्रभावना के संवाहक अनेक विधि-विधान-** साधुओं का मंगल विहार हमेशा होता रहता है, जिससे श्रावक संस्कार और जैन धर्म का विकास निरंतर होता रहा है, इसी क्रम में पूज्य श्री ने लगभग संपूर्ण भारत में विहार कर जहां स्व-कल्याण किया है वहीं समाज में विधि -विधान, अनुष्ठान आयोजन में अपना मंगल आशीर्वाद और सान्निध्य प्रदान कर जन-जन को संस्कारित करने के कार्य किये हैं। अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में अनेक कीर्तिमान पूज्य श्री के सान्निध्य में स्थापित हुए हैं। पूज्यश्री की प्रेरणा से अनेक मंदिरों, मानस्तम्भ आदि के निर्माण भी हुए हैं। आज वे कार्य जैन जागृति के प्रतीक बनकर समाज तथा देश को दिशा दे रहे हैं।

**समाज के प्रतिनिधियों का सम्मेलन**: पूज्य श्री का चिंतन प्रत्येक वर्ग के लिये प्रस्फुटित होता है। पूज्य श्री के सान्निध्य में पुजारी सम्मेलन, समाज के पदाधिकारियों का सम्मेलन, जैन तीर्थक्षेत्रों के प्रबंधकों का सम्मेलन, तहसील, जिला स्तरीय जैन सम्मेलन, ब्रह्मचारी सम्मेलन अनवरत रूप से आयोजित होते रहे। ऐसा कार्य केवल पूज्य श्री ही कर सकते थे, जो सबके प्रति अपनी संवेदना और वात्सल्य रखते थे।

**जैन ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर** : पूज्य श्री का विचार रहता था कि ज्योतिष ही सही विधि, मान्यता अनुसार मुहूर्त निकाले जायें गे तो विद्वानों के द्वारा सम्पन्न कराये जाने वाले समस्त विधि-विधान और संस्कार निर्दोष और निर्विघ्न कराने में सक्षम हो सकेंगे। जैन ज्योतिष में युवा विद्वानों को दक्ष बनाने के लिये पूज्य श्री के सान्निध्य में अनेक जैन ज्योतिष शिविरों का आयोजन हुआ, जिससे युवा विद्वान जैन ज्योतिष में निष्णात होकर जैन विधि से मुहूर्त संशोधन, कुंडली निर्माण आदि कार्य को संपादित करने लगे।

**कारागारों में संबोधन**: संतों की चिंता कभी वैयक्तिक नहीं होती वरन वे संपूर्ण समाज के लिये चिंतन करते हैं। ऐसे ही संत पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज थे जो आदर्श समाज की स्थापना के आह्वान की प्रेरणा शक्ति बने हुए थे। पूज्य श्री के उसी आंदोलन का एक भाग रहा है उनके जेलों में प्रवचन। जेल के कैदियों के साथ संवाद स्थापित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था जिसे





पूज्य श्री ने स्वीकार किया और जेलों में पूज्य श्री ने अपनी अनंत करूणा, भक्ति, ज्ञान व तपस्या की पावन गंगोत्री में समाज के उस अपेक्षित वर्ग का भी अवगाहन कराया जिसे सतत उपेक्षा मिलती है। पूज्य श्री के जेल प्रवचनों की महत्ता को आंक पाना बहुत सहज कार्य नहीं है। उन्होंने एक ऐसे समूह से संपर्क स्थापित किया जो समाज से पूरी तरह कट चुका था और समाज उनसे खौफ जाता था। पूज्यश्री कहते थे कि जेलों के बंदी भी मनुष्य ही है, जब उनके प्रति हमारा रवैया बदलेगा तो वे खुद भी सोचने को मजबूर होंगे।

तिहाड़ जेल हो अन्य जिला स्तरीय जेल अनेक जेलों में पूज्य श्री ने अपने मार्मिक संबोधन से हजारों कैदियों के जीवन को एक नई राह दिखाई। हजारों कैदियों ने शाकाहार अपनाया, व्यसन मुक्त और अपराध मुक्त जीवन का संकल्प आचार्यश्री से लिया। धर्म क्रांति की राह में पूज्यश्री यह सोपान अपने आप में बेहद अनूठा था।

**सीए सम्मेलन** : पूज्यश्री की प्रेरणा से सीए सम्मेलनों, गोष्ठियों का आयोजन उनके सान्निध्य में किया जाता रहा है जिसमें संपूर्ण भारत वर्ष से बड़ी संख्या में सीए जुड़ते रहे और आचार्य श्री के सान्निध्य में विभिन्न बिंदुओं पर विचार-विमर्श करते रहे।

**बैंकर्स सम्मेलन** : पूज्य श्री के प्रेरणा से राष्ट्रीय जैन बैंकर्स फोरम की स्थापना हुई और इसके माध्यम से अनेक लाभकारी आयोजन, सम्मेलन, गोष्ठियाँ हुई।

इस प्रकार आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी परंपरा के षष्ठ पट्टाचार्य राष्ट्रसंत आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज का योगदान भारतीय संस्कृति, समाज के उन्नयन, संरक्षण संवर्धन निरंतर रहा है जो स्तुत्य, प्रेरणादाई अनुकरणीय है।

पूज्य ज्ञानसागर जी महाराज ने अपने साधना काल में जितने भी कार्य किये वे सभी देश और धर्म के उत्थान के लिये ही किये। उनका सहारा चला जाना किसी को भी सहन नहीं हो रहा है। लेकिन वैराग्य के इस प्रसंग से हमें उनके जीवन और जीवन के महनीय कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

**अंत समय भी दे गये जोड़ने की सीख** : आप जीवन भर जोड़ने का संदेश देते रहे 36 नहीं 63 की सीख देते रहे यह सीख उन्होंने देह से विदा होते-होते भी दी। उनकी समाधि 63 वर्ष की आयु में हुई यह 63 पूज्य श्री का प्रेरक सूत्र था।

**अद्भुत संयोग** : यह भी अद्भुत संयोग है कि आचार्यश्री की मुनिदीक्षा महावीर जयंती के दिन हुयी थी और समाधिमरण भी भगवान महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक की वेला में 15 नवम्बर को हुआ है। निश्चित ही यह बता रहा है कि वे सचमुच वर्तमान में वर्द्धमान सम थे।

किसी को तपा कर खुश होना अलग बात है। इन्होंने खुद को तपा कर रोशनी की थी।

सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज जैसे महान् प्रभावक सन्त का इस तरह आकस्मिक समाधिमरण अद्वितीय सन्त का स्थान सदैव रिक्त रहेगा।

उन जैसे द्वितीय विराट संत का अचानक देह परिवर्तन लाखों श्रद्धालुओं को स्तब्धकारी है। 16 नवम्बर को बारां राजस्थान में उनके अंतिम दर्शनों के लिये पूरे भारत देश के हजारों श्रद्धालु उमड़ पड़े। नसिया जी में आचार्यश्री जी जिनवाणी व पारस चैनल पर प्रसारित किया गया। एक सूरज था कि तारों के घराने से उठा।

आँख हैरान है क्या शख्स जमाने से उठा॥

गुरुदेव आप भले ही देह से यहाँ उपस्थित न हो लेकिन आप हमेशा मेरी सांसों में सदैव विराजमान रहेंगे। आप हमारी स्मृतियों में सदैव जीवन्त रहेंगे और सदैव-सदैव कृतज्ञ रहेंगे। आपने जो दिया वह अद्भुत अकल्पनीय है।

## कहानी

# मछली नहीं मौत

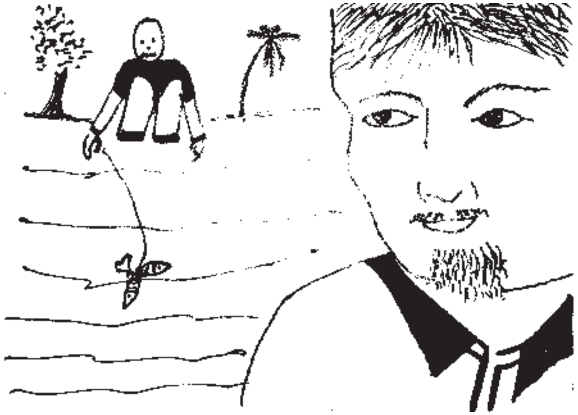

मंगल प्रभात का सूर्य सुनार नदी तट को स्वर्णिम कर रहा था वृक्षों पर पक्षी कलख गान रहे थे। खेतों में वासंती बिखराती सरसों लहरा रही थी। नदी की लहर एक वीणा जैसा मधुरगान कर रही थी नव निर्मित नदी के पुल पर लोगों की चहल पहल बढ़ चुकी थी नदी के पुल पर घूमने का कुछ लोगों का आनंद ही अलग आता था। इसी समय रहली के उस पार पटनागंज के जिनमंदिरों की पूजन करने जैन श्रद्धालूओं का जाना प्रारंभ हो चुका था। तब कुछ लोग पूजन करके लौट भी रहे थे पटनागंज बहुत ही निराला आकर्षक मन्दिरों का बेहद आकर्षक तीर्थ हैं। इस तीर्थ के मूलनायक भगवान सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ हैं। सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ का एक बार जो दर्शन कर लेता है। वह इनका दीवाना अवश्य ही बन जाता है। रहली नगर के जैन श्रद्धांलू पटनागंज के बड़े बाबा की अपना भाग्य विधाता मानते हैं। उनमें से ही एक सुशील जैन हैं।

सुशीला जैन लम्बे समय से पत्रकारिता जगत् में अपनी गहरी पहचान बनाये हुये हैं। दो बार जैन समाज के अध्यक्ष बन चुके हैं। पूर्व पार्षद होने के कारण राजनीति एवं नगर में उनका सम्मान अलग ही है। सुशील की स्पष्टवादिता व भाषणकर्ता का तो कोई तोड़ ही नहीं है। सिद्धांतों पर अधिक रहकर ही सब काम किया करते हैं। उन्होंने कई चुनाव लड़े हारना तो स्वीकार परन्तु अनैतिक कार्य करना पसंद नहीं किया। सुशील जैन को प्यास से सब लोग कूट्टू भैया बोला करते हैं।

आज कूट्टू भगवान की पूजा करके जब पुल की और पहुँचे तभी सामने से आ रहे प्रमोद रैकवार ने कूट्टू कक्का जय राम जी की कहा कूट्टू की वाहें तन गयीं वे मन में सोंचने लगे मेरे कैसे पाप कर्म का उदय है कि मैं कितने अच्छे परिणाम बना के मंदिर से निकला ओर ये मछली मारने वाला बीच में मिल गया। कितने बार मैंने भगवान से भी प्रार्थना कि भगवन् जब तक में घर न पहुँच जाऊँ मुझे कोई क्रूर व्यक्ति न मिले परन्तु मुझे मेरी भावना की पंक्ति भी याद आ गयी।

**दुर्जन, क्रूर, कुमार्गरती पर क्षोम नहीं मुझको आवे।**

**साम्यभाव रखूं में उन पर ऐसी परिणति हो जावे।**





इसी पंक्ति को याद करते हुए सुशील के अन्दर उदारवादी सोच कोंध गया। और उसे एक कहानी याद आ गयी परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में सुनायी थी। प्रमोद ने सुशील से कहा कक्का जय राम जी की सुशील ने भी कहा बेटा जय राम जी की और कहां जा रहे हो तुम प्रमोद ने हंसकर कहा कक्का आप जानते तो हो। वही जा रहे रोज की तरह आप जिस काम के लिये हमेशा रोकते हैं। वही करने जा रहा हूँ सुशील ने कहा बेटा प्रमोद क्या तुम नहीं जानते हो कि यह मछलियों की जान भी अपने जैसी होती है। ये मछलियां जल की रानी होती हैं। देखने में कितनी सुन्दर भौली भाली होती हैं। उन्हें धोखे से पकड़ना अच्छी बात नहीं तड़पा तड़पा कर मारना क्या कोई वीरो का कार्य है ? आज तुम्हें एक कहानी जरूर सुनाता हूँ तुम ध्यान से सुनना।

प्रमोद भाई एक बार एक जैन संत किसी जंगल में अपना उपदेश दे रहे थे वहाँ कई सेठ सेठानी राज्य के राजा महाराजा उनके प्रवचन सुन रहे थे उसी समय एक धींवर भी आकर उनके उपदेश सुनने लगा सन्त ने कहा की जीवन में एक छोटा सा नियम आदमी को महान बना देता है। आप लोगों को एक-एक नियम अवश्य लेना चाहिए सबने अपनी-अपनी सुविधानुसार एक-एक नियम लिया और अपने घर को चले गये। धीरे-धीरेर धींवर भी सन्त जी के पास आया। सन्त जी ने कहा बोलो भाई तुम कोन हो। धीवर ने कहा महाराज मैं धींवर हूँ। तब संत जी ने पूछा तुम क्या करते हो। वह बोला तालाब पर जाते हैं। मछलियों को पकड़ते हैं। और उससे ही अपना जीवन चलाते हैं। सन्त जी ने कहा भैया एक काम करो एक नियम ले लो जो पहली मछली पकड़ी जायेगी उसे जीवन दान दे देंगे। धींवर ने सन्त के चरण छूकर नियम ले लिया कि पहली मछली को जीवनदान देंगे। और वह चला गया तालाब पर अपना जाल फैलाया पहली मछली जो आयी। उसकी गर्दन में काला धागा बान्ध दिया क्योंकि उसे जीवन दान देना है पर संयोग ऐसा बना कि उसने जितने बार जाल डाला वही मछली आयी सुबह से शाम हो गयी और रात भी हो गयी। उस मछली के सिवाये कोई दुसरी मछली जाल में नहीं आखिरकार वह बिना मछली लिये ही घर चला गया। जब वह अपने घर बिना मछली लिये पहुँचा तो उसकी पत्नी अपने पति को खाली हाथ देखकर आग बबूला हो गयी। धींवर बेचारा अपनी बात ठीक से अपनी पत्नी से नहीं कह पाया पत्नी ने आव देखा न ताब धींवर के ऊपर जलती लकड़ी से प्रहार कर दिया। लेकिन एक चमत्कार हो गया जलती लकड़ी के अंगारे जमीन पर गिरकर हीरे बन गये ओर धींवर सम्पन्न श्रेष्ठी के तरह हो गया। दया का परिणाम हमेशा प्रमोद भाई अच्छा होता है। प्रमोद ने कहा कक्का में हमेशा के लिये मछली मारना नहीं छोड़ सकता पर आज तो नहीं मारूंगा आज आप के कहने से घर जाऊंगा। और प्रमोद सुशील के पीछे हो गया। कुछ समय के लिये सुशील की संगती का प्रभाव सुशील पर अच्छा पड़ गया। प्रमोद पीछे-पीछे जाकर सोच रहा था कि घर जाकर क्या बोलूंगा बोल दूंगा कि बिल्ली रास्ता काट सो आज नदी पर

नहीं जाऊंगा सुशील तो अपने घर चले गये पर प्रमोद बहुत देर तक चाय की दुकान पर बैठा रहा। बैठे-बैठे जब घड़ी के 11 बजे गये। तो प्रमोद ने कहा अब घर चलते हैं। जैसे ही प्रमोद घर पहुँचा तो उसकी पत्नी अर्चना बोली क्या बात है। आज जल्दी घर आ गये। प्रमोद ने कहा आज हम नदी गये ही नहीं। अर्चना ने कहा क्यों क्या हो गया। तब प्रमोद ने कहा कुछ नही में जा रहा था नदी की तरफ एक बिल्ली मेरा रास्ता काट गयी तो मैंने सोचा आज अनहोनी घट सकती है। इसलिये मेंने सोच लिया कि आज नहीं जाऊंगा अर्चना ने कहा आप ऐसी बातें कब से मानने लगे। मैं तो स्कूल में जब पड़ती थी तो मेरी टीचर कहती थी कि बिल्ली का रास्ता काटना जैसी बातों को मानना अंधविश्वास हैं।

प्रमोद ने गहरी सांस लेकर कहा आप लोग शहर के हम लोग गांव के हमें तो सब मानना पड़ता हैं। शहर और गांव में यही अंतर होता है। जिन बातों को गांव के लोग मानते हैं। व शहर के नहीं मानते हैं। पर हमें तो सब मानना पड़ता है। क्योंकि हम अपने माता-पिता के पास रहते हैं। हमारे समाजों ने रीति-नीति चलायी है। उसका तो हम निर्वाह करेंगे।

अर्चना ने वक्र हंसी के साथ कहा हो भाई माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र तो आप ही हो जितने राम लक्ष्मण नहीं थे उनसे ज्यादा आप हैं। उसी का तो भाग रही जितने घर में लड़ाई होती है। वो सब आज्ञाकारिता का परिणाम है।

प्रमोद ने चिल्लाकर कहा-आखिर तु कहना क्या चाहती है तब तेरे पास बैठता हूँ तो सिर्फ उलाहने देती है। कभी तो शांति की बात किया कर अर्चना ने कहा जैसे काम सो जी चुराने वाले लोगों से शांति से बात करना ना इंसाफी होगी।

अर्चना की बात सुनकर प्रमोद एक दम भड़क उठा तुम्हें ऐसा लगता है। मैं काम से जी चुराता हूँ अरे तुम महिलाओं के 95 काम कर दूं और एक काम नहीं किया तो प्रवचन चालू सही बात है। जब से हुयी है शादी आंसू बहा रहा हूँ, आफत गले पड़ी है उसे निभा रहा हुँ।

प्रमोद की बात सुनकर हंसी और बोली ठीक है। मैं आफल ही सही पर एक बात कह देती हूँ उसे ध्यान से सुनना की आलसी आदमी असगुन की वाट देखता है। इसी तरह से आप भी मेरे पूज्य पति देव हो व्यंग्य की भाषा में अर्चना ने कहा- कि आदमी का काम प्यारा होता है। चाम नहीं मैंने इस घर में अगर इज्जत बनायी है तो मात्र अपने काम से में घर का भी काम करती हूँ मुहल्ले का भी काम करती हूँ इसलिये मुझसे घर के लोग ही नहीं मुहल्ले के लोग भी खुश रहते हैं। क्या समझे स्वामी जी। प्रमोद का क्रोध अर्चना के व्यंग्यों से और बढ़ता गया गुस्सा में प्रमोद उठा और कहा कि ठीक में चला और तभी आऊंगा जब कुछ करके लाऊंगा क्योंकि घर की औरतें तभी इज्जत करती है। जब उसके हाथ में पैसा रखों अर्चना ने कहा स्वामी जी भिनको नहीं थोड़ी रामायण पड़ लो।

**जग में स्वारथ की सब की रीति**
**स्वारथ देख करहिं सब प्रीति**

अब इसके बाद भी तुम नहीं समझ पाये। तो हम आगे से बोलने से रहेंगे। प्रमोद ने हाथ जोड़ कर कहा हां देवी जी में सब समझ गया मुझे ज्यादा न समझायें नहीं तो मैं अपनी भाषा में समझाना शुरु कर दुंगा। जाओं भीतर अपना





काम करो। तब अर्चना ने कहां चलो भोजन कर लो फिर कहीं जाना।

तब प्रमोद ने कहा आज में भोजन तब करूँगा जब कुछ कमाकर लाऊंगा और प्रमोद अर्चना के बहुत कहने के बाद भी घर से निकल गया इधर अर्चना भी अफसोस करने लगी व सोचने लगी की गुस्सा में घर से बाहर निकलना अच्छा नहीं होता है। क्रोध कोई न कोई विनाश जरूर कराता है। आज भगवान करे कोई अनहोनी न हो जाये हे भगवान मेरी लाज बचाना इतना कहकर अर्चना अपने काम में लग गयी। ऊधर प्रमोद काम काज की खोज में बाजार में घूम रहा था सबसे पहले वह भीमसेन की दुकान पर गया रामनोहर लुहाया इस नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। भीम से कहा चाचाजी मुझे आप अपनी दुकान पर नौकरी पर रख सकते हों भीम ने कहा भैया अभी तो हमारे यहाँ नौकर बहुत हैं। अब अभी तो नहीं रख पायेंगे फिर प्रमोद कुट्टू भैया के यहां पहुंचा उनसे भी यहीं बोला की हमें अपने यहाँ नौकरी पर रख सकते हैं। कुट्टू भैया ने बोला की तुम क्या सुबह से अखबार बांट सकते हो उसने कहा हाँ पर तुम्हें चार बजे रात में बस स्टैण्ड जाना पड़ेगा प्रमोद ने कहा इतनी रात में तो नहीं जा सकता 6 बजे जा सकता हूँ।

कुट्टू भैया ने कहा 6 बजे तक पूरे अखबार बट जाते हैं। जिस जगह भी अखबार जायेगा समय से जायेगा प्रमोद ने अपनी असमर्थता दिखा दी और वह सोचने लगा मुझे ऐसे कहीं काम नहीं मिलेगा और घर में पैसा देना ही पड़ेगा नहीं तो घर की औरत भी इज्जत नहीं करेगी।

प्रमोद ने अपना कांटा तांत व लकड़ी ऊठाई और नदी की ओर चल पड़ा उसने सोची अपने पुरखों का काम ही भला है। उसे छोड़कर इधर-उधर भटकना नादानी है। मैं मानता हूँ कि हिंसा नहीं करनी चाहिए मौत किसी को भी प्यारी नहीं होती कुट्टू कक्का हमें लाख समझायें पर मेरी मजबूरी भी तो मजबूरी है। कहां जाऊं किसके यहां काम करूं अच्छी जगह काम मिलता नहीं है। और जहां काम मिलता है वह काम हम कर नहीं सकते हैं। तो भैया अपना ही काम करते हैं प्रमोद ने अपनी बायी कलाई को ऊपर किया और घड़ी को देखा दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।

मछलियों पे दया करनी चाहिए पर क्या करूँ मुझे ओर कोई धन्धा मिलता नहीं है। अब यही एक अपना कर्म समझ लेता हूँ हम धर्मात्मा मेरी बुराई करेगा मैं भी जानता हूँ कि इस हिंसा का फल दुःख ही है। पर में मजबूर हुँ इस प्रकार सोचता सोचता प्रमोद नदी के किनारे पहुंच ही गया। तेज धूप और गरम हवा के बावजूद भी प्रमोद ने मौसम की परवाह किये बिना सुनाट नदी गहरे पानी में अपनी डोर डाल दी कुछ वर्षों पहले ही सुनाट नदी में बांध बना था। जिसके कारण से पानी का अधिक गहरा भराव हो गया प्रमोद नदी के किनारे बैठे सोचता रहा आज ही तो मैंने नियम लिया था। कि आज में मछली नहीं पकडूंगा और आज ही नियम टूट रहा है। ना शादी कराई होती न नियम टूटता अर्चना के ताने जो जो काम न कराये वो सब थोड़ा है। हे गंगा मैया मेरी लाज रखना आज इतनी मछली आ जाये उस अर्चना का मुंह बन्द हो जाये।

इधर प्रमोद अपने मछली पकड़ने के

काम में जुट गया था तो वहीं अर्चना का दिल धड़क रहा था वह अपनी सास गंगा से कहने लगी हे गंगा मैया जब गंगा में पानी रहे मेरे उनकी जिन्दगानी रहे तब गंगा ने पुछा ऐसा क्यों कह रही हो तब उसने बताया कि वे आज गुस्सा में दोपहर 12 बजे गये हैं और कह गये की घर तभी आऊंगा जब कुछ कमा के आऊंगा गंगा ने कहा वहू तेरे लिये मैंने कितनी बार समझाया तू पैसे के मीत मत बन क्योंकि जिन्दगी में पैसा ही सबकुछ न हीं होता मगर आज कल की बहुऐं तो ऐसी आयी हैं कि पैसे के लिये मरी जा रही हैं। कैसे समझाऊं इनको अब बेचारा मौडा गुस्सा में गया है। कहीं कुछ हो जाये या करले कौन जिम्मेदार है। अर्चना ने कहा कि मैंने तो सिर्फ इतना ही कहा कि आपको आजकल अंधविश्वास ज्यादा सिर चढ़ रहा है कि उन्होंने बताया कि आज बिल्ली ने रास्ता काट दिया इसलिये मैं नहीं जा रहा इतनी सी बात पर भिनक गये और बिना बताये ही चले गये अब अगर आप मेरी गलती बताये तो दुनिया में ऐसा ही तो रहा है कि दुनिया में सब गलतियां तो बस बहुओं की ही हो रही हैं। गैस चुल्हा में समझदार हो गया है वह बहुयें को देखकर ही भवकता है। और सासों को देखकर शान्त हो जाता है। इसलिये आज तक बहुऐं ही जली है। सास का जलना कहां सुना है। अर्चना के ताने सुनकर गंगा बाई बोली कि मैं इसलिये तुम्हारे मुंह नहीं लगती कौन सी बात को कहां ले कोई भरोसा नहीं इधर सास और बहु की तनातनी हो रही थी वहां नदी किनारे सुर्यस्त होने के बाद कांटे में फंस गयी थी लेकिन वह ऐसी घुमी के एक बड़े पत्थर में फंस गयी प्रमोन ने जैसे-जैसे डोर को खींचने का प्रयास किया डोर नही खींची आखिरकार प्रमोद ने पानी में डुबकी लगा ही दी। लेकिन क्या पता क्या हुआ कि प्रमोद पानी के बाहार नहीं निकल पाया।

अर्चना के मन में बहुत व्याकुलता हो उठी और वह सुर्यास्त के बाद आने जाने वाले लोगों से प्रमोद के बारे में पूछने लगी एक सज्जन नाम के व्यक्ति ने बताया कि वो तो नदी के किनारे बैठे थे इसके बाद पता नहीं अर्चना के अपने कदम नदी के तरफ बड़ा दिया और वह ढूंढती-ढूंढती उस घाट पर पहुंच गयी जिस घाट पर प्रमोद को शर्ट व जूते रखे थे अर्चना ने आवाज लगाई काय कहां हो कहा बिला गये ? कोई उत्तर नहीं मिला अर्चना को अनहोनी की आशंका होने लगी और वह पुल पर आकर खड़ी हो गयी कुछ लोगों बताया कि मेरे पति देव मछली पकड़ने गये थे उनकी शर्ट व जूते रखे पर वो नही दिख रहे और फफक-फफक कर रो रही थी देखते ही देखते लोगों की भीड़ लग गयी गोता लगाने में जिनको महारत प्राप्त थी उन्होंने एक घण्टे की मशक्कत के बाद प्रमोद की लाश को बाहर निकाला चारों तरफ शोक का वातावरण छा गया। लोगों ने पुलिस को सूचना दे दी संचार माध्यम से पूरे जिले में समाचार फैल गया और सुशील कूट्टु को भी यह समाचार मिला तो वे एक ही बात कह बैठे कि हिंसा का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता है। मैंने आज सुबह ही उस प्रमोद को समझाया था और उसने यह कसम खायी थी कि मैं आज मछली नहीं पकडूँगा फिर भी शैतान नहीं माना और जिन्दगी से हाथ धो बैठा उसे मछली तो नई मिली परन्तु मौत जरूर मिल गई।





## हमारे गौरव

# हरिकेसरी वेन

हरिकेसरी देव- चालुक्यों का कदम्बवंशी सामन्त था। स्वयं की वह कादम्ब सम्राट मयूरवर्मन के कुल का तिलक कहता है। सन् 1055 ई. के बंकापुर के दुर्ग की एक दीवार पर उत्कीर्ण, शिलालेख के अनुसार उस समय सम्राट त्रैलोक्यमल्ल का द्वितीय पुत्र राजकुमार गंगपेर्म्मानडि-विक्रमादित्य देव गंगवाडि और बनवासि प्रदेशों का संयुक्त शासक था। उसका महाप्रधान यह हरिकेसरी देव कदम्ब था, जो राजकुमार के अधीन बनवासि देश पर शासन कर रहा था। इससे प्रतीत होता है कि बनवासि का प्राचीन कदम्ब घराना अपने प्रदेश में अभी तक जीवित था और उसमें जैन धर्म की प्रवृत्ति भी पूर्ववत् चल रही थी। यह हरीकेसरी देव भी बड़ा धर्मात्मा और दानी था और अपने लिये प्राचीन कदम्ब नरेशों की उपाधियाँ प्रयुक्त करता था उसकी पत्नी लच्चलदेवी भी उसी की भाँति जिनभक्त थी। उपर्युक्त वर्ष में इस दम्पत्ती ने स्वयं तथा उनकी प्रेरणा से बंकापुर की पाँच मतों को आश्रय देने वाली जनता ने और नगर के महाजनों की निगम (गिल्ड) ने एक जैन मन्दिर के लिये बहुत सा भूमिदान दिया था।

## कविता

# मुनि योग सागर

❊ ब्र. अजय झापन, दमोह ❊

मोन निष्णांत आत्म विश्रांत परम योगधारी
मुनि अविकारी पंचशील के पालक
पंच समिति धारक पंचइन्द्रिय विजेता
मोक्षमार्ग प्रणेता षट्आवश्यक धारी
केशलोंच करते नग्न दिगम्बर रहते
करें भू पर शयन ग्रीष्म शीत करते सहन
एक बार लेते आहार पदत्राण के बिना करते विहार
खड़े होकर लेते आहार सरस नहीं नीरस आहार
जीते प्रमाद सारे योगसागर मुनि हमारे
गुरु चरण की करें वन्दन कट जायें सारे बन्धन
आय निर्यापक मुनि आपकी महिमा बहुत सुनि
आपका अभिनंदन शत् शत् वंदन शत् शत् वंदन

# जैन सेनापति

✲ हुकुमचंद्र जी सांवला, विश्व हिन्दु परिषद उपाध्यक्ष ✲

क्रमशः पिछले अंक से

**महाराज डूंगरसिंह-कीर्ति सिंह-** ग्वालियर के किले के भीतर दीवारों पर उत्कीर्ण विशालकाय जिन-प्रतिमाओं के निर्माण का श्रेय इन्हीं दोनों तोमर नरेशों को है। आदिनाथ की प्रतिमा तो लगभग 50 फीट ऊँची है। यह निर्माण कार्य महाराज डूंगरसिंह के समय में प्रारंभ हुआ उनके पुत्र कीर्ति सिंह के समय पूरा हुआ। लगभग इनके निर्माण में 33 वर्ष लगे। दोनों नरेशों का जैन धर्म के प्रति अत्यन्त अनुराग था।

**नरेश हरिहर प्रथम-(1346-65 ई.)-** इसी नरेश के शासन काल में 1362 ई. में जब संगमेश्वर-कुमार वीर बुक्क महाराय के अधीन राजकुमार विरूपाक्ष-ओडेयर मलेराज्य प्रान्त का शासक थे और अपनी प्राचीन पार्श्व-जिनालय की सीमा को लेकर जैनों और वैष्णवों में विवाद हुआ। अपने सभा भवन में उक्त राजकुमार ने महाप्रधान नागन्न, प्रान्त प्रमुख सामन्त-सरदारों जन-नेताओं और जैन एवं वैष्णव मुखियाओं के समक्ष सर्वसम्मति से जैनों के पक्ष को न्यायपूर्ण घोषित किया, प्राचीन शासनों में जो सीमायें निर्धारित की गयी थी वे ही मान्य की गयी और एक शिलालेख में अंकित करा दी गयी। हरिहर का अनुज बुक्काराय इस समय संयुक्त शासक या वायसराय का कार्य कर रहा था और विरुपाक्ष हरिहर का पुत्र था। हरिहर के अन्तिम वर्ष 1365 ई. में कम्पा के जैन गुरु मल्लिनाथ को दान दिया गया था। इस काल के प्रमुख जैन विद्वान, भट्टारक राजा के प्रेरणा केन्द्र थे।

**नरेश बुक्काराय प्रथम (1365-1377 ई.)-** हरिहर प्रथम का अनुज एवं उत्तराधिकारी था। उसके सम्मुख 1368 ई. में एक जटिल अतः साम्प्रदायिक समस्या उपस्थित हुई। राज्य के समस्त नाडुओं (जिलों) के भव्यों (जैनों) ने उनके प्रति भक्तों (वैष्णवों) द्वारा किये गये अन्यायों का प्रतिकार कराने के लिये महाराज बुक्काराय की सेवा में एक आवेदन पत्र दिया। महाराज ने अठारहों नाडुओं के भक्तों , उनके आचार्यों गुरुओं, पुरोहितों और मुखियाओं को तथा अपने प्रमुख सामन्तों आदि को एकत्र करके जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ में दिया और घोषणा की कि हमारे राज्य में जैन दर्शन और वैष्णव दर्शन के बीच किसी प्रकार का भेद नहीं है। जैन दर्शन पूर्ववत् पंचमहाशब्द और कलश का अधिकारी है और रहेगा। जैन और वैष्णव एक है, उनके बीच कोई अन्तर नहीं करना चाहिये। इसी राजा के समय में 1367 ई. में श्रुतमुनि के शिष्य और आदिदेव के गुरु देशीगण के देव चन्द्रव्रतिप ने कुप्पटूर में एक जिनालय का पुनरूद्धार कराया था तथा स्वर्गगमन किया था। कई गुरु, सहायक कर्मियों ने समाधिमरण लिया। कई स्मारक जिनालयों का निर्माण करायें महाराज बुक्काराय के पुत्र एवं उत्तराधिकारी हरिहर द्वितीय के समय तक इसी पद पर आरूढ़ रहे। पुत्र ने 1367 ई. में एक जिनालय चेलूमल्लूर में बनवाकर उसके लिये दान दिया।

**महाराज हरिरि द्वितीय (1377-1404 ई.)-** नरेश के श्रेष्ठ सहयोगी थे कूचिराज आदि अन्य जैन मंत्री एवं राजपुरुष थे। अपने इन जैन वीरों की सहायता से इस प्रतापी नरेश ने अपने राज्य की पर्याप्त शक्ति बढ़ाई। शासन तंत्र सुचारू एवं संगठित किया और विविध उपाधियों से विभूषित सम्राट पद धारण किया था। इस राज्य में जैन धर्म खूब फला-फूला । महारानी बुक्कवे परम जिन भक्त थीं। सेनापति इरूग द्वारा निर्मापित राजधानी के कुन्थुनाथ-जिनालय के लिये 1397 में दान दिया था। राजा ने अनेक जैन तीर्थो में श्रवणबेलगोल इस काल में भी सर्व प्रधान थे। अनगिनत यात्री इस तीर्थ की वन्दना के लिये आते थे।





तीर्थाध्यक्ष चारूकीर्ति पण्डित देव के शिष्य थे, **सन् 1400 ई. में इस तीर्थ पर एक भारी उत्सव, गोम्मटेश्वर का महामस्तिकाभिषेक हुआ था।** राजा हरिहर द्वितीय की 1404 ई. में मृत्यु हुई।

**देवराय नरेश प्रथम (1406-1410 ई.)-** यह नरेश जैनाचार्य वर्धमान के पट्टशिष्य एवं महान् व्याख्याता धर्मभूषण गुरु के चरणों का पूजक था। स्वयं महाराज की पट्टरानी भीमादेवी परम जिन भक्त थी और उसने 1410 ई. में उक्त तीर्थ की प्रसिद्ध मंगाभि-वसदि का जीर्णोद्धार कराके उसमें शान्तिनाथ भगवान की नवीन प्रतिमा प्रतिष्ठित करायी।

**देवराय नरेश द्वितीय (1419-1446 ई.)-** वीर विजय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी यह नरेश संगमवंश का अन्तिम प्रतापी एवं शक्तिशाली नरेश था। विद्या-विनय-विश्रुत स्वयं महाराज देवराय ने 1426 ई. में राजधानी विजयनगर की पर्णपूगीफल-आपणवीथी (पान-सुपारी बाजार) में राजमहल के निकट ही मुक्तिवधू प्रियभर्ता एवं करूणानिधि पार्श्व जिनेश्वर का पाषाण निर्मित सुन्दर चैत्यालय निर्माण कराया था। जिसका उद्देश्य अपने पराक्रम पूर्ण कृत्यों एवं कीर्ति को अजर-अमर बनाना, धर्म प्रवृत्ति, स्याद्वाद विद्या का प्रकाश इत्यादि था। जैनाचार्य नेमिचन्द्र ने देवराय की राजसभा में अन्य विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करके राजा से विजय पत्र प्राप्त किया था। इस नरेश के जैन होने में कोई सन्देह नहीं रहा। राजा अनेक मंत्री, सेनापति राज्य पदाधिकारी सामन्त आदि जैन थे। जो उसकी शक्ति के स्तम्भ थे। इस नरेश की मृत्युतिथि 1446 ई. हैं ।

**राजावीर पाण्डय भैररस-** यह राजवंश प्रारंभ से अन्त तक जैन धर्मानुयायी रहा। इस वंश के राजा भैरवेन्द्र (भैरवराज) के पुत्र वीर पाण्डय (पाण्डयराय) ने 1432 ई. कार्कल में भगवान बाहुबलि स्वामी की विशाल (41 फुट 5 ईंच) उत्तुंग मनोहर प्रतिमा निर्माण कराकर प्रतिष्ठापित की थी। इस राजा के गुरु ललितकीर्ति मुनीन्द्र थे जिनके उपदेश से यह धर्म कार्य किया था। इस समारोह में विजयनगर सम्राट देवराय द्वितीय भी स्वयं उपस्थित रहे थे। **गोम्मटेश का महामस्तकाभिषेक 1500 ई. में असंख्य जन समूह की उपस्थिति में बड़े समारोह पूर्वक हुआ था।**

**सम्राट कृष्णदेवराय (1509-1539 ई.) -** विजयनगर के नरेशों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतापी और महान समझा जाता है। उसके समय में यह साम्राज्य अपनी शक्ति, विस्तार एवं वैभव के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। पूर्वजों की भांति वह भी सर्वधर्म समदर्शी था। 1519 ई. में जिनालय को दान दिया। मूडबिद्री की गुरु बसदि को स्थायी वृत्ति दी। हुम्मच के पद्मावती मंदिर में अंकित प्रायः उसी समय का वादी विद्यानन्द स्वामी की प्रशस्ति से प्रकट है कि यह जैन गुरु की अपनी विद्वता, वाग्मिता और प्रभाव के लिये उस काल में सर्व प्रसिद्ध थे। महाराज कृष्णदेवराय की राजसभा में विभिन्न देशों एवं मतों के विद्वानों के साथ कई बार सफल शास्त्रार्थ करके उन्होंने ख्याति अर्जित की थी। स्वयं सम्राट उनका बड़ा आदर करते थे। उनके चरणों में प्रणाम समर्पित करता था। इस राज्य में अनेक जैन धर्मानुयायी थे। इस नरेश के आश्रय में अनेक जैन विद्वानों के कन्नड़ साहित्य की भी सराहनीय अभिवृद्धि की थी।

**नरेश विदग्धराज राठौड़-** राजस्थान के हथूण्डी (हस्तिकुण्डी) नामक नगर में 10वीं शताब्दी में राठौड़ वंशी जैन धर्मानुयायी राजपूत राजाओं का शासन था। राजा जैन धर्म का परम भक्त था। राजधानी हथूण्डी में तीर्थंकर ऋषभदेव का विशाल मंदिर बनवाया था। उसके लिये पुष्कल भूमिदान किया था। उनके गुरु बलभद्र या वासुदेव सुरि थे। **इस राजा ने स्वयं को स्वर्ण से तुलवाकर वह सारा सोना उक्त मंदिर एवं स्वगुरु को दान कर दिया था।** जैन धर्म प्रभावना के लिये इस नरेश ने अन्य भी अनेक कार्य किये।

# आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज संघ पिच्छीका परिवर्तन -2020

| क्र. | पूज्य पिच्छीधारी | पुरानी पिच्छी लेने वाले | स्थान | दिनांक |
|---|---|---|---|---|
| 01. | मुनिश्री निस्पृहसागरजी महाराज | श्रीमती ममता मदनलाल जैन | जबलपुर | 08.11.2020 |
| 02. | मुनिश्री निश्चलसागरजी महाराज | श्रीमती चांदनी अंकुर लुहाड़िया | इंदौर | 08.11.2020 |
| 03. | मुनिश्री निर्भीकसागरजी महाराज | श्रीमतीराजकुमारीअशोकबाकलीवाल | खातेगांव | 08.11.2020 |
| 04. | मुनिश्री नीरागसागरजी महाराज | श्री नितिन जी सेठी | इंदौर | 08.11.2020 |
| 05. | मुनिश्री निर्मदसागरजी महाराज | श्रीमती अनु संजय गंगवाल | खातेगांव | 08.11.2020 |
| 06. | मुनिश्री निसर्गसागरजी महाराज | श्रीमती विनीता मुकेश काला | खातेगांव | 08.11.2020 |
| 07. | मुनिश्री ओमकारसागरजी महाराज | श्रीमती रितु सर्वेश रारा | खातेगांव | 08.11.2020 |
| 08. | मुनिश्री प्रसादसागरजी महाराज | श्रीमती समृद्धि संदीप जैन वरया | मुंगावली | 08.11.2020 |
| 09. | मुनिश्री अजितसागरजी महाराज | श्रीमती ज्योति आनंद जैन | आष्टा | 08.11.2020 |
| 10. | एलक दयासागरजी महाराज | श्रीमती सोनिया मुकेश जैन | आष्टा | 08.11.2020 |
| 11. | एलक विवेकानंद सागरजी महाराज | श्रीमती मनीषा संजय जैन | आष्टा | 08.11.2020 |
| 12. | मुनिश्री विनीतसागरजी महाराज | श्री निर्मलजी बड़जात्या | जयपुर | 14.11.2020 |
| 13. | मुनिश्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज | श्री सुशील पहाड़िया | जयपुर | 14.11.2020 |
| 14. | आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज | श्रीमती अचंल राजेन्द्र जैन वास्तु | नेहरू पार्क, इन्दौर | 15.112020 |
| 15. | मुनिश्री सौम्यसागरजी महाराज | श्रीमती शुभ्रा सोनू जैन, बेगमगंज | छत्रपतिनगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 16. | मुनिश्री दुर्लभसागरजी महाराज | श्रीमती सोनल प्रवीण पहाड़िया | जैन कॉलोनी, इन्दौर | 15.112020 |
| 17. | मुनिश्री निर्दोषसागरजी महाराज | श्रीमती अंजली सौरभ जैन | सिद्धार्थ नगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 18. | मुनिश्री निर्लोभसागरजी महाराज | श्रीमति प्रतिभा अनिल बांझल | उदयनगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 19. | मुनिश्री निरोगसागरजी महाराज | श्रीमती श्रद्धा विनीत जैन | चंद्रलोक कॉलोनी | 15.112020 |
| 20. | मुनिश्री निरामयसागरजी महाराज | श्रीमती आभा प्रवीण जैन | कालानी नगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 21. | मुनिश्री निरापदसागरजी महाराज | श्रीमती नीलम राजेन्द्र नायक | पंचबालयति, इन्दौर | 15.112020 |
| 22. | मुनिश्री निराकुलसागरजी महाराज | श्रीमती अर्चना ललित जैन | तिलकनगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 23. | मुनिश्री निरुपमसागरजी महाराज | श्रीमती मोनिका सुनिल जैन | मंगलबारा, भोपाल | 15.112020 |
| 24. | मुनिश्री शीतलसागरजी महाराज | श्रीमती सुधारानी जैन, मिकाड़ो | राजबाड़ा, इन्दौर | 15.112020 |
| 25. | मुनिश्री श्रमणसागरजी महाराज | श्रीमती स्वाती अभिषेक जैन | कालानी नगर, इन्दौर | 15.112020 |
| 26. | मुनिश्री संधानसागरजी महाराज | श्रीमती रिंकी रवीस जैन | महालक्ष्मी नगर, इन्दौर | 15.112020 |





| क्र. | पूज्य पिच्छीधारी | पुरानी पिच्छी लेने वाले | स्थान | दिनांक |
|---|---|---|---|---|
| 27. | मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज | श्रीमति सुनीता अशोक सेठी | खातेगांव | 15.112020 |
| 28. | मुनिश्री निस्वार्थसागरजी महाराज | श्रीमती काजल संजयजैन | सागर | 15.112020 |
| 29. | मुनिश्री उत्तमसागरजी महाराज | श्रीमती सारिका महेन्द्र सिंघई | सिरोंज | 16.11.2020 |
| 30. | मुनिश्री शैलसागरजी महाराज | श्रीमती श्रुति प्रियस जैन | भोपाल | 16.11.2020 |
| 31. | मुनिश्री पुराणसागरजी महाराज | श्रीमती कुसुमदेवी कोमलचंद जैन | भोपाल | 16.11.2020 |
| 32. | मुनिश्री निकलंकसागरजी महाराज | श्रीमती सीमा प्रमोद जैन (भोरिया) | सिरोंज | 16.11.2020 |
| 33. | मुनिश्री विराटसागरजी महाराज | श्रीमति मीनू सोनू गंगवाल | अजमेर | 19.11.2020 |
| 34. | मुनिश्री विशदसागरजी महाराज | श्रीमति मीना राकेश जैन | आष्टा | 19.11.2020 |
| 35. | मुनिश्री निर्मोहसागरजी महाराज | श्रीमति प्रमिला बंटी जैन धवल | अकोदिया मंडी | 19.11.2020 |
| 36. | मुनिश्री निस्पक्षसागरजी महाराज | श्रीमति ममता रविन्द्र सिंघई | टीकमगढ़ | 19.11.2020 |
| 37. | मुनिश्री निस्पंदसागरजी महाराज | श्रीमति मंजू राजेन्द्र जैन | अकोदिया मंडी | 19.11.2020 |
| 38. | मुनिश्री निष्कामसागरजी महाराज | श्रीमति मीना कमल जैन | अकोदिया मंडी | 19.11.2020 |
| 39. | मुनिश्री नीरजसागरजी महाराज | श्रीमति संध्या डॉ.के.के. जैन | शुजालपुर मंडी | 19.11.2020 |
| 40. | मुनिश्री निस्संगसागरजी महाराज | श्रीमति सुनीता पारस जैन | अकोदिया मंडी | 19.11.2020 |
| 41. | मुनिश्री समरससागरजी महाराज | श्रीमति नीतू मनोज जैन | आष्टा | 19.11.2020 |
| 42. | मुनिश्री संभवसागरजी महाराज | श्रीमति ज्योति प्रकाश जैन | अकोदिया | 19.11.2020 |
| 43. | मुनिश्री संस्कारसागरजी महाराज | श्रीमति अर्चना सुनील जैन | शुजालपुर मंडी | 19.11.2020 |
| 44. | मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज | श्रीमती संगीता प्रवीण जैन | शिवपुरी | 22.11.2020 |
| 45. | मुनिश्री निरंजनसागरजी महाराज | श्रीमती किरण विजय जैन | इन्दौर | 22.11.2020 |
| 46. | मुनिश्री निर्णयसागरजी महाराज | श्रीमती अनीता राकेश जैन | अशोकनगर | 22.11.2020 |
| 47. | मुनिश्री क्षीरसागरजी महाराज | श्रीमती जूली सुनील जैन, घेलू | अशोकनगर | 22.11.2020 |
| 48. | आर्यिकाश्री अपूर्वमति माताजी | श्रीमती सरिता मुकेश जैन | आष्टा | 22.11.2020 |
| 49. | आर्यिकाश्री अनुत्तरमति माताजी | श्रीमती सुधा सुरेन्द्र जैन | सिरोंज | 22.11.2020 |
| 50. | आर्यिकाश्री अगाधमति माताजी | श्रीमती डिम्पल राकेश जैन | सिरोंज | 22.11.2020 |
| 51. | मुनिश्री प्रशांतसागरजी महाराज | श्रीमती मणि विनोद जैन | सतना | 22.11.2020 |
| 52. | मुनिश्री निर्वेगसागरजी महाराज | श्रीमती पूजा सनत सुरैया | पथरिया | 22.11.2020 |
| 53. | क्षुल्लकश्री देवानंदसागरजी महाराज | श्रीमती रंजना विनोद फट्टा | पथरिया | 22.11.2020 |
| 54. | मुनिश्री श्रेयांससागरजी महाराज | श्रीमती सविता धर्मेन्द्र जैन | सानौधा | 22.11.2020 |

## डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

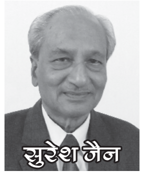


# अहिंसा परमो धर्म

भगवान महावीर की मूल शिक्षा है- अहिंसा ! सबसे पहले **अहिंसा परमो धर्म** का प्रयोग हिंदुओं का ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के पावन ग्रंथ महाभारत के अनुशासन पर्व में किया गया था परन्तु इसको अंतराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलवाई थी। भगवान् महावीर ने।

भगवान् महावीर ने अपनी वाणी से और अपने स्वयं के जीवन से इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान् महावीर का नाम ऐसे जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यवहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट न पहुचायें, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिये दुःख न दें।

इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिये अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जंतुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिये हत्या न तो करे और न ही करवायें और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपयोग न करें।

अहिंसा का सामन्य अर्थ है हिंसा न करना। इसका व्यापक अर्थ है किसी भी प्राणी मात्र को तन-मन-कर्म-वचन और वाणी से कोई हानि न पहुँचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वारा भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में , किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, यह अहिंसा है। जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म में अहिंसा का बहुत महत्व है। जेन धर्म का मूल मंत्र ही अहिंसा परमोधर्म है। आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने भारत की आजादी के लिये जो आन्दोलन चलाया वह काफी सीमा तक अहिंसात्मक था।

जैन ग्रंथ-आचारांग सूत्र में जिसका समय संभवत-तीसरी-चौथी शताब्दी ई.पू. है। अहिंसा का उपदेश इस प्रकार दिया गया है। भूतः भावी और वर्तमान के अर्हंत यहि कहते हैं, किसी भी जीवित प्राणी को, किसी भी जंतु को, किसी भी वस्तु को जिसमें आत्मा है, न मारो न उससे अनुचित व्यवहार करो, न अपमानित करो, न कष्ट दो और न सताओ। सब जीव जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता, सभी प्राणियों को अपनी जानप्रिय हैं।

आज के युग में गांधी जी को सही मायनों में शाति और अहिंसा की मूर्ति कहा जाता हैं। गांधी जी के आदर्श अनेकानेक लोगों को अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं । महात्मा गांधी अहिंसा परमो धर्मः के जीवन दर्शन पर सदा अडिग रहे। अहिंसा के मार्ग पर चलकर जीवन जीने का नजरिया गांधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतिपादित किया। इसके बारे में गांधी जी ने अपनी आत्मकथा के भाग 5 चैपटर 14 में Face to Face with Ahinsha पृष्ठ 376 से





379 तक लिखा हे। वे हिंसा के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि हिंसा और अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का सबसे प्रभावी रास्ता अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रदर्शन का है। महात्मा गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि अहिंसा मानव जरीवन की प्रबल शक्ति है। अंग्रेजों के विरूद्ध अपने संघर्ष में गांधी जी ने सदा अहिंसा का मार्ग अपनाया।

अहिंसा परमोधर्मः विषय पर डाक टिकट- इस बार अहिंसा परमोधर्मः विषय पर राष्ट्रव्यापी डाक-टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा किया गया। इस विषय-वस्तु का चयन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वें जयंती समारोह को ध्यान में रखते हुए किया गया। प्रतियोगिता के लिये दो आयु वर्ग के प्रतिभागियों से प्रविष्टियों आमंत्रित की गई थी :- प्रथम 18 वर्ष तक की आयु वालो की -दूसरी 18 वर्ष से अधिक आयु वालों की चयनित प्रविष्टियों के आधार पर डाक टिकट एवं मिनियेचर शीट का डिजाइन तैयार किया गया है।

डाक टिकट का मुल्य तथा डिजाईन :- 17 जून 2019 को 15-15 रुपये मूल्य के दो डाक टिकट जारी किये गये हैं।एक डाक टिकट पर गांधी जी का आधा पोर्ट रेट चित्र तथा दूसरी ओर गांधी जी का छायाचित्र है जिसमें गांधी जी खड़े हैं। दूसरी डाक टिकट में एक सलेट पर अहिंसा परमो धर्म लिखा है तथा परमाणु शक्ति के प्रतीक गोले बने हैं, साईड पर शांती के दूत सफेद कबूतर का चित्र है। नीचे एक स्थान पर गाय तथा शेर का चित्र है, पीछे दूर मंदिरों के गुम्बज दिखाई देते हैं तथा आगे गांधी जी का हाथ है जिसमें लाठी हैं। दोनों डाक टिकटो के नीचे हिन्दी तथा ईग्लिंश में अहिंसा परमो धर्म AHINSHA PARMO DHARMA लिखा है।

## कविता

# वोट कांड

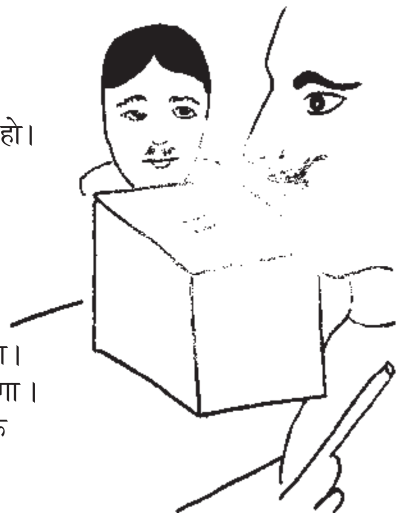

आज के वोट के बदले, नोट के माहौल में
इस देश का नौजवान, सेना और बलिदान देने
आगे क्यों आयेगा।
जब देश का सांसद अपने वोट के लिये करोड़ो लेता हो।
तब इसे देश का नौजवान बलिदान के लिये
आगे क्यों आयेगा।
और करोड़ों रूपयो देखकर बलिदान के
समय बहक तो नही जायेगा।
अतः अब ऊपर से नीचे तक कानून बदलना होगा।
चुनाव लड़ने का मात्र 5 वर्ष का कानून बनाना होगा।
एवं परिवार में मात्र एक ही व्यकित चुनाव लड़ सकेगा ।
तथा धब्बा आने पर उस सदस्य को सभी राजनैतिक
संस्थाओं के फायदे से वंचित करना होगा।
देश को ऐसे नाटकों से बचाना होगा।

# मैरया मेरी मैं नही कियो सू सू

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

प्रत्येक रविवार में माँ बहिनों की समस्या रहती है बच्चों का नींद में बिस्तर में पेशाब करना। जन्म के समय से बच्चों का मस्तिष्क और मूत्राशय के बीच संकेतात्मक जुड़ाब रहता है, जब तक यह पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाता है, ऐसे बच्चों में पेशाब करने पर नियंत्रण नहीं रहता है। इस समस्या को बच्चों को नींद में पैशाब करना या वेड वेटिंग या नाकटर्नल एनरेसिस कहते हैं। यह समस्या बरसात व सर्दी के मौसम में अधिक रहती है। सामान्य तौर पर 1 से 3 वर्षों तक बच्चों में यह समस्या रहती है। 3 से 5 वर्ष तक 20 प्रतिशत, 7 वर्ष तक 10 प्रतिशत, एवं 10 वर्ष तक रहती है, किन्तु किन्ही 2 बच्चों में 12 से 15 वर्षों तक होती है एवं लड़कों में अधिक समस्या पाई जाती है।

**इस समस्या का प्रमुख कारण** -1. मूत्रमार्ग में संक्रमण व मूत्राशय की संकोचन पेशियों का शक्ति हीन हो जाना, 2. न्यूरोलाजिकल परेशानी, 3. हार्मोन असंतुलन, 4. परिवार मे माता पिता के बीच तनाव वाला वातावरण होना, 5. एक बच्चे के दूसरा बच्चा होने पर पहिले बच्चे से ध्यान हटने से बच्चे में तनावहीन भावना पैदा होना, 6. बच्चों में मानसिक आघात डरावनी, आश्चर्यजनक पिक्चर सीरियल देखने से, 7. स्कूल में बच्चों में झगड़ा, 8. बच्चों के माता पिता में अनुवांशिकता गुण से समस्या रही है।

**नियंत्रण उपाय-** 1. 1 से 3 वर्ष तक के बच्चों का इलाज नहीं कराना चाहिये सावधानी रखने से स्वतः ठीक हो जाता है, 2. बच्चों को रात में सोने से पहिले चाय, काफी, ज्यादा नमक व मीठी तरल चीजे नहीं देवे, 3. सोने से दो घंटा पूर्व भोजन आदि खिला देना चाहिये, 4. सोने से पहिले और रात्रि में बच्चों की आदत अनुसार पूरी तरह से जगाकर समय पूर्व पेशाब कराना जैसे यदि बच्चा रात्रि में 1 बजे पेशाब करता हे, तो बच्चों को 12.45 पर पेशाब कर देवे एवं उसके तीन घंटे बाद 3.45 तक पूरे होश में जगाकर पेशाब कराने से लगातार 3 माह में सफलता अवश्य मिलती है।

**घरेलु इलाज-** 1. 3 से 4 वर्ष के बच्चों को मुनक्का 2 से 3 बीज निकालकर दूध में उबालकर, छानकर बच्चों को दूध पिलायें व शेष बचे मुनक्का को बरीक पीस कर खिलावे। 5 वर्ष से बड़े बच्चों को 5-6 मुनक्का का उपयोग करें। इस प्रकार 2-3 वर्ष के बच्चों को दो छुहारे बीज निकालकर 250 ग्राम दूध में उबालकर दूध पिलाने एवं बच्चों की छोटी ऊंगली को हाथ से 2 मिनिट तक थोड़ी-थोड़ी देर में दवाने से निश्चित लाभ प्राप्त होता है। 2. 3 से 5 वर्ष के बच्चों को शुद्ध शहर 1 चम्मच को आधे कप पानी में अच्छी तरह मिलाकर रात को सोने के पहिले देवे। 6 वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों को 2 चम्मच शहद पानी में मिलाकर देना चाहिये, जिससे 2 माह में लाभ मिलता है। 3. गुड़ व तिल के लड्डू जिसमें थोड़ी सी आजवाइन मिलाकर बनाकर बच्चों को सोने से दो घंटे पहिले खिलाना चाहिए।

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इसका समाधान बहुत लाभदायक है लक्षणों के आधार पर औषधि का चुनाव करना चाहिए। जिनमें प्रमुख औषधियाँ- 1. बेलाडोना 30- बच्चों की मूत्राशय के मुख की पेशियों के ढीले पड़ जाना, शक्तिहीन होने।

2. सीपिया 200- बच्चों का रात्रि में प्रथम प्रहर 12 से 1 के बीच में पेशाब करना।

3. कास्टिकम 30- मानसिक उत्तेजना या मूत्राशय की संकोचन पेशियों का काम नही करने पर अनजाने में पेशाब हो जाना।

4. पल्लसेटिका 30-200- किसी मानसिक आघात डरावनी, आश्चर्यजनक घटना, हँसने





या खांसने पर पेशाब निकल जाने पर उपयोगी है।

5. क्रियोजोट 30- जिन बच्चों का गहरी नींद में उठना कठिन होता, जिन्हें स्वप्न आये कि पेशाब कर रहें है पेशाब हो जाना, पेशाब आते ही भागना पड़े उपयोगी हैं।

6. इक्विजिटम 30- जिन बच्चों में पेशाब संबंधी कोई दोष नहीं है किन्तु बिस्तर में पेशाब कर देते है।

7. टुबर कुलोनियम+ कैलकेरिया कार्ब- टुबर कुलेनियम एक मिलीग्राम की मात्रा देने के साथ एक सप्ताह बाद कैलकोरिया कार्ब 30 की मात्रा दिन में दो बार देने अधिकांश बच्चों को लाभ मिलता है।

जिन बच्चों में मूत्राशय मार्ग में इंफेक्शन हो वे या न्यूरोलाजिकल समस्या व फिट आने का रोग हो एवं जिन बच्चों की उम्र 12 वर्ष से अधिक हो गई हो तो ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में चिकित्सक की सलाह लेना उचित होता है।

बच्चों की इस समस्या से सावधानियां एवं उपचार से प्रभावी नियंत्रण हो जाता है साथ ही बच्चों को प्रोत्साहित करने से सफलता शीघ्र मिलती है। अतः उन्हें लाभ होने पर मनोबल बढ़ाने हेतु गिफ्ट आदि देना चाहिये। इस प्रकार की समस्या बच्चों में होने पर माता-पिता व परिवारजन बच्चों पर नाराज न हो व बच्चों को सभी के सामने उन्हें शर्मिंदगी की अहसास नहीं करायें, नही तो बच्चों का मनोबल टूट जाता है। वह पढ़ाई, व्यवहार में हीन भावना से ग्रस्ति हो जाता है। माता पिता धीरज रखते हुए बच्चों को प्यार अपनापन से समझाकर सफलता पूर्वक ईलाज से बच्चों में आत्मबल बढ़ाकर उन्हें प्रतिभाशील बनाने में योगदान देना चाहिए। तब बच्चा बहाना बनाकर यह नही कहें मैया मेरी मैं नहीं किया सू सू।

**कविता**

# क्यों आदमी भटकता

✻ श्रीमती अंशु जैन, सागर ✻

ढाया कहर कांपा शहर सूर्य कहीं छुपा कहीं गया ठहर पीते आठ पहर चली शीतलहर
तरू पात मुरझाये लगे कुछ सकुचाये अब कोई कोयल न गाये न बाध कोई धाये
सब कहीं छुपे हैं ओढ़े रजाई सभी तो दुबके हैं कर्फ्यू सड़क पर इंसान की अकड़ पर
कमान से बने सब ठंड से डरे हैं बिस्तर में दुबके श्वांस थामे पड़े हैं
ठंड का भी डर कितना बड़ा है आदमी का रोम रोम पूरा खड़ा है
सिर हम है तन में मानव के सदन में सूरज से आशा और न कोई दिलासा
करो प्रभु की भक्ति मिले सबको शक्ति यही उपाय सच्चा क्यों आदमी भटकता

## हास्य तरंग

1. सिपाही ने बारदात स्थल से निरीक्षण करके थाने पर फोन किया कि यहाँ पर एक औरत ने अपने पति को झाडू से मार-मार कर जान से मार दिया है। थानेदार ने पूछा- क्यों ? सिपाही- क्योंकि उसका पति पोछा व सेनेटाइज फर्श पर चढ़ गया था। थानेदार- अभी तक उस महिला को गिरफ्तार करके क्यों नही लाये। सिपाही- अभी तक नहीं क्योंकि फर्श अभी तक सूखा नहीं है।

2. दरोगा से एस.पी. ने पूंछा-क्यों चोर पकड़ा गया ? दरोगा ने कहा-चोर तो नही पकड़ा गया परन्तु निशान मिल गये। एस.पी. ने पूछा-कहाँ है ? दरोगा जी ने कहा मेरे गाल पर।

3. सेठी जी ने अपने बचपन के दोस्त के दिपावली पर घर पर भोजन करने बुलाया। दोस्त के 8 बच्चों के साथ देखकर बोला लज्जा नहीं आई ! दोस्त नही, उसका फल एग्जाम है।

4. नेताजी ने करीब एक सप्ताह से दिल्ली में डेरा डाल रखा था। उनके साथ आई भोली पत्नी ने उकता कर पूंछ लिया आखिर क्या बात है कि आप यहाँ से हिलने का नाम नही ले रहे ? नेताजी अरे देवी ! मुझे चुनाव में खड़े होने का टिकट चाहिए ? पत्नी-वाह जी ट्रेन हो, बस हो, सिनेमा हाल, हर कही तो आप बिना टिकट जाते है, फिर चुनाव के लिये भला क्यों।

5. बड़कुल जी पंडित जी से पूंछते है शादी और सगाई के बीच में समय क्यों रखा जाता है। पंडित जी कोई ये न कह सके कि मुझे दुर्घटना से बचने का मौका नहीं दिया गया।

6. टीचर (भावित से)- तुम बड़े होकर क्या करोगे ? भावित से वैज्ञानिक बनूंगा और चांद पर जाऊंगा। टीचर, लेकिन चांद पर बहुत से वैज्ञानिक जा चुके है। भावित तो में सूरज पर जाऊंगा। टीचर- पर वहाँ पर बहुत गर्मी है। भावित कोई बात नहीं मैं वहाँ ठंठी में जाऊंगा।

**संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर**

## संस्कार खेल

# शरीर विकास के कुछ खेल

### ✻ शेर, बकरी

**खिलाड़ियों की संख्या-** 10-20

**खेल वर्ग-** मंडल का खेल

**खेल विधि-** 1. एक बालक शेर बनता है और एक बालक बकरी। 2. मंडल के बालक शेर को रोकते हैं। पर बकरी को भीतर बाहर जाने-आने से नहीं रोकते।

क) जीत-हार के नियम- बकरी, शेर के द्वार छू लेने के बाद बकरी मर जाती है। दूसरे बालकों को शेर-बकरी पुनः खेल शुरु करना होता है।

विशेष नियम- शेर को मंडल के बाहर और बकरी को मंडल के भीतर खड़ा करके रेड़ी कहते हुए खेल शुरु करेंगे। अथवा सीटी बजने के बाद खेल प्रारंभ हो जाता है।

लाभ-बालकों में जूझने की क्षमता एवं शारीरिक शक्ति पैदा होती हे। हाथों और पैरों का अच्छा व्यायाम होता हे।

खेल से विकसित होने वाली क्षमतायें-1. संगठन क्षमता, 2. सूझबूझ, तत्काल निर्णय लेने की क्षमता का विकास, 3. रक्षा कमजोर को कैसे करें।

### ✻ लीडर

**खिलाड़ियों की संख्या-** 10-50

**खेल वर्ग-** मंडल/गोला वर्ग का खेल

**खेल विधि-** 1. शिक्षक एक बालक को लीडर बना देते हैं और दूसरे बालक बाहर भेज देते हैं। 2. लीडर बालक जो करता है वही सब बच्चे करते हैं। 3. बाहर वाले बालक को लीडर की पहचान करना होती है। 4. बाहर वाले खिलाड़ी द्वारा तीन बार पहचान करने चूकने के बाद उसे बीच बैठाकर अंडा बना देते हैं। हार-जीत इसमें हार जीत की कोई व्यवस्था नहीं होती।





## बाल कहानी

# टूटे अंगूर

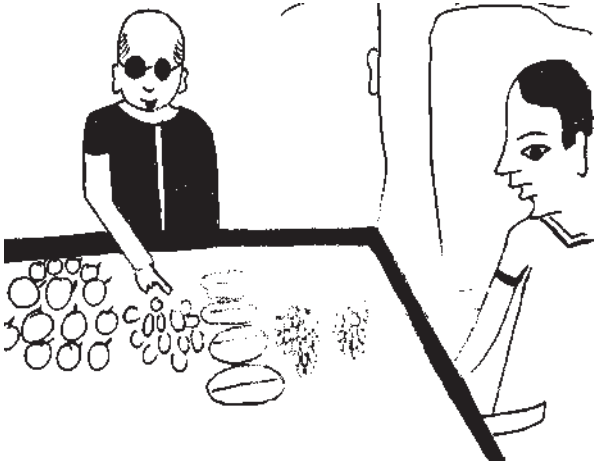

सागर बस स्टैण्ड पर अंगूर की दुकान थी इन अंगूरों में दो प्रकार के अंगूर रखे हुए थे विवेक के घर पर चौका लगा था विवेक की भाभी सुनिता ने विवेक को अंगूर बस स्टैण्ड से लाने को कहा विवेक ने अंगूर बेचने वाली बाई से गुच्छे वाली अंगूर का भाव पूछा तो 80 रुपये किलो बताया विवेक ने कहा अंगूर तो बहुत महंगे है तो अंगूर बेचने वाली महिला बोली भाईसाहब अगर आपको रास्ते वाले अंगूर चाहिये हैं तो ये टूटे अंगूर 60 रुपये किलो हैं। विवेक का माथा ठनक गया अंगूर तो दोनों एक जैसे हैं पर एक अंगूर 80 रुपये किलो और दूसरे अंगूर 60 रुपये किलो विवेक के अन्दर एक प्रश्न घूमने लगा आखिर ऐसा क्यों।

तो उसने अंगूर बेचने वाली बाई से पूछा कि बाई ये अंगूर तो एक जैसे हैं लेकिन इनका भाव अलग-अलग क्यों है तब अंगूर वाली महिला बोली देखो भैया ये तो हमारी किस्मत है ओर इन अंगूरों की किस्मत हैं जो अंगूर टूट जाते हैं वो 60 रुपये किलो में बिकते हैं और यही अंगूर कल 40 रुपये किलों में बिकेगें और इसके बाद अगले दिन 20 रुपये किलों में बिकेगें और इसके बाद अंगूर सड़ जायेंगे और काई शराब बनाने वाला 10 रुपये किलो में खरीद लेगा विवेक के लिये एक समाधान मिल गया कि देखो जैसे गुच्छे से टूटा अंगूर मूल्यहीन हो जाता है ठीक उसी तरह से समाज की मुख्यधारा से टूटा हुआ व्यक्ति भी मूल्यहीन हो जाता है तथा जब विवेक से शून्य व्यक्ति समाज से अपेक्षा ज्यादा रखने लगता है तो वह समाज से टूट जाता है तब अंगूर बेचने वाली महिला बोली क्यों भैया तुम तो गुमसुम हो गये क्या मेरी बात समझ नहीं आई तब विवेक ने मुस्कुराकर कहा कि कभी-कभी अनायास शिक्षा मिल जाती है। वही शिक्षा आज मुझे आपकी दुकान के टूटे अंगूर से मिल गई।

संस्कार गीत

## बच्चा बच्चा जाग रहा है

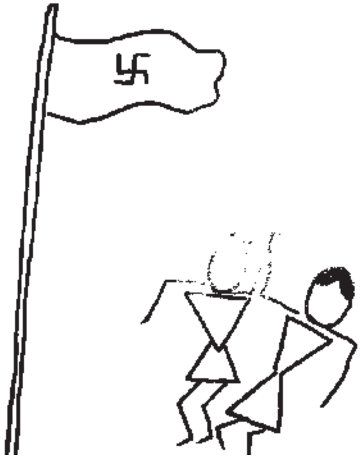

जनगणना का नहीं प्रश्न यह
संख्या बल तक शिक्षित है
स्वाभिमान का प्रश्न बड़ा यह
संस्कृति जैन का सीमित है

1.
आचरण पक्ष की अभिव्यकित तो
जनगणना से होती है
जनगणना के सहज कार्य पर
क्यों समाज अब सोती है
जागो उठो बढ़ो अब आगे
जैन धर्म अपरिमित है

2.
भारत के हम गौरव शाली जैन धर्म के अनुयायी
जनगणना से चूक गये तो बिछड़ गये मेरे भाई
एन.आर.सी से चूका ज्यों घुसपैठी में गर्भापात

3.
तुम अभिन्न हो अंग जैन के क्यों अपना गौरव भूले
जिनशासन की गरिमा अनुपम जनगणना में क्यों चूके
अवसर मिला हमें अब फिर से बच्चा बच्चा जागृत है

बाल कविता

## कोरोना से लड़ाई

कोरोना की बड़ी लड़ाई
दो गज दूरी मास्क जरूरी
सरसों की दो बूंद नाक में
रखो सफाई सदा हाथ में
20 मिनट में हाथ धुलाई
घर में रखना खूब सफाई
क्या धन दौलत में प्राण है
जान बचे तो सब जहान है
कुछ दिन बचना भीड़ से भाई
इसमें सबकी बड़ी भलाई





## समाचार

### जैनेश्वरी दीक्षायें सम्पन्न

**सतना-** आचार्यश्री वर्धमानसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. विजय भैया सागर एवं ब्र. अमित भैया सागर को जैनेश्वरी दीक्षा शरद पूर्णिमा 30 अक्टूबर 2020 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर सतना में दी गयी। जिनका नाम क्रमशः मुनिश्री शाश्वतसागर जी महाराज, मुनिश्री अनंतसागर जी महाराज रखा गया।

**फुलेरा (राजस्थान)-**गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी के द्वारा श्री तोताराम पाटनी डेह नागोर राजस्थान को क्षुल्लक दीक्षा 9 नवम्बर 2020 फुलेरा राजस्थान में दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक श्री आरोग्य सागर महाराज रखा गया।

**गांधीनगर-** गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी द्वारा श्री दिगम्बर जैन मंदिर गांधीनगर गुजरात में तीन दीक्षायें दी गई। श्री सुरेशचंद जी गांधी, कुसुम बेन गांधी, चंपादेवी गंगवाल को 13 नवम्बर 2020 को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लक सुज्ञानसागर महाराज, क्षुल्लिका सुज्ञानमति माताजी, क्षुल्लिका सुराजमति माताजी रखा गया।

### समाधिमरण

**बांरा (राजस्थान)-**आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज का समाधिमरण 15 नवम्बर 2020 सांय 5.57 बजे श्री दिगम्बर जैन मंदिर बांरा राजस्थान में हुआ जिसमें उन्ही के शिष्य मुनिश्री ज्ञेयसागर महाराज जी साथ में थे।

**गिरनार (गुजरात)-** आचार्यश्री निर्मलसागरजी महाराज का समाधिमरण 17 नवम्बर 2020 को प्रातः 4.17 पर निर्मलध्यान केन्द्र गिरनार गुजरात में हुआ जिसमें उन्ही के शिष्य मुनिश्री नयनसागर महाराज जी साथ में थे।

**आनंदपुर कालू राजस्थान-** आचार्य श्री रयणसागर महाराज जी का समाधिमरण 23 नवम्बर 2020 को रात्रि 1.08 मिनट पर आनंदपुर कालू पाली राजस्थान में हुआ।

**फुलेरा (राजस्थान)-** गणिनी आर्यिका श्री विज्ञाश्री माताजी के सान्निध्य में क्षुल्लक श्री आरोग्य सागर महाराज जी का समाधिमरण 10 नवम्बर 2020 फुलेरा राजस्थान में हुआ।

### पंचकल्याणक

**मैना (आष्टा)-** आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री अजितसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 24 नवम्बर से 30 नवम्बर 2020 तक श्री आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

**बिलहरी (कटनी)-** आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री प्रमाण सागर महाराज जी, मुनिश्री अरहसागर महाराज जी के सान्निध्य में 2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर तक बिलहरी ग्राम में निकली प्राचीन प्रतिमाओं का पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**रायसेन -**आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री निर्णयसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ दिनांक 03 दिसम्बर से 08 दिसम्बर तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अशोक भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा। जिसमें मुनिश्री समतासागर जी महाराज, एलक श्री निश्चयसागरजी महाराज के पहुंचने की संभावना हैं।

### सिद्धचक्र विधान

**हिंगोली (महाराष्ट्र)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. अजय भैया आदि के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**कटनी (म.प्र.)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री प्रमाणसागर महाराज जी एवं मुनिश्री अरहसागर जी के ससंघ सान्निध्य में 8 मंडलीय श्री 1008 संस्कृत सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. अभय भैया मंडला के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा जिसका प्रसारण जिनवाणी चैनल पर किया गया।

**सागर (म.प्र.)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री कुंथुसागर महाराज जी एवं एलक श्री सिद्धांतसागर जी के ससंघ सान्निध्य में 24 मंडलीय श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**आरोन (म.प्र.)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री अभयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. लल्लन भैया जबलपुर के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**पथरिया (म.प्र.)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री प्रशांतसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. संजीव भैया कटंगी के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**विदिशा (म.प्र.)-** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री समतासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक सम्पन्न होगा।

**चांदपुर (रहली) -** कार्तिक माह की अष्टान्हिका में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान दिनांक 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ब्र. अरूण भैया के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

**पंचबालयति मंदिर इन्दौर में वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न**

**इन्दौर-**आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के आशीर्वाद से उनके ही शिष्य मुनि श्री निर्दोषसागर जी महाराज, मुनिश्री निर्लोपसागर जी महाराज, मुनिश्री निरापदसागर जी महाराज, मुनिश्री निराकुलसागर जी महाराज, मुनिश्री निरूपम सागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 17 से 19 नवम्बर 2020 तक ऊपर शिखर की वेदी तथा शिखर में वेदियों की शुद्धि के साथ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमती अनिता सुरेश जैन बैंक वाले, महायज्ञनायक-श्रीमती सुधा डॉ. सनत कुमार जैन, एवं यज्ञनायक-श्रीमती विद्या राजेन्द्र जैन जैसीनगर, कुबेर- श्रीमती शचि गौरव जैन, ध्वजारोहण- श्रीमती मैना आर.के.जैन, शिखर में पूर्व दिशा में- खड्गासन पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य राजीव जैन कमिश्नर एवं हर्ष जैन, दक्षिण दिशा में - श्री सतीश जैन सतना वाले तथा भरत आदिश आरिश बसंत विहार इन्दौर, पश्चिम दिशा में- धर्मेन्द्र जैन सागर तथा विभोर जैन मेरठ, उत्तर दिशा में- धर्मेन्द्र जैन जयपुर, गौरव जैन ने सौभाग्य प्राप्त किया । शिखर वेदी में चन्द्रप्रभ भगवान को विराजमान करने का सौभाग्य सौधर्म इन्द्र -सुरेश जैन बैंक वाले, श्री कुंथुनाथ भगवान- राजेन्द्र जैन जैसीनगर वाले, मुनिसुव्रतनाथ भगवान- अरूण जैन वर्धमान मेडिकल, अरनाथ भगवान- दिनेश सौगानी मुंबई, रमेशचंद्र, सौरभ जैन, श्री सुपार्श्वनाथ भगवान- ब्र. धीरज भैया राहतगढ़, श्री आदिनाथ भगवान-स्वदेशीलाल, मनीष, आशीष बीना वालो को प्राप्त हुआ । वेदी शुद्धि करने का सौभाग्य शचि जैन, अनिता अराध्या जैन, सुधा जैन, कश्मीरा जैन, चंद्रकांता जैन, सुभी जैन आदि को प्राप्त हुआ । सभी 36 भगवानों का एक साथ अभिषेक के साथ-साथ शांतिधारा भी की गई।

**पण्डित श्री रतनलाल शास्त्री जी को विद्या वारिधी उपाधि से सम्मानित**

**पंचबालयति इन्दौर-** आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के आशीर्वाद से उनके ही शिष्य मुनि श्री निर्दोषसागर जी महाराज, मुनिश्री निर्लोपसागर जी महाराज, मुनिश्री निरापदसागर जी महाराज, मुनिश्री निराकुलसागर जी महाराज, मुनिश्री निरूपम सागर जी महाराज के सान्निध्य में ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. सुरेश मलैया के निर्देशन में पंचबालयति मंदिर वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर पण्डित श्री रतनलाल जी शास्त्री इन्दौर को **विद्या वारिधी** की उपाधि तथा 51000 की नगद राशि से दिगम्बर जैन समाज इन्दौर तथा मुलायमचंद्र जैन पुत्र-निलय, विकास, शोभित पौत्र-नीर, समग्र, मान्य सतभैया परिवार इन्दौर, दामाद- राजीव जैन (आई.आर.एस) द्वारा सम्मानित किया गया।





# अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : दिसम्बर 2020

## रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. अनुकूलता कथंचित् हमें ............ बन सकती है, क्योंकि अनुकूलता में पुरुषार्थ किया जा सकता है।
02. अहिंसा की रक्षा पैसे के बल पर नहीं, बल्कि अहिंसा को अपने .................. में अपनाकर ही हो सकती है।
03. .............धर्म की शरण में रहने वाला हमेशा खुश रहता है।
04. अहिंसा के कार्य करने स्व-पर दोनों के ............ की बात हो जाती है।
05. जो लोग ............. धर्म को अपने जीवन में स्थान देते हें, उन्हें दुनिया में हर जगह स्थान मिलता है।
06. अन्याय, अत्याचार के साथ संग्रह किया हुआ........खाने-पीने में नहीं आता।
07. अहिंसा धर्म के अनुयायी रागी होते हुए भी ........... की आरती उतारते हैं, राग का नहीं।
08. पार्श्वनाथ भगवान के अंदल सहज करुणा भाव था उन्होंने विषधर जैसे जीवों के प्रति भी ............ भाव धारण किया और उन्हें भी स्वर्ग सुख का लाभ पहुँचाया।
09. जो अहिंसा धर्म को मानने तैयार नहीं है, उन्हें ............सुनने नहीं मिल सकती।
10. धर्म वहीं है, जो ......... से विशुद्ध हो।
11. अहिंसा महान् प्रकाश है, आज ....... को मात्र अहिंसा की आवश्यकता है।
12. दया धर्म से जो रहित होते हैं, वे कितने ही धनी बन जावें पर वह ........... गुणों से भूषित नहीं हो सकते ।
13. ............. वहीं है, जो करुणावान होता है।
14. दूसरे की पीड़ा को दूर करने दूसरे की नहीं,........... की पीड़ा दूर होती है।
15. अहिंसक व्यक्ति के जन्म होते ही चारों ओर........... छा जाती है।
16. दया के बिना .......... हमेशा झुलसता रहता है, क्योंकि दया के अभाव में धर्म नहीं होता।
17. दया, अनुकम्पा से ही.......... की शुरुआत होती है।
18. स्वार्थ जहाँ से चला जाता है, वहाँ से ............ प्रारम्भ हो जाता है।
19. समर्पण में प्रतिफल की इच्छा ........... हो जाती है।
20. जिसमें .......... भाव रहता है, वहीं इस चकाचौंध के युग में कुछ भविष्य के लिये कर सकता है।
21. समर्पण के बाद ही जीवन में ............ की शुरुआत होती है, इससे पीछे नहीं हटना चाहिये।
22. समर्पित हुए बिना............ की उपाधि नहीं मिल सकती।
23. समर्पण की यात्रा कर्त्तव्य से पूर्ण होती है और .......... का पालन समर्पण के साथ किया जाता है।
24. यदि हम उन प्रभु व गुरु के पवित्र जीवन पर समर्पित हो जाते हैं तो यह हमारा कलंकित जीवन भी .............. हो जाता है।
25. कबूतर की तरह देव, शास्त्र व गुरु रूपी.......... पर समर्पित हो जाओ संसार समुद्र से पार हो जाओगे।

26. ..........की रक्षा एवं अहिंसा धर्म की रक्षा में अपना तन, मन व धन समर्पित कर देना चाहिये।
27. ............की परवाह न करते हुए धर्म की रक्षा में समर्पित हो जाना ही सही समर्पण है।
28. समर्पण के साथ किया गया कार्य ही........... होता है।
29. जो उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाता है, वही ........... में खरा उतरना है।
30. प्राणियों के संरक्षण में तन, मन एवं धन समर्पण करोगे तो तुम्हारा जीवन भी ......... बन जावेगा और अविनश्वर आत्मा का मूल्य सुरक्षित होगा।
31. ........... से बचना ही प्रयोजनभूत है।
32. जिस साहित्य को पढ़कर मन पापमय हो जाये, ऐसे साहित्य को .......... बोलते हैं। इनमें हमेशा बचना चाहिए।
33. मधु (शहद) की एक बूँद खाने से ......... गाँव जलाने के बराबर दोष लगता है। इसलिये इस अनर्थ से बचना चाहिए।
34. जिससे संसारी प्राणी का वध हो, ऐसे शस्त्रादि का दान नहीं करना चाहिये ......... को बिगाड़ने वाले सारे पदार्थ हिंसा दान में आते हैं।
35. विषयों में आकर्षक ............. का प्रतीक है।
36. विपरीत धारणा को छोड़ देने में ............ हल्का हो जाता है।
37. मन दूसरे को समझाना चाहता है, स्वयं को नहीं यह एक सबसे बड़ा............ है।
38. मोक्षमार्ग की साधना लगने वाले ............... कहलाते हैं।
39. ........... को भक्तिभाव पूर्वक दान देने से अदभुम फल प्राप्त होता है, पंचाश्चर्य प्राप्त होते हैं।
40. दान और वैयावृत्ति को ................... के रूप में स्वीकारा है। अतिथि-संविभाग
41. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी का जन्म कब हुआ था।
42. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी ने शिक्षा कहाँ तक और कौनसी भाषा में की।
43. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी ने ब्रह्मचारी व्रत किससे और कब लिया था।
44. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी की मुनि दीक्षा कब और कहां हुई थी।
45. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी को आचार्य पद कब और कहां मिला था।
46. तुम हमें खून दो हम तुम्हें आजादी देंगे यह वाक्य किसने कहां था।
47. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी ने क्षुल्लक दीक्षा कब और किससे ली।
48. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी ने मुनि दीक्षा कब और किससे ली।
49. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी ने 35 वर्ष के दीक्षित मुनि अवस्था में कितने वर्ष कितने माह उपवास किये।
50. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी ने अपने पूरे जीवनकाल 84 वर्ष की आयु में कितने वर्ष अन्य का त्याग रखा।

**40 प्रश्न परमार्थ देशना अहिंसा, अर्पण-समर्पण, अनर्थ, अज्ञान, अतिथि एवं 10 प्रश्न संस्कार सागर नवम्बर से लिये गये हैं।**





# अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः दिसम्बर 2020

**प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी**

नाम ................................................स्थान ................................

उम्र ..................................सदस्यता क्र. .........................................

पूर्ण पता ..............................................................................................

पिन कोड ................. फोन नं...................... (एस.टी.डी.) .......................

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| 31 | 32 | 33 | 34 | 35 |
| 36 | 37 | 38 | 39 | 40 |
| 41 | 42 | 43 | 44 | 45 |
| 46 | 47 | 48 | 49 | 50 |

आपके नगर के संवाददाता का नाम ................................. हस्ताक्षर

नियम :– .................... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

## वर्ग पहेली 256

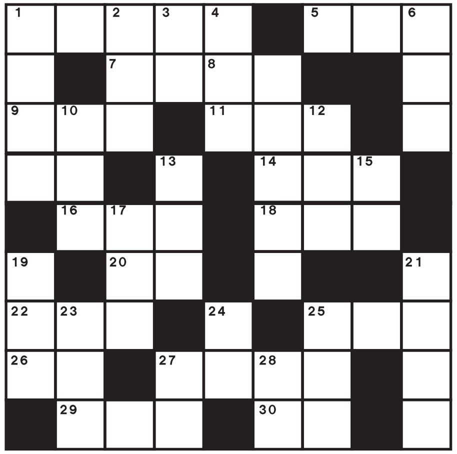

**ऊपर से नीचे**
1. मोह और योग के निर्मित्त से होने वाले जीव के भाव -4
2. युगल-जोड़ी एक शब्द अलंकार -3
3. नम या गीला -2
4. प्रतिलिपी/कॉपी -3
6. अभिन्न, लीन उसीमय -3
8. जांच, अनुसंधान -5
9. ठहरने का जगह -2
10. नोन, लवण -3
12. रमने का भाव -3
13. भवन, प्रासाद -3
15. शरीर, काया -2
17. उलझन -3
19. आँख में लगाने वाला काला पदार्थ -3
21. वह पत्थर जिसमें से आग निकलती हो -4
25. लेखनी -3
27. झूठा-सच उपन्यास का लेखक -2
28. पगड़ी -2

**बाये से दाये**
1. सम्मेदशिखर तीर्थ पर निर्मित गुणस्थानों का मंदिर -5
5. असीमित -3
7. एक मणि का नाम, चमकने वाले पत्थर -4
9. जगह साधुओं के ठहने का स्थान -3
11. तरंग, वेव -3
14. मूल्य -3
16. झगड़ा, लड़ाई -3
18. जंगल, वन, अरण्य -3
20. नतीजा, परिणाम, क्रूट -2
21. कसा हुआ, बंधा हुआ -1
23. कठोर -2
24. डसने का भाव -1
25. गीला आटा, सोना धतूरा -3
26. माला, श्रेणी, सीरिज -2
27. कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि -4
29. घट, घड़ा पानी भरने का पात्र -3
30. दुख -2

## वर्ग पहेली 255 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 प | 2 च | बा | 3 ल | 4 य | 5 ति | मं | 6 दि | 7 र |
| 8 च | र | ■ | 9 य | म | ल | ■ | 10 न | ख |
| 11 क | चा | 12 लू | ■ | क | ■ | 13 पा | ■ | वा |
| ■ | ■ | 14 ग | ज | ■ | 15 पा | ठ | 16 शा | ला |
| 17 सा | 18 ग | र | ■ | 19 र | व | ■ | खा | ■ |
| 20 बू | न्दी | ■ | 21 शि | ■ | 22 न | 23 स | ■ | 24 प |
| ला | ■ | 25 प | व | 26 न | ■ | 27 ज | 28 ग | त |
| 29 ल | लि | त | पु | र | ■ | 30 गं | ह | न |
| जी | ■ | 31 ला | री | ■ | 32 स | ता | ना | ■ |

..........................................सदस्यता क्र. .........................

पता : ..........................................................................................................

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

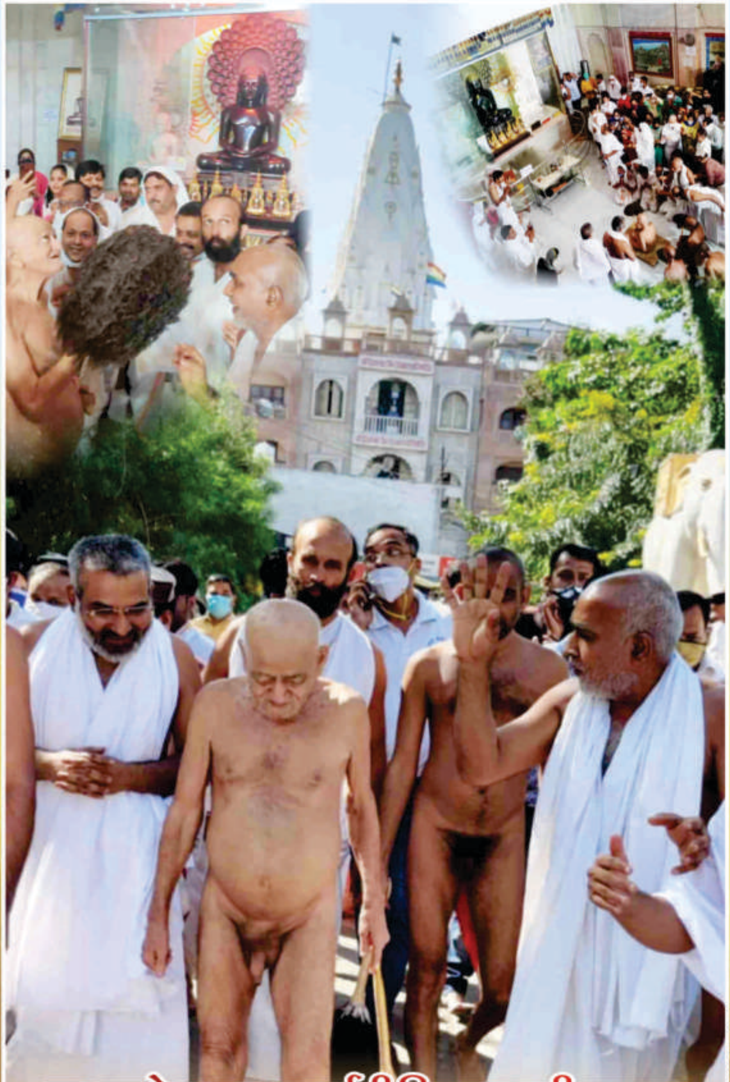

इस युग के महान आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
अष्टयति के साथ पंचबालयति मंदिर इन्दौर में

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/11/2020, पोस्टिंग दिनांक : 03/12/2020